।। णमोत्थुणं समणस्सभगवओ महावीरस्स ।।

पर्व का प्राण

अंतगड़ दशासूत्र

लेखक

वर्तमान के वर्धमान, निमाड़ रत्न,
संयम शिरोमणी, नवकार मंत्र जाप
आचार्य तप केसरी
अभिग्रहधारी, उग्रविहारी, पू. श्री राजेश मुनि म.सा.

संकलन

श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.

सहयोगी

अंकित मेहता-जावरा, दीप्ति चौरड़िया-शहादा
राहुल छोरिया-शहादा, अरविन्द मेहता-रतलाम

श्री संजय सोहनलालजी नाहटा, कुशलगढ़

श्रीमती पवनबाई सुगनचंद छोरिया
सौ. खुशी राहुल छोरिया
रिमझिम, झिलमिल,
शहादा (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

'अंतगढ़ सूत्र' वर्तमान में स्थानकवासी परम्परा का सबसे ज्यादा चर्चित शास्त्र है। और सभी के द्वारा सुना जाने वाला एकमात्र शास्त्र है।

चर्चित शास्त्र तो उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदी आदि भी हैं पर वे सभी लोग सुने ऐसा नहीं लगता। 'अंतगढ़' पर्व में पढ़ा जाने वाला शास्त्र है। अत: थोड़ा बहुत सभी को सुनने को मिलता है।

दीक्षा पूर्व से स्वाध्यायी बनकर जाने का प्रसंग बनते रहे उस समय इस सूत्र का वांचन सीखा। गुरुभगवंतों ने भी वाचना की कृपा की। दीक्षा पश्चात् भी पढ़ने का अवसर आता रहता है। कई जिज्ञासु, श्रद्धालु, रसिक आत्माओं का निवेदन था कि मैं इसे अपनी भाषा में लिखूँ। जैसा मैं बोलता हूँ, पर्युषण में।

पर बोलना अलग है, लिखना अलग है। कोई वक्ता हो तो जरूरी नहीं कि वह लेखक हो। लेखक हो वह जरूरी नहीं वक्ता हो। कोई गीत लिखता है तो जरूरी नहीं उसकी आवाज सुरीली होगी। सुरीली आवाज वाला गीत लिखता ही होगा यह जरूरी नहीं।

ऐसे ही मैं लेखक नहीं हो सकता। उसके लिए साहित्यिक व्याकरण आदि का अध्ययन होना आवश्यक है। अभी तक मैंने अध्ययन की गई पुस्तकों में भाव भाषा की विविधता को पाया। पर जो **आचार्य भगवंत श्री उमेश गुरुदेव** के साहित्य की भाषा रही वह अनूठी है। पढ़ते पढ़ते विश्वास हो जाता है उनके लेखन पर सच्चाई दिखायी

देने लगती है । आचार्यश्री रत्नसुंदर विजयजी का लेखन 'पढ़ने में अति उत्तम है पर बोलने में कठिन है । ऐसे कई साहित्यिकारों का परोसने का अपना अपना ढंग है ।

'अंतगढ़ मैं कैसे पढ़ता हूँ ?'' उसे लिखने का प्रयास कर रहा हूँ । पर मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ बोलना सरल है – लिखना कठिन ।

अंतगढ़ कैसे पढ़ना ? सर्वप्रथम जाने कि हमारे 32 शास्त्रों में 23 शास्त्र कालिक हैं 9 शास्त्र उत्कालिक । उसमें अंतगढ़ कालिक है । कालिक का अर्थ अर्थात् दिवस रात्रि की प्रथम एवं चतुर्थ पोरसी में पढ़ने योग्य मूल पाठ । अर्थ तो कभी भी पढ़ा जा सकता है । अस्वाध्याय आदि विधान मूल पाठ के लिए है ।

तो पढ़ने वाला पहले मूल पाठ पढ़ें । मूल पाठ के 8 भाग करना चाहिये । उसमें प्रतिदिन एक भाग जितना मूल पाठ पढ़ना चाहिए । अर्थ वैसा पढ़ना या उसे रोचक बनाते परोसना । यह पढ़ते पढ़ते अनुभव हो जाता है । मूल पाठ एक साथ पढ़ लेना चाहिए । समय की मर्यादा का उल्लंघन न हो ।

पढ़ने के बाद 'जंवाइद्धं' का पाठ जरूर बोलें । 8 दिवस पश्चात् पढ़ने में ''भगवान आज्ञा विरूद्ध'' हुआ तो 'तस्स मिच्छामि दुक्कड़' कहें ।

मेरे परिचितों के अति आग्रह पर प्रयास किया । यदि कहीं अशुद्ध या विपरीत कथन हुआ हो तो आप उसे सुधार कर परोसें । और उससे मुझे अवगत करवायें तो बड़ी कृपा होगी ।

इस लेखन में पू. श्री राजेन्द्रमुनिजी ने भी अच्छा सहयोग किया ।

दानदाताओं ने ज्ञानार्जन में सहयोगी बनकर ज्ञानावरणीय कर्म को तोड़ने का पराक्रम किया उन्हें बुद्धि के साथ शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो ।

पूनम विहार जावरा की एक कॉलोनी है । यहां मासकल्प विराजे यहीं पर चिरप्रतिष्ठित लेखन पूर्ण हुआ । जिसमें इस कॉलोनी के निवासी श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता का अमूल्य योगदान प्राप्त हुआ । श्री अंकित हेमंत मेहता, जावरा ने संकलन की आवश्यक बाह्य क्रियाओं को सुंदर संचालित किया । यहीं पर मैंने एवं राजेन्द्र मुनिजी म.सा. ने एक साथ अट्ठाई तप किया । (दीक्षा के 15वाँ वर्ष में प्रवेश) ।

– राजेश मुनि

दि. ७ फरवरी २०१५

सहयोग राशि
25/-

पर्युषण पर्व प्रारम्भ

सूत्र श्री अंतगढ़जी

धम्मों मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो
देवा वि तं णमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।

अहिंसा संयम, तप रूपी धर्म उत्कृष्ट मंगल है । ऐसे धर्म में जिसका सदा मन लगा रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं ।

पर्युषण पर्व का आया है प्रसंग
कर दो संसार के कार्यों को भंग
कम से कम ८ दिवस करो कर्मों से जंग
सुनो नित्य 'अंतगढ़' आठवाँ अंग

मनुष्य उत्सव प्रिय होता है । उत्सव दो प्रकार के होते हैं ।

१. लौकिक २. लोकोत्तर.

लौकिक पर्व आडंबर से मनाये जाते हैं । जबकि लोकोत्तर पर्व तप त्याग से मनाये जाते हैं । हर एक धर्म में पर्व का महत्व है । पर्व, त्यौहार, फेस्टिवल सभी एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं । सारे पर्वों का मूल उद्देश्य सभी आस्थावान व्यक्तियों के मध्य भाईचारा बढ़े । नये उससे जुड़े । पर्व के प्रति व्यक्ति की आस्था होती है । क्योंकि पर्व ''शाश्वत'' है अर्थात् हमेशा रहने वाला है । जबकि व्यक्ति का सीमित आयुष्य होता है जो कुछ समय का होता है । जनता का मानस ''शाश्वत'' के प्रति रूचि रखता है ।

'पर्व' आते हैं तो सभी उत्साहित होते हैं पर्व को मनाने के लिए । पर्व पूर्ण होते हैं ।दूसरे दिवस यदि लाखों का पुरस्कार रख लिया जावे तो उतनी भीड़ नहीं आती । इसी से सिद्ध होता है कि पर्व कितना महत्वपूर्ण है ।

जैन धर्म में भी पर्युषण पर्व, संवत्सरी पर्व सर्वमान्य पर्व है । जैन आम्नावाले मुख्य रुप से दो शाखाओं में विभक्त हैं । 'दिगम्बर' और 'श्वेताम्बर' दोनों ही को पर्युषण, संवत्सरी पर्व मान्य है । अंतर इतना है श्वेताम्बर शाखा के पर्व का अंतिम दिवस उनका प्रथम दिवस होता है जो दस दिवस तक चलता है (अनंत चतुर्दशी तक) इसे 'दशलक्षणी' पर्व कहा जाता है । दसों दिवस 'यति' धर्म के

द्वारा क्रम से मनाये जाते हैं ।

श्वेताम्बर शाखा ८ दिवस मनाती है । श्वेताम्बर शाखा फिर दो प्रशाखाओं में विभक्त होती है । यथा १.मूर्तिपूजक, २. स्थानकवासी । मूर्तिपूजक संघ में 'कल्पसूत्र' का वांचन होता है तो स्थानकवासी में 'अंतगढ़ सूत्र' का ।

प्रश्न – अंतगढ़ सूत्र का वांचन ही क्यों होता है ?

सामान्यत: जनता की आस्था शास्त्रों पर होती है । व्यक्ति विशेष पर नहीं । शास्त्र में लिखी बात पर व्यक्ति को विश्वास होता है । इसलिए शास्त्र का वांचन आवश्यक है । शास्त्र ऐसा हो जो ८ दिनों में पूर्ण हो जावे । वर्णित शास्त्र से सभी वर्गों को प्रेरणा मिले ।

'अंतगढ़ सूत्र' ऐसा ही शास्त्र है जिससे वृद्ध, जवान, बाल, जैन अजैन सभी को प्रेरणा मिलती है । इस शास्त्र में वर्णित पात्र निकटस्थ भगवान के समय के हैं । इसलिए इस पर श्रद्धा जल्दी होती है । बच्चा हो, या विधवा, सधवा हो, पापी हो या पुण्यशाली सभी के लिए सुधार का रास्ता सदा खुला है ।

घोर पाप करने वाला, 'अर्जुन माली, बालक 'एवंता', काली आदि १० राणियां जो विधवा थी । वे सभी प्रभु का मार्गदर्शन पाकर तिर गये ।

पास में रहे हुए वैभव से कैसे शुभकर्म बाँधे जाते हैं यह प्रेरणा भी कृष्ण, श्रेणिक महाराज की विशिष्ट दलाली से सहज में प्राप्त हो जाती है ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप चारों ही मार्गों की प्रेरक कथाएं इस शास्त्र में आ जाती हैं ।

श्रोता तत्व को जानने का उत्सुक होता है पर उसे रस नहीं आता । पर कथा के माध्यम से तत्व स्पष्ट किया जावे तो उसे उसमें रस आने लग जाता है । जितनी प्रेरणा कथा कहानी से मिलती है उतनी तत्व से नहीं । यही कारण हो सकता है कि अंतगढ़ पढ़ा जावे जिसमें उपरोक्त सारी विशेषताएँ समाहित हैं ।

प्रश्न – धर्मकथा वाले अन्य शास्त्र भी हैं वे क्यों नहीं पढ़े जावें ?

वर्तमान में स्थानकवासी परंपरा ३२ शास्त्र मानती है उसमें १३ शास्त्र कथा से परिपूर्ण हैं । उसमें कोई छोटे हैं कोई बड़े । कोई ८ दिन से पहले पूर्ण हो जाते हैं तो कोई ८ दिनों के बाद शेष रह जाते हैं । शास्त्र ऐसा हो जो ८ दिन में पूर्ण हो । ऐसा शास्त्र है अंतगढ़ सूत्र ।

प्रश्न – पर हर वर्ष नये नये शास्त्र पढ़ें तो नये शास्त्रों की जानकारी हो सकती है ?

शास्त्र जानकारी ही नहीं देते, आत्मा को भावित भी करते हैं । तीर्थंकर गोत्र बंधन के २० कारणों में एक कारण है सीखे ज्ञान को, स्वाध्याय को बार-बार फेरने से तीर्थंकर बना जा सकता है । कोई चीज बार-बार सुनने या जपने से आत्मस्थ हो जाती है । नये शास्त्रों को पढ़ने का रस पैदा करने की शक्ति अंतगढ़ सूत्र में है । आगे श्रोता शेष समय में गुरु भगवंतों से या स्वयं उसका स्वाध्याय कर सकता है ।

मुसलमानों में ''कुरान शरीफ़'' का, ईसाईयों में ''बाईबिल'' का, सिखों में ''गुरु ग्रंथ साहेब'' का, हिन्दुओं में ''गीता'' का महत्व है । वे बार-बार सुनते हैं उन्हें अपने शास्त्र पर कभी अश्रद्धा नहीं होती । यहां तक कि अमेरिका में 'कुरान शरीफ़' को लेकर झगड़े हो गये थे । वे अजैन व्यक्ति कभी ऐसा नहीं कहते कि हम एक ही शास्त्र सुनकर बोर हो गये । कोई नया शास्त्र सुनाओ ।

हिन्दू धर्म में स्थान-स्थान पर ''भागवत गीता'' सुनाई जाती है । एक ही 'विष्णु कथा'' घर-घर करवायी जाती है । इससे स्पष्ट है क्या सुनाया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण नहीं है । महत्वपूर्ण है किस श्रद्धा से सुना जा रहा है ।

जैसे पानी से प्यास बुझती है । कोई कहे कि रोज रोज पानी पीते पीते बोर हो गये । अब प्यास बुझाने के लिए कोई नई चीज आना चाहिये पर ऐसा कभी होता नहीं है । पानी शरीर की आवश्यकता है ऐसे ही शास्त्र आत्मा की आवश्यकता है।

शास्त्र सुनाने का एक कारण यह भी है कि भगवान के सिवाय दुनिया किसी अन्य पर विश्वास नहीं करती है । भगवान की अनुपस्थित में शास्त्र पर उसकी श्रद्धा होती है । पर्व राग द्वेष से रहित होते हैं । जबकि व्यक्ति राग द्वेष से युक्त । छद्मस्थ है । अत: उसकी विवेचना प्ररूपणा में अंतर आ सकता है ।

पर्व पर कितनी श्रद्धा होती है ? इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस दिन अपने दैनिक कार्यों को विराम देकर व्यक्ति हर्ष उल्लास से मनाता है । संवत्सरी के दिन सभी जैनों के प्रतिष्ठान बंद होते हैं । लगभग सभी उपवास करते हैं एवं प्रतिक्रमण समय तो उपस्थिति शत प्रतिशत तक हो जाती है ।

संवत्सरी के द्वितीय दिवस लाखों का इनाम रखा जावे या साक्षात् भगवान

भी आ जावे तो शायद उतनी उपस्थिति नहीं हो सकती है । जितनी संवत्सरी को हो जाती है ।

''पर्व'' किसे कहते हैं ? गन्ने में जगह जगह कुछ अंतराल पर गांठे होते हैं। उन गांठों के बीच के भाग को पर्व कहते हैं । वह भाग रसयुक्त होता है मीठा मधुर होता है । ऐसे ही पर्व भी प्रेममयी रसपूर्ण वातावरण बनाता है ।

वर्तमान में स्थानकवासी परंपरा में ३२ शास्त्र मान्य हैं (१.) कालिक २३ (२.) उत्कालिक ०८, (३.) नौकालिक नौ उत्कालिक १ इन शास्त्रों को 'अनुयोग के आधार पर चार विभाग किये गये हैं ।

धर्मकथानुयोग - १३, चरण अनुयोग - ८, करण अनुयोग ८, गणित अनुयोग - ५

अंतगढ़ सूत्र कालिक सूत्र है । एवं धर्म कथानुयोग के अन्तर्गत है विद्वान पुरुषों द्वारा आगम पुरुष की कल्पना की गई । जिसमें अंतगढ़ को वक्षस्थल पर माना गया है ।

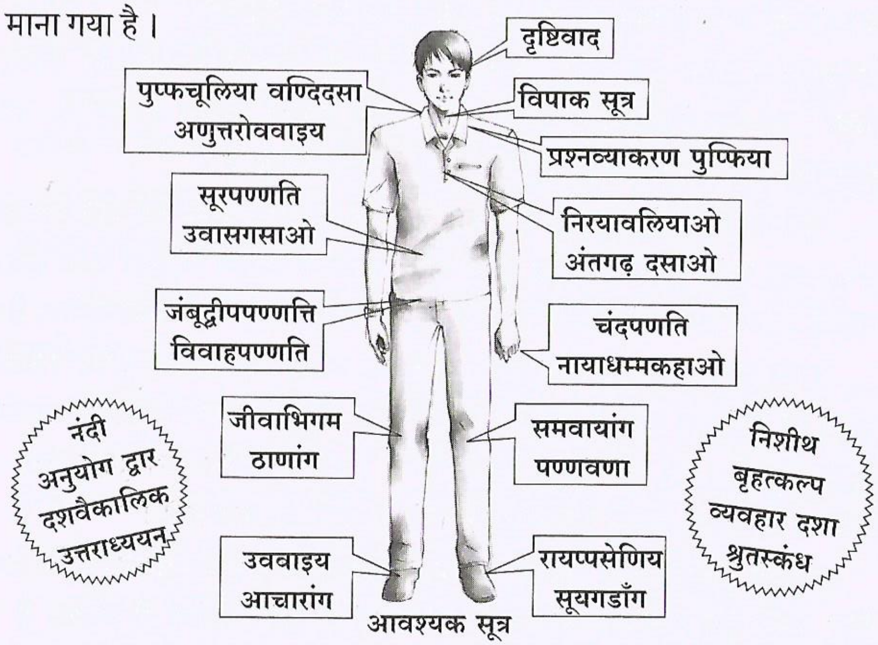

स्थानकवासी परंपरा में ३२ आगम मान्य हैं, उसमें ४ छेद, ४ मूल, १२ उपांग, ११ अंग, आवश्यक सूत्र, इस प्रकार विभक्त किया गया है । इसमें अंतगढ़ सूत्र अंग शास्त्र है, जो आठवे क्रम पर है ।

अंतगढ़ सुत्र को अंतगढ़ दशांग सूत्र या अंतकृतदशांग सूत्र भी कहा जाता है। इस सूत्र में वर्णित ९० आत्माओं ने अपने जीवन के अंत समय में केवल ज्ञान पाया था । और तुरंत मुक्ति को पाया । इसमें वर्णित आत्माओं ने कभी भी प्रवचन नहीं दिया । इससे स्पष्ट है कि **साधक को उपदेश देना आवश्यक नहीं है,** साधना करना आवश्यक है । प्रवचन देने की नियमा मात्र तीर्थंकर भगवंतों की है। वे जन धन्य है जिन्हें तीर्थंकरों के श्रीमुख से सुनने को मिला । हम भी भाग्यशाली हैं कि तीर्थंकर भगवंतों के श्रीमुख से जो निकला वह आज हमारे पास है,हम सुन रहे हैं। तीर्थंकर भगवान का उपदेश अर्थ रूप में होता है । गणधर भगवान उन्हें सूत्र रूप में गूंथते हैं जैसे कि कहा है -

अत्थं भासइ अरहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं ।

सासणस्स हियट्ठाए, तओ सूत्तं पवत्तइ ।।

जैसे नींबू का रस निकाल कर चूर्ण बना लिया जाता है फिर उस चूर्ण में कभी भी पानी मिलाकर पुन: शरबत बना लिया जाता है । ठीक उसी प्रकार गणधर भगवान सूत्र रूप में चूर्ण देते हैं, उसमें साधक अपनी बुद्धि का पानी मिलकर प्रस्तुत कर देता है यह कह सकते हैं हमारे शास्त्र 'बिन्दु में सिंधु' समाये हुए हैं ।

अंतगढ़ में ८ वर्ग हैं । जिसमें से ५ वर्ग में अरिष्टनेमि भगवान के शासन के ५१ जीवों का वर्णन है । शेष तीन वर्ग में भगवान महावीर स्वामी के शासन के ३९ जीवों का वर्णन है । हर वर्ग में विशेष क्या वर्णन है ? आप सुनते ही हैं और आगे जानकारी प्राप्त करेंगे ।

पर्युषण पर्व ८ दिन का या १० दिन का ? महत्वपूर्ण वस्तु है कि भगवान ने ५०वें दिन संवत्सरी मनायी थी । जीवाभिगम सूत्र में नंदीश्वर द्वीप वर्णन में आता है देवता नंदीश्वर द्वीप में जाकर ४ बार अष्टान्हिका महोत्सव मनाते हैं । उसमें तीन चौमासी पूनम और चौथी पर्युषण ।

जैसे शादी एक दिन में होती है पर उसकी तैयारी पूर्व से की जाती है ठीक इसी प्रकार ''क्षमापना'' दिवस एक दिन का पर पूर्व तैयारी के ७ दिवस ।

वैसे कहावत है ''आठ के ठाठ'' । शुभ कार्य में ८ का योग अच्छा माना है। मंगल ८ माने गये हैं । कर्म भी आठ हैं । प्रवचन माता भी आठ कही गयी है । सिद्ध भी अष्ट गुणों से युक्त है । रूचक प्रदेश आठ हैं ।

प्रथम वर्ग

तेण कालेणं तेण समएणं

उस काल उस समय में चंपा नाम की नगरी थी । अर्थात् यह भूतकाल की बात है । 'थी' शब्द संसार की अनित्यता को बता रहा है । दुनिया में कोई नित्य नहीं है ।

यहां प्रश्न खड़ा होता है कि उस काल उस समय में ...... तो क्या समय काल अलग अलग हैं ?

सामान्यता काल समय एक दूसरे के पर्यायवाची हैं । फिर भी शास्त्रकार भाषा में रोचकता हेतु कभी-कभी इस प्रकार की शैली का प्रयोग करते हैं । इससे उसका महत्व बढ़ता है । हम कहें १-०१-११ तो इसका तात्पर्य है प्रथम एक तारीख को दूसरा एक महीने को तीसरा ११ वर्ष को सूचित करता है ।

यहां काल समय दोनों एक साथ देने के पीछे आशय यह लिया जा सकता है कि काल यानि अवसर्पिणी काल । समय यानि चौथा आरा जब भगवान महावीर स्वामी इस भूमंडल पर विचरण करते थे ।

यहां प्रश्न होता है कि यह आवसर्पिणी काल क्या होता है ? चौथा आरा क्या होता है ? इनको किसने बनाया ?

जैसे ठंड के बाद गर्मी, गर्मी के बाद वर्षा । दिन के बाद रात रात के बाद दिन, इन्हें किसी ने नहीं बनाया ऐसे ही अवसर्पिणी काल या चौथा आरा किसी ने नहीं बनाया । स्वभाव से अनादि से ऐसा हो रहा है ।

१० कोड़ा कोड़ी सागरोपम का उत्सर्पिणी काल, १० कोड़ा कोड़ी सागरोपम का अवसर्पिणी काल होता है । कुल २० क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम का एक काल चक्र होता है । इसमें एक एक काल में ६-६ आरे होते हैं । जैसे रथ के पहिये में लकड़ी के आड़े डंडे, वर्तमान में सायकिल, बाइक के पहिये की लोहे की ताड़ियाँ होती हैं ।

सर्पिणी का आशय नागिन । नागिन मुँह की ओर मोटी पूंछ की ओर से पतली होती है । इसी प्रकार जहाँ घटने वाला क्रम जारी हो वहां अवसर्पिणी काल

। जहाँ बढ़ने वाला क्रम जारी हो वह उत्सर्पिणी काल ।

यहां कह रहे हैं कि उस अवसर्पिणी काल में जब भगवान महावीर स्वामी थे चंपा नाम की नगरी थी । चंपा नगरी का निर्माण कैसे हुआ ?

मगध अधिपति राजा श्रेणिक ने देवप्रदत्त "हार" तथा सेचनक हाथी अपने पुत्र हल्ल विहल्ल कुमारको दिये और पुत्र कोणिक को राज्य नहीं दिया । तब कोणिक ने अपने भाइयों के साथ मिलकर अपने पिता राजा श्रेणिक को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया । स्वयं कोणिक राजा बन गया ।

कोणिक अपनी माँ चेलना के दर्शन करने गये तब माँ चेलना ने अपना मुँह फेर लिया । कोणिक ने माँ से पूछा - 'मां आप नाराज क्यों हैं ?'

माँ चेलना ने कहा । बेटा जब तू गर्भ में था तब मुझे अपने पति (श्रेणिक राजा) के हृदय का मांस खाने की इच्छा हुई ।

> गर्भ के समय कुछ विशिष्ट इच्छाएँ होती हैं, उन इच्छाओं को दोहद कहा जाता है । उनके पूर्ण न होने पर माँ चिंतायुक्त रहती है । दोहद यानि क्या ? दो=दो हद = हृदय यानि दो हृदय मिलकर जो मांग करें वह दोहद है । दो हृदय माँ का एवं गर्भस्थ शिशु का ।

उस समय मैंने चिंतन किया ऐसे क्रूर भावना का कारण यह गर्भस्थ बालक है। जैसे ही इसका जन्म होगा मैं इसे फिकवा दूंगी । बेटा ! तेरा जन्म होते ही मैंने तुझे फिकवा दिया । आपके पिता को जब पता लगा वे तुरंत दौड़कर वापस लाये। वहां एक मुर्गे ने तुम्हारी ऊँगली को नोंच लिया था । उसमें "पस" हो गया था । तुम्हारे पिता उस ऊँगली के "पस" को मुंह में लेकर निकालते थे । तुम्हें सुख उपजाते थे । उसी विक्षिप्त ऊँगली के कारण तुम्हारा नाम "कोणिक" रखा गया । ऐसे परम उपकारी पिता को तूने जेल में डलवा दिया । जेल में बंद करना है तो मुझे बंद कर दे मैं तेरी गुनाहगार हूँ ।

अपनी माँ से वास्तविकता का पता लगते ही कोणिक का हृदय कांप गया । तुरंत हाथ में बंधन काटने का शस्त्र लेकर जेल की ओर दौड़ा । पिताजी को बंधन मुक्त कर क्षमा मांग लूं ।

कोणिक को हाथ में शस्त्र लेकर आते देख श्रेणिक राजा सोचते हैं कि मुझे मारने आ रहा है । मेरे बेटे को पितृ हत्या का पाप लगेगा । इस पाप से मेरा पुत्र दुर्गति को जाएगा । मेरा पुत्र है उसके द्वारा पाप नहीं होने दूँगा । स्वयं आत्महत्या कर लूं । ऐसा सोचकर अपने हाथ की ऊँगली में रही हीरे की अंगूठी को मुंह मे रख लिया और प्राण त्याग दिये । कोणिक पास गया पर पिताजी को मरणासन्न देख गहरा आघात लगा । शोकाकुल हो गये । बार-बार पिताजी को याद कर रूदन करने लगे अब उस राजगृही नगरी में उनका मन नहीं लगता है ।

मंत्रियों ने अपने राजा की ऐसी दशा देख नये स्थान पर राजधानी बनाने का निर्णय लिया । खोज की । एक जगह पसंद आयी । सुकून के लिये चंपा वृक्ष के नीचे खुदायी की वहां अपार मात्रा में ''स्वर्ण राशि'' प्राप्त हुई उसी जगह नयी नगरी बसायी गयी जिसे 'चंपा नगरी' नाम दिया ।

श्रेणिक कोणिक वैर क्यों ? पूर्व भव में कोणिक एक तापस था । मासखमण पारने मास खमण करता था । श्रेणिक तब भी राजा था । पारणे में तापस को आमंत्रण दिया पर वह तापस को आहार देना भूल गया । ऐसा तीन बार हो गया । तब तापस ने इसे साजिश समझा और बदला लेने के भाव रखे । वही तापस मरकर कोणिक बना ।

इस प्रकार की चंपानगरी के **राजा कोणिक** थे । वे हिमवान पर्वत के समान थे । महाहिमवान पर्वत भरत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला अनेक जड़ी बूटियों वाला, तूफान में अविचल खड़ा रहने वाला एवं शत्रुओं से राज्य की रक्षा करने वाला होता है वैसे ही कोणिक राजा राज्य की सर्वत्र सर्वप्रकार से रक्षा करने वाला था । उस चंपा नाम की नगरी में पूर्णभद्र नाम का चैत्य था । वहां एक वन खंड था । वनखंड मतलब एक ही जाति के वृक्षों हों जहां पर । पूज्य श्री जयमलजी म.सा. ने चैत्य के उद्यान आदि ११२ अर्थों की खोज की ।

ऐसा माना जाता है कि पूर्व समय में किसी के मरणोपरांत जहां अंतिम क्रिया की जाती थी वहां वृक्ष लगाये जाते थे धीरे-धीरे इस प्रक्रिया ने स्मारक का रूप ले लिया । बाद में कहीं कहीं उन स्थानों पर मंदिर बनाये जाने लगे, उसको चैत्य

कहा जाने लगा ।

उस काल उस समय में आर्य सुधर्मा स्वामी जो स्थविर थे पांच सौ अणगारों के साथ चंपानगरी में उस पूर्णभद्र उद्यान में विराजे ।

यहां तीन प्रश्न हैं – १. सुधर्मा स्वामी कौन थे २. उन्हें स्थविर क्यों कहते थे? ३. पाँच सौ अणगार एक साथ चले तो उनके आहार, निहार की व्यवस्था कैसे होती होगी ?

सुधर्मा स्वामी भगवान महावीर के पाँचवे गणधर थे । तुंगियासन्निवेश के रहने वाले । माता भद्रा पिता धर्मी थे । वे ब्राह्मण जाति के थे । अग्निवेश उनका गौत्र था । उम्र १०० थी ५० वर्ष की उम्र में दीक्षा ली । ४२ वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ । ८ वर्ष केवली रहे । भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात् उन्हें आचार्य पद दिया गया । वे प्रथम आचार्य बने । यहां प्रश्न होता है कि गौतम स्वामी प्रथम गणधर थे, उन्हें क्यों नहीं बनाया आचार्य ? समाधान यह है कि पाट पर उन्हें बिठाया जाता है जो यह कहें मैंने भगवान से ऐसा सुना । मैं भगवान से सुनी बात की प्ररूपणा कर रहा हूँ । भगवान के मोक्ष पधारते ही गौतम स्वामी को केवलज्ञान हो चुका था । केवली भगवान कहेंगे मैं स्वयं अपने ज्ञान में देख कर कह रहा हूँ । जबकि पाट परंपरा को चलाने के लिए छद्मस्थ व्यक्ति हो वही कह सकता है । भगवान ने ऐसा कहा है । केवली संघ का संचालन नहीं करते छद्मस्थ ही करते हैं। संचालन करते-करते केवलज्ञान हो जावे तो बात अलग है ।

भगवान के ११ गणधर थे । भगवान की उपस्थिति में ९ गणधर मोक्ष जा चुके थे । इसलिए एकमात्र सुधर्मा स्वामी ही इस पद पर आसीन होने के योग्य थे । इसलिए उन्हें आचार्य पद दिया ।

२. स्थविर शब्द का अर्थ है जो स्वयं धर्म में स्थिर हो । और दूसरों को धर्म में स्थिर करे । स्थविर ३ प्रकार के होते हैं –

१. वय स्थविर – वृद्धावस्था प्राप्त साधु
२. श्रुत स्थविर – जो आचारांग सूयागडांग आदि का ज्ञाता हो ।
३. पर्याय स्थविर – जो २० वर्ष संयम पालन कर चुका हो ।

ऐसे तीनों ही प्रकार से युक्त स्थविर थे । आचार्य गणधर श्री सुधर्मास्वामीजी। वे अपने ५०० शिष्यों के साथ चंपानगरी पधारे ।

प्रश्न उठता है कि ५०० संत सतियों के आहार विहार निहार में बाधा नहीं आती होगी ? जबकि आज दो चार संत सतियों को कई संकट उठाने पड़ते हैं ।

प्रश्न होना ही चाहिये ? पर उस समय के संत सति एवं श्रावक श्राविका की साधना, समझ, विवेक इतना शक्तिशाली था कि ऐसी कोई समस्या नहीं आती थी । अंतराय कर्म से आवे भी तो वे समतावान थे एवं धर्म के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले थे । तुलनात्मक अध्ययन करें तो उस समय के संत –

१. अधिकांश तप त्याग में रत रहते थे ।

२. अधिकांश दिन में एक बार ही आहार करते थे ।

३. अधिकांश तीसरे प्रहर में ही करते थे ।

४. परिवार सम्मिलित थे । ३२ पुरुष एवं २८ स्त्रियों से युक्त परिवार को घर कहते थे । इससे कम को खंडहर कहा जाता था । एक परिवार में ६० व्यक्ति हो तो गोचरी सुलभ होना सहज है ।

५. संत सति संतोष प्रवृत्ति के थे । स्वयं भगवान महावीर स्वामी को साढ़े बारह वर्ष में ३४९ पारणे में १२० पारणे बोरकुट से हुए । धन्ना अणगार उज्झित आहार लेते थे ।

६. गौ रस (दूध, दही, घी) खूब होता था । उपासक दशा में आता है एक एक श्रावक के पास हजारों गायें थीं ।

इस प्रकार ५०० तो क्या अनेकों संत भी हो तो गोचरी आदि में बाधा विघ्न नहीं आते होंगे । किन्तु अंतराय हो तो एक संत को भी नहीं मिले – स्वयं भगवान आदिनाथ, ढंढण मुनि, अर्जुन माली आदि को आहार नहीं मिला ।

प्रश्न–आजकल कइयों का प्रश्न उठता है इतने साथ रहते हैं तो अलग अलग क्षेत्रों में विचरण करें तो कितने क्षेत्र लाभान्वित हो सकते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर यहां मिलता है स्वयं गणधर भगवान ५०० के साथ विचरण कर रहे हैं । "जहाँ जमात वहां करामात" के अनुसार साथ में चलने के

लाभ हैं –

१. धर्म प्रभावना २. लूटपाट नहीं ३. गुरु का सानिध्य ४. गुरु के निर्देश ५. विनय होगा ६. अलग विचरण से घमंड भी आ सकता है ७. एक दूसरे की सेवा का लाभ ८. नया ज्ञान सीखने को मिलेगा ९. अप्रमत्तता बढ़ेगी १०. साधना की प्रमाणिकता बढ़ेगी ११. गुरुदेव द्वारा गलतियों का परिमार्जन होगा १२. सयंम पर शंका नहीं होगी ।

संयम लेने का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति के साथ गुरु की सेवा का होता है क्षेत्रों के विचरण का नहीं । क्षेत्रों के विचरण का लक्ष्य रखने वाला संयम के प्रति अरूचि वाला बनता जाता है । गुरु के प्रति अविनय करने वाला बनता है ।

गुरु के साथ रहने का कितना महत्व है कि १४ पूर्व ४ ज्ञान के धनी गौतम स्वामी अधिकांश समय भगवान के पास रहे ।

कोई संत यदि हमारे गांव में अकेले पधारे तो यह प्रश्न उठता है कि ये अकेले क्यों ? इससे स्पष्ट है कि साथ में रहने पर सभी को अच्छा लगता है । गुरु के साथ में रहने पर हल्कापन भी रहता है । कोई कुछ पूछे तो तुरंत कह सकते हैं गुरुदेव से पूछ लो ।

प्रश्न – साथ में रहने पर कुछ समस्या भी आती है जैसे भीड़ होगी । संघट्टे होंगे, एक्सीडेंट होंगे, ठहरने/परठने की समस्यों तो आयेंगी ?

उत्तर – उस समय तीव्र गति से चलने वाले वाहन नहीं थे । संत ईर्या समितिपूर्वक चलते थे । पूर्व के श्रावक संस्कारवान, आचारवान होते थे । बड़े-बड़े उद्यान होते थे जहां भगवान १४००० संत सतियों के साथ विराजते थे । स्वयं भगवान ने हस्तिपाल राजा की दाणशाला (टेक्स ऑफिस) में अंतिम चौमासा किया था ।

ऐसा ५०० शिष्यों के साथ गणधर सुधर्मास्वामी चंपानगरी पधारे । उनके अंतेवासी शिष्य जंबू स्वामी ने वंदन नमस्कार कर पूछा – हे भगवन् ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीजी जो सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं । उनके द्वारा कहा गया सातवां अंग उपासकदसांग का अर्थ आपने फरमाया । आगे आठवे अंग में

भगवान ने क्या भाव फरमाये हैं ? कृपा कर फरमाने की कृपा करें ।

प्रश्न – प्रश्न कैसे पूछना चाहिये ? प्रश्न पूछना चाहिये या नहीं ? जंबू स्वामी कौन थे ? ये प्रश्न यहां उठ रहे हैं ।

भगवान ने ठाणांग सूत्र में प्रश्न पूछने के ६ कारण बताये हैं –

१. संशय होने के कारण जैसे जयंति बाई ने पूछे ।
२. दुराग्रह से – क्रोध में, द्वेषवश, पूछा गया प्रश्न ।
३. विस्तार के लिए गौतम स्वामी ने पूछा ।
४. किसी को अनुकूल बनाने के लिए ।
५. ज्ञान होते हुए – गौतम स्वामी ने पूछे ।
६. ज्ञान नहीं होते हुए – एवंता मुनि ने पूछे ।

इसमें दुराग्रहपूर्वक प्रश्न नहीं पूछना चाहिये । शेष ५ कारणों से प्रश्न पूछने में लाभ है ।

प्रश्न पूछने का तरीका है । पूज्य को वंदन नमस्कार कर उनकी आज्ञा लेकर प्रश्न पूछें । उसके पूर्व का संदर्भ बताकर आगे प्रश्न पूछे । प्रश्न पूछने के बाद उपकार मानते हुए 'पुन: वंदन नमस्कार कर अपने संयम आराधना में अप्रमत्तता संलग्न रहें ।

सुधर्मस्वामी ने कहा भगवान महावीर स्वामी ने आठवे अंग अंतगढ़दशा सूत्र के ८ वर्ग कहे । उसमें प्रथम वर्ग में १० अध्ययन कहे हैं वे इस प्रकार हैं –

१. गौतम कुमार, २. समुद्रकुमार, ३. सागरकुमार, ४. गंभीरकुमार, ५. स्तिमितकुमार, ६. अचलकुमार, ७. कांपिल्यकुमार, ८. अक्षोभकुमार, ९. प्रसेनजितकुमार, १०. विष्णुकुमार ।

नोट – यहां यह जानना आवश्यक है कि यह जंबूकुमार कौन थे ? जंबू स्वामी सुधर्मा स्वामी के शिष्य थे । सुधर्मास्वामी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया । सगाई हो चुकी थी । एक नहीं दो नहीं ८-८ कन्याओं के साथ । माता-पिता का आग्रह देखकर शादी की हाँ की । शादी के समय ही कह दिया अपनी मंगेतरों से कि शादी के तुरंत बाद दीक्षा लूंगा । आपकी मर्जी हो तो शादी करें ।

आठों कन्याओं ने आपस में विमर्श किया कि एक रात है हम आठ हैं । **मेनका ने अकेले विश्वामित्र को डिगाया था** । तो हम आठों अपने हाव भाव से राग के रंग में अपने स्वामी का रंगने में सफल हो जायेंगे । ऐसा सोचकर शादी कर ली ।

शादी की प्रथम रात्रि .... सजा धजा शयन कक्ष .... । दहेज का समान आंगन में बिखरा पड़ा है । रूप की साक्षात प्रतिमूर्तियाँ एक नहीं आठ सामने हैं । वैराग्य जंबू का ..... । रोम रोम में वैराग्य .... । पति ने अपनी पत्नियों को ऐसा समझाया कि आठों पत्नियाँ दीक्षा लेने को हो गई तैयार ..... धन को लूटने प्रभव आ चुका है बहार ..... अपने ५०० साथियों के साथ लूटना है धन का यह भंडार .... पर अरे ये क्या ? पैर चिपक गये सब उत्साह हो गया बेकार – अंदर पति पत्नी का संवाद का सुना सार ... जंबू को देख जागे संस्कार संयमी जीवन में रमने को प्रभव हो गये तैयार .... साथियों ने भी किया स्वीकार लूटने आये थे और लूट गये । लुटा दिया जीवन प्रभु के द्वार होंगे भव से पार .... पैर चिपक गये हो गए उससे मुक्त ।

देवयोग से प्रभव के पैर चिपक गये । यदि चोरी हो जाता सारा माल तो लोग कहते इस लिए दीक्षा ले ली कि धन चोरी हो गया । शासन की प्रभावना के लिए देव ने पैर कर दिये जाम ।

इस प्रकार प्रभव+५०० चोर + ८ ससुर + ८ सासु + २ माता-पिता स्वयं जंबूजी कुल ५२८ यानि ५२७ के साथ जंबूजी ने संयम धारण किया ।

ऐसे उच्च कोटि की विरक्त आत्मा जंबू स्वामी प्रश्न पूछ रहे हैं सुधर्मा स्वामी उत्तर दे रहे हैं ।

उस काल उस समय में द्वारिका नाम की नगरी थी । यहां काल का अर्थ अवसर्पिणी काल लेना तथा समय का तात्पर्य जब भगवान अरिष्टनेमि इस धरा पर विचरते थे ऐसा चौथे आरे का समय वह द्वारिका नगरी १२ योजन लंबी ९ योजन चौड़ी यानि लगभग १५४ कि.मी. लंबी ११५ कि.मी. चौड़ी माईल में ९६ मील लंबी ७२ मील चौड़ी ।

योजन दो प्रकार के होते हैं ?

१. शाश्वत २. अशाश्वत

शाश्वत योजन ४००० कोस का होता है । अशाश्वत योजन ४ कोस का शाश्वत योजन से शाश्वत वस्तु नापी जाती है । जैसे मेरू पर्वत सिद्ध शीला आदि (शाश्वत यानि सदैव उसी स्वरूप में रहने वाली)

नाशवान चीजों का नाप अशाश्वत योजन से किया जाता है । यहां कहा है ''द्वारका थी'' इसका आशय अब नहीं है इसलिए इसे अशाश्वत योजन से नापना पड़ेगा ।

द्वारिका निर्माण कथा

इस द्वारिका नगरी का निर्माण वेश्रमण धन कुबेर ने किया । वे प्रथम देवलोक में रहते हैं । उन्होंने अपनी अलकापुरी के समान ही इसे बनाया । इस नगरी को देवताओं ने क्यों बनाया ?

श्रीकृष्ण ने मामा कंस का वध कर दिया । जीवयशा (कंस की पत्नि) शिकायत लेकर अपने पिता जरासंध के पास राजगृह नगर गयी । क्रोधित होकर जरासंध ने आदेश दिया कि कृष्ण को हमारे हवाले कर दो नहीं तो युद्ध के लिए तैयार रहो । मैं शौरीपुर के यादव वंश का नाश कर दूंगा ।

महाराजा समुद्रविजयजी ने दूत का तिरस्कार कर वापस भेज दिया । युद्ध हो तो कैसे उस पर विजय पाना इस पर मंत्रणायें चलने लगी ?

एक ज्योतिष ने कहा कि जिस कुल में तीर्थंकर बलदेव वासुदेव जन्मते हैं उस कुल का कुछ अहित नहीं होता । वर्तमान में पूर्व कर्मों के कारण यह क्षेत्र आपके अनुकूल नहीं है दक्षिण की ओर पधारे । जहाँ सत्यभामा पुत्र रत्न को जन्म दे । वही पर आप नगरी बसावे वही से यादव वंश का उदय होगा ।

ऐसा जानकर सभी सौरीपुर से सौराष्ट्र लवण समुद्र के किनारे पहुंचे । वहां सत्यभामा ने ''भानुकुँवर'' को जन्म दिया ।

वहीं कृष्ण ने चोविहार तेले की पौषध सहित आराधना की । देवताओं के स्वामी इन्द्र का आसन चलायमान हुआ । उसकी आज्ञा से कुबेर ने द्वारिका का

निर्माण किया ।

अब प्रश्न है कि **नगरी का नाम द्वारिका क्यों रखा गया** ? इस विषय में अलग अलग मत हैं । किसी का मत हैं कि इस नगरी के १२ द्वार थे । इसलिए इसे 'बारामति' कहते थे । बारामती से द्वारमति हुआ अंत में द्वारिका हो गई । जैसे भोपाल का नाम 'भोजताल' था पर बोलते बोलते भोपाल हो गया ।

इस नगरी के बारह स्वामी थे । दस दशार्ह, एक वासुदेव, एक बलदेव । इस कारण भी इसे द्वारिका कहा गया ।

ऐसी द्वारिका नगरी के ईशान कोण में (पूर्व उत्तर दिशा के मध्य का कोण) रेवतक नाम का पर्वत था । उस पर्वत पर नंदनवन नाम का उद्यान था । उस नंदन वन में 'सूरप्रिय' नाम के यक्ष का यक्षायतन था ।

उस द्वारिका नगरी में

१. १० दशार्ह – समुद्र विजयादि
२. ५ श्रेष्ठ बलशाली – बलदेवादि
३. ३.५ करोड़ कुमार – प्रद्युम्नकुमार आदि
४. दुर्दांत वीर – शांबकुमार आदि
५. सैनिक बलवर्ग – ५६००० हजार महासेनादि
६. योद्धा २१००० – वीर सेना आदि
७. राजा १६००० – उग्रसेन आदि
८. १६००० रानियाँ – रूक्मणी आदि
९. गणिकायें (वेश्या) – अनंगसेनादि
१०. अन्य बहुत नागरिक आदि – निवास करते थे ।

इस प्रकार वैभव सम्पन्न द्वारिका नगरी के तथा समस्त अर्द्धभरत के अधिपति थे वासुदेव श्री कृष्ण । यहां दो प्रश्न के विषय में चिंतन करेंगे –

१. इतने करोड़ों लोग एक द्वारिका में कैसे रहते होंगे । २. भरत आदि क्षेत्र क्या है ?

जैसे भारत के राष्ट्रपति के पास कितने सैनिक हैं । उसका आशय है कि संपूर्ण

भारत में मौजूद सैनिक । यह नहीं कि वे सब सैनिक राष्ट्रपति भवन में ही होंगे ।

जैसे इस व्यक्ति के पास कितना धन है पूछा जावे ? तो वह कहता है कि करोड़ों रूपये । इसका तात्पर्य यह नहीं कि करोड़ों रूपये उसके जेब में होंगे या उस समय उसके घर में होंगे । उसका मतलब है वह करोड़ों का मालिक है । वह घर में, बैंक में, देश में या विदेश में समुच्चय रूप से हैं ।

ठीक इसी प्रकार यहां समझ सकते हैं कि करोड़ों कुमार का कथन कृष्ण वासुदेव के आधिपत्य वाले क्षेत्र में बसने से हो सकता है ।

दूसरा उत्तर यह भी है कि वर्तमान में हर देश की मुद्रा नाप तौल का पैमाना अलग है । हमारे यहां रूपये, कहीं डॉलर, कहीं पौंड, कहीं सेंट । ठीक इसी प्रकार कि आज हम जिसे करोड़, हजार से परिभाषित करते हैं । उस समय करोड़, हजार किसे कहते थे ? यह खोज का विषय है ।

संसार में असंख्य द्वीप समुद्र है । जिसमें अठाई द्वीप में ही मनुष्यों का जन्म होता है । उसी अढ़ाई द्वीप में सूर्यचन्द्र गतिमान हैं । जिसके कारण रात दिन होते हैं । वे अढ़ाई द्वीप है ।

१. जंबू द्वीप २. धातकी खंड, ३. अर्द्ध पुष्कर

इस अढ़ाई द्वीप में ५ भरत, ५ एरावत, ५ महाविदेह कुल १५ क्षेत्र (कर्मभूमि क्षेत्र) हैं । इसमें १ भरत क्षेत्र में ६ खण्ड होते हैं । ६ खंड पर राज्य करने वाला **'चक्रवर्ती'** कहलाता है ३ खंड पर राज्य करने वाला **'वासुदेव'** कहलाता है ।

उस द्वारिका नगरी में अंधगवृष्णि नाम के राजा भी राज्य करते थे । उनकी धारिणी नाम की देवी थी । एक बार अर्द्ध निद्रित अवस्था में उन्होंने सिंह का स्वप्न देखा । पति को स्वप्न का वृतांत बताया । समय आने पर बालक का जन्म हुआ । उसका नाम 'गौतम' कुमार रखा ।

युवावस्था में एक साथ ८ कन्याओं के साथ उसका 'पाणिग्रहण' संस्कार हुआ । प्रीतिदान में ८-८ करोड़ स्वर्ण का प्रदान किया गया ।

यहां प्रश्न है कि अंधगवृष्णि द्वारिका के राजा थे या श्रीकृष्ण ?

जैसे प्रधानमंत्री देश का राजा होता है । अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी होते हैं।

वर्तमान में प्रधानमंत्री दिल्ली में हैं और दिल्ली का मुख्यमंत्री भी अलग से होता हैं । ऐसा यहां समझना उपयुक्त होगा । शेष ज्ञानी गम्य है ।

उस काल उस समय में भगवान अरष्टिनेमिजी पधारे । समवरसरण की रचना की गई । चार प्रकार के देव (भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिष, वैमानिक) समवसरण में आये । श्रीकृष्ण महाराज अपनी प्रजा व परिजन सहित दर्शनार्थ गये।

यहाँ प्रेरणादायी बात है कि कृष्ण ३ खंड के अधिपति होकर भी भगवान के दर्शनार्थ जाते हैं । वर्तमान श्रावकों के पास ३ खंड तो क्या ? तीन मंजिल के मकान नहीं हैं फिर भी इतना व्यस्त जीवन बना रखा है कि दर्शन करने का समय नहीं निकाल पाते हैं ।

गौतमकुमार भी भगवान के दर्शन करने गये । यहां संकेत किया है कि जैसे मेघकुमार गये थे । मेघकुमार का वर्णन ज्ञाता धर्मकथा में है । वहाँ बताया गया है कि मेघ कुमार ५ अभिगम का पालन करते हुए दर्शनार्थ गये । भगवान से देशना सुनकर वैराग्य आया । माता-पिता की आज्ञा लेकर दीक्षा ली ।

इसी प्रकार 'गौतम कुमार' का समझना चाहिए । दीक्षा लेते ही 'गौतम कुमार' ने स्थविर भगवंतो के पास सामायिक से लेकर ११ अंग तक अध्ययन किया । तपश्चरण भी साथ-साथ किया । ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए विहार करने लगे ।

किसी समय भगवान की आज्ञा से 'भिक्षु प्रतिमा' स्वीकार करने की आज्ञा माँगी । 'भिक्षु प्रतिमा' का वर्णन दशाश्रुतस्कंध में है ।

इसके बाद **'गुणरत्न संवर'** नाम तप किया । इस तप को १६ महीने (४८० दिन) में करते हैं । एक से लेकर १६ की तपस्या तक बैठते है । तप का समायोजन इस प्रकार होता है कि एक माह में एक तपस्या पूर्ण हो जावे । जैसे उपवास हो तो एक माह में १५ उपवास १५ पारणा । बेला हो तो १० बेले = २० दिन + १० पारणे = ३० दिन इस प्रकार संपूर्ण तपस्या में ७३ दिन पारणा एवं ४०७ दिन तपस्या के आते हैं ।

इस प्रकार अनेकों तपस्या करके 'गौतम अणगार' नेखंधक के समान एक मास की संलेखना के साथ मुक्ति प्राप्त की। उन्होंने १२ वर्ष तक संयम पाला।

खंधक मुनि का वर्णन भगवती शतक २ उद्देशक १ 'गौतम अणगार' ने खंधक के समान एक मास की संलेखना के साथ मुक्ति प्राप्त की। उन्होंने १२ वर्ष तक संयम पाला।

खंधक मुनि का वर्णन (भगवती शतक २ उद्देश्क १) में हैं। उन्होंने अपनी शारीरिक शक्तियों को क्षीण पाया। तप से शरीर को कृश जानकार यावत जीवन आहार पानी का त्याग कर संथारा (संलेखना) धारण किया। ऐसा यहां गौतम अणगार ने किया।

इसी प्रकार समुद्रकुमार, सागरकुमार, गंभीरकुमार, स्तिमित कुमार, अचलकुमार, काम्पिल्यकुमार, अक्षोभकुमार, प्रसेनजित, विष्णुकुमार के विषय में जानना चाहिए।

प्रथम वर्ग सम्पूर्ण

लीप (लिस) ईयर (अधिवर्ष)

एक बालिका ने पूछा कि - म.सा. जैन लोगों के पर्युषण पर्व एक क्यों नहीं होते ? हमारी मेडम ने पिछले महीने पर्युषण में जमीकंद मेस में नहीं बनने दिया। हमने इस माह बोला मेडम अब हमारे पर्युषण आ रहे हैं, आप मेस में जमीकंद नहीं बनने दें।

मेडम ने कहा - तुम्हारा धर्म कैसा है ? दो-दो बार पर्युषण आता है। म.सा. हमारा सर शर्म से झुक गया।

मैंने कहा बहन - उन्हें कहना कि जैसे प्रतिवर्ष फरवरी 28 की आती है पर चौथे वर्ष 29 की आती है, जिसे लीप ईयर कहते हैं। ऐसे ही हमारा जब लीप ईयर आता है तो हमारे दो पर्युषण या दो संवत्सरी आती है।

द्वितीय वर्ग

द्वारिका नाम की नगरी थी। वृष्णिपिता, धारिणी माता थी। आठ कुमार थे। जैसा प्रथम वर्ग में कहा गया। सारा वर्णन इसी प्रकार है सिर्फ अन्तर दीक्षा पर्याय में है। वहाँ दीक्षा पर्याय १२ वर्ष थी यहाँ पर १६ वर्ष है।

आठों वर्ग में यह वर्ग सदैव चिंतन का विषय बना रहता है। कारण इसमें वर्णित अक्षोभ, समुद्र सागर, अचल ये चार कुमारों के नाम प्रथम वर्ग में भी है। तो क्या एक ही माता-पिता की संतानों के नाम समान हो सकते हैं, यह प्रश्न उठता है ?

बड़ी साधु वंदना में कहा है -

गौतमादिक कंवर सगा, अठारा भ्रात
सर्वअंधकवृष्णि सुत, धारिणी ज्यारी मात

इससे तो यही सिद्ध होता है कि सभी १८ कुमार सगे भाई थे।

* यदि ऐसा मान लें कि समान नाम के अलग अलग माता पिता थे तो समाधान हो जाता है। जैसे कुशलगढ़ में अलका पति संजय नाहटा है तो थांदला में अलका पति संजय वोहरा है। नाम वही है पर सरनेम (गौत्र) में अंतर है। तो ऐसा हो सकता है।

* मूल पाठ देखें तो प्रथम वर्ग 'अंधगवण्हि' अर्थात् अंधगवृष्णि है पर द्वितीय वर्ग में 'वण्हि' अर्थात् 'वृष्णि' है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम वर्ग के पिता का नाम अंधगवृष्णि थे और द्वितीय वर्ग में पिता का नाम वृष्णि है। ऐसा मानने पर समाधान हो जाता है कि दोनों वर्गों में वर्णित कुमार अलग अलग हैं फिर नयी समस्या उत्पन्न होती है कि फिर जयमलजी म.सा. ने 'सगा अठारा भ्रात' क्यों लिखा ? यह प्रश्न अन्वेषण के लिए है।

अहा सुहं देवाणुप्पिया। मा पडिबंधं करेह।

अक्सर लोग कहते हैं संत सति लोग हमेशा श्रावक श्राविका को प्रेरणा करते रहते हैं उनको ऐसा नहीं करना चाहिये। जबकि भगवान तो सबको कहते हैं जैसा सुख उपजे वैसा करो। पर उसके आगे भी भगवान कहते हैं **'मा पडिबंध करेह'** अर्थात् अच्छे कार्य में विलंब मत करो यानि आपको अच्छा कार्य शीघ्र करना ही है।

कुछ शिक्षायें - तृतीय वर्ग से

* हमारी करणी हमारे साथ आयेगी। अनीकसेन आदि कुमारों ने ये नहीं सोचा कि हमारे बाद माँ बाप की सेवा कौन करेगा।
* 32 कन्याओं को एक साथ छोड़ा। आपकी तैयारी एक को छोड़ने की है या नहीं। कायरता क्यों कर रहे हो।
* दीक्षा लेकर ज्ञान, विनय तप तीनो किये।
* भगवान केवली है फिर भी अपना कर्तव्य है कोई काम करने से पहले बड़ों को पूछना। जैसा यहाँ साधकों ने किया।
* गोचरी बहराने का विवेक
* शंका समाधान करने का तरीका देवकी से सीखे।
* अपनी शंका के लिए देवकी के समान बड़ों के पास जाना।
* कर्म किसी को नहीं छोड़ते। जैसे देवकी को हरिणगमेषी देव एवं सुलसा का बदला चुकाना पड़ा।
* माँ की ममता - जैसे देवकी की
* माँ का विनय कृष्ण के समान करना
* तप मे शक्ति देवो से अधिक। तेला तप करने से देव आये आयंबिल के कारण द्वारका पर देव प्रभाव नही चला।
* बहू के प्रति ससुराल पक्ष के कर्तव्य एवं वात्सल्य - जैसे सोमा के प्रति कृष्ण का।
* सपरिवार, सप्रजा दर्शन करना - जैसे कृष्ण ने किया।
* मोक्ष की तमन्ना तड़फ के साथ - जैसे गजसुकुमाल
* गलत कार्य का फल दुखदायक - जैसे सोमिल को दूसरे दिन मरना पड़ा।
* कृष्ण की व्यवहारिकता - जैसे भाई के प्राणांत से राजमार्ग से न जाकर अन्य मार्ग से जाना
* हलवा खाते को मना करना या गोबर खाते को। संसार गोबर है संयम हलवा। कृष्ण के समान दलाल बने।
* बेटी ससुराल जावे तो कोई नहीं कहता उस समय जब विदा हो रही हो आँसु बहा रही हो। तब तो यही कहते है जा बेटी जा सास ससुर की सेवा करना। कृष्ण ने परिवार को दीक्षा दी।
* साँप की चमडी चिकनी या आपकी। साँप की। है ना! तो आपका मन साँप की चमडी पर हाथ फेरने का होता है! नही! यह शरीर का आकर्षण हानिप्रद है स्वयं का हो या दूसरे का। गजसुकुमाल ने शरीर मोह त्याग दिया
* एक जन्म में रिश्ते बदल जाते है। कँवारीपन मे लडकी पिता के घर को अपना बताती है। शादी के बाद पति के घर को अपना बताती है।

तृतीय वर्ग

आगम के कितने प्रकार हैं ? कोई कहेगा ३२, कोई ४५, तो कोई 'नंदीसूत्र' का जानकार अधिक भी बता देगा । है ना ?

पर आगम तो भगवान ने तीन बताये हैं १. सुत्तागमे, २. अत्थागमे, ३. तदुभयागमे ।

तीर्थंकर भगवान जो अर्थागम फरमाते हैं वह गणधरों के लिए **अनंतरागम** कहलाता है एवं गणधरों ने उसे शिष्यों को पढ़ाया वह **परंपरागम** कहलाता है । अर्थागम को गणधर सूत्र का रूप देते हैं अर्थात् सूत्रागम गणधरों की स्वरचना है इसलिए यदि वे अपने शिष्यों को सूत्रागम पढ़ावे तो वह शिष्यों के लिए अनंतरागम कहलाती है । पर अर्थागम तो शिष्यों को प्रभु के द्वारा कहा वह मिल रहा है वह शिष्यों के लिए परंपरागम कहलाता है ।

आगम ३२ ही हैं ऐसा नहीं है । वर्तमान में छ:काय जीवों की रक्षा या दया पालने के उपदेश का समर्थन करने वाले ३२ आगम हैं । अंग सूत्र १२ हैं (दृष्टिवाद सहित) वर्तमान में ११ अंग कहते हैं उसके सहित ३२ हैं पर यदि अभी दृष्टिवाद भी होता है तो आगम ३३ होते ।

इस प्रकार आगम संख्या को लेकर संशय में नहीं रहना है आगम तो मूल रूप से तीन होते हैं सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे ।

जो भी बात जीवों की रक्षा का कारण है वही बात वही वचन आगम है । प्रश्न होता है कि शस्त्र और शास्त्र में क्या अन्तर है ? अंतर तो मात्र एक मात्रा का है पर बड़ा अन्तर है शस्त्र प्राण लेने का कार्य करता है तो शास्त्र प्राण बचाने का कार्य करता है ।

तो उसी आगम का आठवां अंग अंतगढ़ का वांचन चल रहा है । उसमें आपने दो वर्ग का श्रवण किया । आज तृतीय वर्ग को आप सुनने जा रहे हैं ।

तृतीय वर्ग का प्रथम अध्ययन अनीकसेन का है । वे भद्दिलपुर नगरी के नाग गाथापति के पुत्र सुलसा के अंगजात थे । वहां श्रीवन नाम का उद्यान था । जितशत्रु राजा राज्य करते थे । अनीकसेन का पांच धायों के द्वारा लालन पालन

किया गया । दूध पिलाने वाली २ स्नान कराने वाली ३. आभूषण पहनाने वाली, ४. खेल खिलाने वाली, ५. गोद में रखने वाली ।

यहां उववाइय सूत्र में वर्णित दृढ़प्रतिज्ञ के अनुसार लालन पालन हुआ । ऐसा संकेत है । अर्थात् अनीकसेन को ८ वर्ष की उम्र में कलाचार्य के पास भेजा । वह शिक्षा पाकर युवावस्था को प्राप्त हुआ । उनके माता पिता ने ३२ कन्याओ के साथ विवाह किया और अपनी ओर से ३२-३२ करोड़ का सोना आदि दिया ।

यहां स्पष्ट होता है कि पुराने समय में दहेज को प्रीतिदान कहा जाता था । वह भी पिता की ओर से दिया जाता था न कि वधु पक्ष के द्वारा ।

भगवान अरिष्टनेमि पधारे । श्रीवन उद्यान को समवसृत हुए । धर्म श्रवण करने परिषद् आयी । अनीकसेन ने भी जनता का कोलाहल सुनकर जाने का सोचा । वह गौतमकुमार के समान समवशरण में गये देशना सुनकर माता-पिता की आज्ञा लेकर दीक्षित हुए । सामायिक से लेकर १४ पूर्व का ज्ञान किया । २० वर्ष संयम पर्याय पालकर शत्रुंजय पर्वत पर जाकर सिद्ध हुए ।

शेष अनंतसेन, अजितसेन, अनहतरिपु, देवसेन, शत्रुसेन का वर्णन अनीकसेन के समान समझना ।

सातवे अध्ययन में 'सारण' कुमार का वर्णन है । माता धारिणी पिता वसुदेव थे । विवाह ५० कन्याओं के साथ में । शेष वर्णन उपरोक्त अनुसार समझना ।

आठवाँ अध्ययन

आठवें अध्ययन में गजसुकुमार का वर्णन है । पर शास्त्रकार की शैली बड़ी रोचक हो गयी है । हर अध्ययन 'नायक' के परिचय से शुरु होता है । यहाँ शास्त्रकार कह रहे हैं कि भगवान अरिष्टनेमि के ६ शिष्य अनीकसेन आदि । भगवान की आज्ञा से बेले २ पारणे करने लगे । बेले के पारणे में दो के संघाड़े भिक्षार्थ जाना चाहते हैं । भिक्षार्थ जाने के लिए उन्होंने गौतम स्वामी के समान भगवान से आज्ञा मांगी ।

पारणे के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय किया, दूसरे प्रहर में ध्यान, तृतीय प्रहर में मुंहपत्ति, पात्र का प्रतिलेखन कर भगवान से वन्दन नमस्कार कर आज्ञा मांगी ।

आज्ञा मिलने पर शांत मन से, चंचलता रहित अर्थात् हंसी मजाक नहीं करते हुए आगे साढ़े तीन हाथ जमीन देखते हुए वे संत उच्च नीच मध्यम कुलों में गये ।

क्या संत सति निम्न कुलों में गोचरी जाते हैं ? नहीं । तो फिर ये संत निम्न कुलों में कैसे गोचरी पधारे ? यहां उच्च कुल अर्थात् वह शाकाहारी परिवार जो प्रसाद, महलों में रहता हो, मध्यमकुल अर्थात् २-३ मंजिले मकान सामान्य झोपड़ी आदि जैसे सामान्य मकानों के निवासियों को निम्नकुल समझना चाहिए।

भिक्षार्थ परिभ्रमण करते हुए वे महारानी देवकी के प्रसाद में प्रविष्ट हुए । मुनियों को अपने यहां आते देख आनंदित हुई । आसन से उठकर सात आठ कदम लेने गयी । वंदना की । फिर भोजनशाला में आकर सिंहकेशरिया मोदक से एक थाल भरा और मुनियों को प्रतिलाभ देने के पश्चात् वंदन नमस्कार कर थोड़ी दूर साथ में चलकर पुन: लाभ की भावना भांति रही ।

इस प्रसंग पर कई प्रश्न उभरते हैं –

१. गोचरी के समय श्रावक की चर्या क्या होनी चाहिए ?
२. सिंह केशरिया मोदक क्या है ?
३. 'प्रतिलाभ' का क्या आशय ?
४. वंदन की विधि क्या ?
५. क्या साधु राजपिंड ले सकता है ?

* राजपिंडी लेने की मनाही प्रथम एवं अंतिम तीर्थंकर के समय में है । यह घटना २२वें तीर्थंकर के समय की है अत: राजपिण्ड लेने में आपत्ति नहीं समझी जाती है । (भगवती शतक २६ उद्देशक ७-८) के अनुसार ।

* सिंह केसरिया मोदक वासुदेव श्रीकृष्ण के नाश्ते के लिए बनाया गया विशेष मोदक है जिसमें ८४ प्रकार के मूल्यवान अर्थ गरिष्ठ सुगंधित पदार्थों का समावेश किया जाता है । मोदक का अर्थ है प्रसन्नता देने वाला। सामान्यत: मोदक-लड्डू के अर्थ में रूढ़ हो गया । यहाँ 'सिंह केसरिया' मोदक का क्या अर्थ समझना ? तो कहा गया जैसे वन्य प्राणियों में सिंह प्रधान है वैसे सभी मिष्ठान्नों में जो प्रधान मिष्ठान्न है वह । दूसरा अर्थ किया जैसे सिंह के गले में बाल

होते हैं उस तरह की बनावट वाला मिष्ठान्न जैसे आज के समय में फीणी आदि। ऐसा अनुमान है।

संत सति हमारे यहां आते दिखाई दे तो ७-८ कदम लेने जाना चाहिए। ये विधि है पर वास्तव में हम इसका उल्टा करते हैं म.सा. को देखते ही हम घर में घुसते हैं। चिल्लाते हैं म.सा. आ रहे हैं ताकि घर वाले तैयारी कर लें। **पर म.सा. के लिए तैयार किया वोहराने में दोष का कारण है।**

वोहराते हुए प्रसन्न होकर पुनः लाभ देने की भावना भाना। उन्हें वापस कुछ कदम छोड़ने जाना। अधिकांश होता है यह है कि श्रावक श्राविका वोहराकर संत सति को कुछ कदम छोड़ने की बजाय भोजनशाला में ही चर्चा करने लग जाते हैं, यह तो वोहराया ही नहीं, ये तो म.सा. ने लिया ही नहीं। सामान्य तौर पर आप मेहमान को लेने जाते हैं और छोड़ने भी जाते हैं। ऐसा ही संत सतियों के अपने यहां पधारने पर किया जाता है।

'पडिलाभेमाणे' अर्थात् प्रतिलाभ हुआ। सामान्यतः देने वाला जिसे देता है उसे लाभ होता है पर यहाँ गोचरी संत को वोहराई गई पर लाभ वोहराने वाली देवकी को हुआ।

देवकी महारानी ने वोहराने के पहले भी वंदन किया बाद में भी। संत सतियों को असुविधा न हो तो हम भी ऐसा कर सकते हैं। सामान्यतः थोड़ी दूर पर हो तभी वंदना शुरु कर सकते हैं। ताकि उन्हें वंदना झेलते वक्त ज्यादा समय रुकना न पड़े। फिर भी वंदना के ३ प्रकार में से जघन्य वंदना से हम वंदना करके फिर उनकी साता पूछ सकते हैं। वंदना ३ कौन सी ?

१. जघन्य – मत्थएण वंदामि
२. मध्यम – तिक्खुत्तो का संपूर्ण पाठ
३. उत्कृष्ट – इच्छामि खमासमणो

सामान्यतः प्रवचन प्रार्थना के समय 'तिक्खुत्तो' का पाठ बोला जाता है। प्रतिक्रमण के समय 'इच्छामि खमासमणो' का पाठ और जब जल्दी हो या संत सति से कुछ पूछना हो तो जघन्य वंदना 'मत्थएण वंदामि' की जाती है। संत

संति अपने कमरे में हो हमें उनसे काम हो तो झाँककर नहीं देखना चाहिए। द्वार पर 'मत्थएण वंदामि' का उच्चारण करना चाहिए। यह 'आपके लिए मास्टर चाबी है कुछ कार्य हो या बुलाना हो, या बात करना हो तुरंत विनय से बोलें 'मत्थएण वंदामि'

वंदना ३ बार क्यों की जाती है ? कोई कोई का कहना है संत सति के ज्ञान दर्शन चारित्र को वंदना हो। इसलिए ३ बार करते हैं। वैसे भी दुनिया में ३ का महत्व है यथा –

१. शपथ पत्र ३ बार पढ़ाया जाता है
२. किसी खेल में कहते हैं वन टू थ्री।
३. किसी कार्य का अंतिम निर्णय करने पर कहते हैं जल्दी करो वन टू थ्री। एक दो तीन
४. मुसलमानों में निकाह (शादी) के समय तीन बार कहते हैं – कबूल, कबूल कबूल।
५. तलाक हो तब भी तीन बार तलाक, तलाक, तलाक कहा जाता है।
७. कोई कार्य को आदि से अंत तक ३ मंगल मनाने का भी सुना जाता है। इन तीनों मंगलों की पूर्ति के लिए तीन वंदना आवश्यक है।

वंदना करने से उच्च पद की प्राप्ति, धारण करने का सामर्थ्य, कार्य की कुशलता प्राप्त होती है।

वंदना कैसी करनी चाहिये ? जैसे मंदिर में आरती का थाल या दीपक घुमाया जाता है। वैसे ही हमारे हाथ घूमना चाहिए। मंदिर की परिक्रमा में मंदिर को दाहिनी ओर रखा जाता है। वैसे ही हमारे पूज्य जन हमारी दाहिनी ओर रहें कोई कोई ठीक उल्टी प्रदक्षिणा का भी कहते हैं। सामान्यता वंदनकर्ता के भाव वंदनीय के प्रति उत्कृष्ट होना चाहिए। कोई कोई इससे विपरीत भी करते हैं। कैसे भी करे भाव अच्छे होने चाहिए।

तो देवकी महारानी वोहराकर निवृत्त हुई। तदन्तर पुनः दो मुनिराज आये। उन्हें उसी भक्ति भाव से वोहराया। पुनः दो संत और पधारे। उन्हें वोहराने के

पश्चात देवकी रानी के मन में संकल्प उठा और संशय निवारण हेतु विनयपूर्वक निवेदन किया –

हे देवानुप्रिय ! कृष्ण वासुदेव की इस बारह योजन लंबी, नवयोजन चौड़ी द्वारिका में श्रमण निर्ग्रंथों को अन्य गृहस्थ के यहां आहार पानी सुलभ नहीं है जिससे उन्हें आहार पानी के लिए उन्हीं कुलों में बार बार आना पड़ता है ।

देवकी सुश्राविका थी । उसकी भावना वोहराने की नहीं थी या बार–बार वोहराकर परेशान हो गई थी ऐसा भी नहीं है । एक सुश्रावक सुश्राविका का कर्तव्य है कि वह प्रेमपूर्वक पथच्युत संत को सन्मार्ग पर लावे । पर देवकी के इस प्रकार प्रश्न से, शंका से कई फलित अर्थ प्राप्त होते हैं ।

१. उस समय के श्रावक जागृत थे । क्रियावान थे । संत सतियों के संयम के सहायक थे ।

२. आज के समान सामूहिक गोचरी नहीं होती थी ।

३. भिक्षा दिन में एक बार ही जाया जाता था ।

४. जिस कुल में एक संघाड़ा गया वहां दूसरा भी चला जाता था ।

५. आज के समान श्रमण एक ही घर में दूसरी तीसरी बार नहीं जाते थे ।

६. यदि कोई आ भी जावे तो ससम्मान उन्हें देवकी की तरह प्रतिलाभ देना चाहिए ।

६. कोई संत सति पथ भटक रहे हों तो शंका का समाधान करने के लिए हिचकिचाते नहीं थे ।

तो देवकी रानी को मुनियों ने समाधान दिया कि जो पहले आये थे वो हम नहीं हैं । हम नाग गाथापति एवं सुलसा पत्नी के समान रंग रूप वाले ६ सहोदर भ्राता है । बेले बेले के पारणे करते हुए संयम पालन कर रहे हैं । वे वापस प्रभु की शरण में लौट गये । * संत अपने आपको गुप्त रखते हैं अपना दीक्षा पूर्व का परिचय देने से कतराते हैं तप भी नहीं बताते तो यहाँ संतों ने क्यों बताया कि देवकी रानी कहीं यह न समझे कि संत रस लोलूपी हैं (पेटू) हैं । सिंह केशरिया मोदक के लालच में बार–बार आ रहे हैं । यह भ्रम मिटाना आवश्यक है इसलिए।

इधर देवकी ने सुना और विचार उत्पन्न हुआ कि पोलासपुर में मेरे भाई मुनि अतिमुक्त श्रमण ने भविष्यवाणी की थी कि तुम एक समान आठ पुत्रों की माता बनोगी । ऐसे पुत्र भरत क्षेत्र में दूसरी ओर माता जन्म नहीं देगी । यह भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध हुई ।

मैं जाऊँ और भगवान से निवेदन करूँ । इस प्रकार विचार कर तुरंत रथ तैयार करने का आदेश दिया । अतिमुक्त श्रमण एवं अतिमुक्त कुमार (एवंता) एक ही है या अलग–अलग ?

अतिमुक्त श्रमण इक्कीसवें भगवान नमिनाथ के शासन के संत थे जबकि अतिमुक्त कुमार भगवान महावीर स्वामी के शिष्य थे ।

मथुरा नगरी के राजा उग्रसेन थे । बेटे कंस ने कैद करके स्वयं को राजा घोषित कर दिया तब छोटा भाई अतिमुक्त को वैराग्य आ गया । दीक्षा ले ली ।

एक बार गोचरी हेतु मथुरा नगरी में कंस राजा के महल में प्रवेश किया । उस समय जीवयशा जो कंस की पत्नी, प्रतिवासदेव जरासंध की बेटी थी वह अपनी नणंद देवकी के बाल गूंथ रही थी । जीवयशा ने मुनि को देखकर कहा तुम्हारा भाई राजा और तुम घर–घर मांगते हो, लज्जास्पद है । अति हास्य एवं बार–बार कहने से मुनिराज की समता नहीं रही उन्होंने रुष्ट होकर कहा – क्यों इतना अभिमान करती हो ? तुम जिसके बाल गूंथ रही हो (चोटी बना रही हो) उसी का सातवां पुत्र तुम्हें विधवा बनायेगा । वह तुम्हारे पति एवं पिता दोनों का प्राण लेने वाला होगा । देवकी से कहा तुम समान रंग रूप वाले आठ पुत्रों को जन्म दोगी ।

इसी शंका का समाधान करने देवकी महारानी रथारूढ़ होकर भगवान के समीप गई, वंदन नमस्कार कर पर्युपासना करने लगी – उसके कहे बिना ही श्री अरिष्टनेमि भगवान ने अपने ज्ञान से जानकर कहा कि हे देवकी ! आपको ऐसा विचार आया कि अतिमुक्त श्रमण की भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध हुई ? देवकी ने कहा, हाँ भगवन् ! यही पूछने के लिए आयी हूँ ।

तब समाधान देते हुए भगवान ने कहा कि भद्दिलपुर नगर की सुलसा गाथापत्नि जो कि नाग गाथापति की पत्नी थी । उसे किसी निमित्तक ने बताया

कि तुम्हें मृत पुत्र प्राप्त होंगे।

जानकर उसने हरिणगमेषी देव की आराधना की । देव प्रसन्न होने के पश्चात् तुम्हारे और सुलसा के पुत्रों को आपस में बदल देता था । वास्तव में ६ पुत्र तुम्हारे अंगजात हैं । सुलसा के नहीं ।

देवकी पूर्व भव में देरानी थी । उसने अपनी जेठानी के ६ रत्न चुराये थे । वह रत्न चूहे के बिल में डाल दिये । जिससे यदि खोज करने पर मिल भी जावे तो चूहे पर आरोप आवे । दोष चूहे पर मढ़ा जावे ।

कालांतर में वही चूहा मरकर हरिणगमेषी देव बना । देरानी देवकी एवं जेठानी सुलसा बनी । वही पूर्वोपार्जित कर्म उदय में आये ।

(नोट – कोई कोई ७ रत्न चुराने का कहते हैं । एक अपने पास रखा ६ बिल में डाले । ऐसा भी कहीं पढ़ा था)

देवकी रानी इस रहस्यपूर्ण बात को सुनकर हृष्ट तुष्ट हुई । वंदन नमस्कार करके छहो मुनिराज थे वहाँ आई । हर्ष के कारण स्तनों में दूध भर गया । हर्ष के कारण आँसू आ गये । कंचुकी तंग हो गई । आभूषण तंग हो गये । रोम-रोम पुलकित हो गया । लंबे समय तक निर्निमेष दृष्टि से देखती हुई निखारती रही । तत्पश्चात् मुनियों को वंदन नमस्कार कर भगवान के पास आकर उन्हें वन्दन नमस्कार किया और अपने स्वस्थान आ गई +।

यहां देवकी रानी की आंखों में आंसू आ गये । तो प्रश्न है कि आँसू आते क्यों हैं ?

१. अकृत्य पर पश्चाताप के कारण
२. सुख अनुभूति पर हर्ष के
३. दुख के समय -= सांत्वना के
४. उपकारी – कृतज्ञता के
५. माता पिता के लिए – समर्पणता के
६. सफलता पर – बधाई के
७. जुदाई पर – विदाई के आँसू आते हैं ।

८. बच्चों के लिए – वात्सल्य के

वैज्ञानिकों का मत है कि पलकों के पीछे लेक्रीमल नाम की ग्रंथि होती है । वह इन प्रसंगों पर लबालब भर जाती है । उस समय ग्लुकोस सोडियम पोटिशियम इन प्रसंगों पर घटते बढ़ते हैं । अत: समय समय पर आये आँसुओं के स्वाद में भिन्नता होती है ।

बड़े लोग पीड़ा के कारण, महिलायें संवेदनशीलता के कारण, बच्चे अपनी जिद के कारण रोते हैं क्योंकि उनमें सहनशीलता का अभाव होता है ।

बेवजह रोना कमजोरी, कायरता के लक्षण हैं । दूसरे की सफलता पर आँसू आना श्रेष्ठता के लक्षण हैं । अपनों के पास आँसू बहाने से मन हल्का हो जाता है।

किसी भी परिस्थिति में आँसू नहीं बहावें – वह भव्य हो तो मोक्ष भी पा सकता है ।

देवकी रानी के आँसू हर्ष के आसूँ थे । आखिर सुख के बाद दुख धूप के बाद छाव, दिन के बाद रात का क्रम है । उसी अनुसार राजमहल में आकर देवकी रानी शय्या पर आकर उन्हें मानसिक संकल्प उत्पन्न हुआ । धन्य है वे मातायें जिन्होंने अपनी कुक्षी से उत्पन्न हुए बच्चों की बाल क्रिड़ायें देखी । तुतली बोली सुनी । हाथों से पकड़ गोद में बैठाया – खिलाया । मंजुल मधुर शब्दों में बच्चों से बातें की । मैं सात पुत्रों को जन्म देकर भी किसी की बाल्यावस्था के आनंद का अनुभव नहीं किया। उपर से यह कृष्ण भी मेरे दर्शनों को ६-६ माह बाद आता है।

मैं निश्चित रूप से अधन्य पुण्यहीन हूँ । इस प्रकार से आर्तध्यान करने लगी। किसी कवि ने उनकी मन:स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है–

इमझुरे देवकी रानी या तो पुत्र बिना बिलखाणी रे ।।टेर।।
म्हें तो सातों नन्दन जाया, पिण एक न गोद खिलाया रे ।।१।।
घर पालणों नहीं बंधायो, नहीं मधुर हालरियो गायो रे ।।२।।
घुंघरा चूखनीन बसाई, झूमर पिण नाहिं बंधाई रे ।।३।।
नहिं गहणा कपड़ापहिनाया, नहिं झंगल्या टोपी सिवाया रे ।।४।।
नहीं काजल आंख लगायो, नहीं स्नान करी ने जिमायो रे ।।५।।

नहीं गले दामणा दीधा, वलि चांद सूरज नहीं कीधा रे ॥६॥
नहीं स्तन-पय-पान करायो, रूठा ने नहीं मनायो रे ॥७॥
म्हें तो कडिया नहिं उठायो, नहिं अंगूली पकड़ चलायो रे ॥८॥
घू-घू कही नाहिं डरायो, नहीं गुद गुल्या पाड़ हंसायो रे ॥९॥
नहीं चक्री भंवरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद बसाया रे ॥१०॥
मैं अभागण पुण्य न कीधा, तिण थी सुत बिछड़ा लीधारे ॥११॥
गले बे हाथ नजर है धरती, आंखें आँसू भर झरती रे ॥१२॥
पग वन्दन किसन पधारे, मांजी ने उदास निहारे रे ॥१३॥
कहे अमीरिख किम दुख पावो, माताजी मुझे फरमावो रे ॥१४॥

सर्वविदित है कि कृष्ण का जन्म जेल में हुआ । पालन पोषण यशोदा के यहां। देवकी रानी सोच रही है ३ खंड के अधिपति कृष्ण भी ६-६ माह में वंदन के लिए आता है । अब मैं क्या करूं कि मेरी चाहना पूर्ण हो ।

क्या कारण है कि कृष्ण ६ माह में वंदन नमस्कार को आते थे । उत्तर दिया गया कि कृष्ण के पिता श्री वासुदेव की ७२००० रानियाँ थी । श्रीकृष्ण प्रतिदिन ४०० माताओं के दर्शनार्थ जाते थे । इस प्रकार ६ माह में नंबर आता था ।

४०० माताओं के दर्शन में काफी समय लग जाता होगा ? तो ऐसा अनुमान करते हैं कि कृष्ण के आने पर सभी मातायें एक जगह एकत्र हो जाती होंगी और कृष्ण सभी को सामूहिक वंदन कर लेते होंगे । जैसे अनेक लोगों से 'प्रवचन' में आप सामूहिक जय जिनेन्द्र कर लेते हो ।

जिन जिन माताओं के बारे में कोई विशेष जानकारी मिलती होगी या उनका चेहरा देखकर उनसे विशेष कुशल क्षेम पूछ लेते होंगे ?,

योग की बात कि जिस दिन माता देवकी उदास थी, शोक मग्न थी उसी दिन कृष्ण वासुदेव के चरण वंदन का अवसर आया ।

विचारणीय

३ खंड के अधिपति होकर कृष्ण महाराज माताओं के दर्शन करने

जाते थे । उसमें भी सगी माँ तो एक ही थी । शेष सौतेली माताओं के दर्शनार्थ जाते थे ।

यहाँ विचारणीय है कि हमारा ३ मंजिला मकान नहीं मातायें भी अधिक नहीं फिर भी हम उनके चरण वंदन करते हैं या नहीं ।

माता देवकी शोकमग्न, गले पर हाथ, नजर नीचे है । कृष्ण उनके उदास चेहरे को देखकर कहते हैं । हे माताजी ! आज आपको क्या हुआ है ? पहले मेरे आने पर आप प्रसन्न होती थीं । आज आपकी उदासी का कारण बताइये ?

यहाँ कृष्ण का कितना सुंदर संबोधन है - हे माताजी ! आजकल जो नाम रखे जा रहे हैं, उनका कोई अर्थ नहीं निकलता, बिना सोचे समझे नाम रख देते हैं। आज पिताजी को 'डेड', माताजी को 'ममी', बेटी-बेटे को 'पप्पी' कहने लगे हैं । डेड (Dead) यानि मरा हुआ । ममी कहते हैं रोम देश में हजारों वर्ष पुराने रखे हुए शवों को । ''पप्पी' कहते हैं कुत्ते के बच्चे को। आप अपने बच्चे का नाम रखते हैं ''पप्पी' यानि कुत्ते का बच्चा तो आप कौन ?

माता ने कृष्ण का प्रेमपूर्ण संबोधन सुनकर अपने मन की सारी व्यथा उन्हें कह डाली । कृष्ण महाराज कहते हैं माँ मैं ऐसा प्रयत्न करूंगा कि जिससे मुझे लघु सहोदर भ्राता हो ।

बंधुओं ! संसार दुखों से भरा है । सात पुत्रों की माता, ३ खंड के अधिपति की माँ भी सुखी नहीं है । संसार के इन दृश्यों को देखकर भव्यजीव शीघ्र संवेग को प्राप्त हो जाते हैं ।

कृष्ण वहाँ से निकलकर सीधे पौषधशाला पहुंचे । पौषधशाला में पौषधयुक्त तेला किया ।

अहा ! कितनी सारी प्रेरणायें मिल रही हैं ।

१. तीन खंड के अधिपति होकर ये नहीं सोचा थोड़ा कार्य व्यवस्थित कर लूं फिर तेला कर लूंगा ।

२. ये नहीं सोचा धारणा कर लूं आज । ताकि कल साता से तेला हो जायेगा ।

३. इससे ये भी स्पष्ट होता है कि बिना खाये पीये पहले माता पिता के दर्शन करते होंगे फिर खाते–पीते होंगे । यदि खा पीकर आये होते तो वहां से सीधे निकलकर तेला कैसे करते ?

४. माँ की पीड़ा से ऐसे व्यथित हो गये जैसे स्वयं की पीड़ा हो ।

(यदि समय हो तो पूरा प्रवचन माता पिता के उपकारों पर दिया जा सकता है यहाँ पर)

यहां प्रश्न होता है कि जो जीव निदानकृत होते हैं(वासुदेव आदि) वे नवकारसी तप भी नहीं कर सकते तो फिर कृष्ण ने तेला तप कैसे किया ।

बात आगम की है । पर यहां तेला तप मोक्ष मार्ग का हेतु रखकर नहीं किया । यदि मोक्षमार्ग का लक्ष्य करते तो जरूर विघ्न होता है और तेला भंग हो जाता ।

जैसे कोई १ घंटा भी भूखा नहीं रह सकता । पर इन्कम टेक्स का छापा पड़ जाय तो भूख लगती है क्या ? या गुस्सा आ जावे तो दिन भर भूखे रह जाते हैं ।

* कहीं धरना देना हो तो भूख सहन हो जाती है, कहीं बाढ़ आदि में फंस जाये तो भूख सहन होती है, यदि कोई कहे आज उपवास कर लो कल सोने का सिक्का देंगे तो भी भूख सहन करते हैं ।

ये सारी सहनशीलता मोक्ष के लक्ष्य को लेकर नहीं है म.सा. पोरसी का कहे तो विचार करेंगे ।पर धर्मपत्नी कहे उपवास कर लो तो ....। तो उपवास हो जायेगा है ना ।

ठीक इसी प्रकार कृष्ण महाराज ने इस लोक की कामना पूर्ति हेतु तप किया। इसमें आगमानुसार कोई बाधा नहीं है जैसे अभयकुमार ने अपनी माता चेलना के दोहदपूर्ति के लिए तेला किया । ऐसा ज्ञाता धर्मकथा अध्ययन प्रथम में आता है । ठीक उसी प्रकार कृष्ण ने तेला किया ।

आराधना से आकर्षित होकर हरिणगमैषी देव आया । उसने कृष्ण को निवेदन किया – हे देवानुप्रिय, देवलोक से एक देव चवकर आपके भाई के रूप में जन्म लेगा और आपका मनोरथपूर्ण होगा । परंतु बाल्यकाल बीतने पर युवावस्था आने पर वह भगवान अरिष्ट नेमि के पास प्रवज्या धारण कर लेगा ।

यहां शंका होती है कि क्या देव पुत्रादि देने में समर्थ हैं । यदि वे समर्थ नहीं हैं तो कृष्ण ने देव की आराधना क्यों की ?

देवता पुत्रादि देने में समर्थ नहीं । यदि वे दे सकते तो कुँवारी कन्याओं को संतान उत्पन्न हो जावे । विवाहादि की जरूरत नहीं पड़े । अति मुक्त श्रमण एवं भगवान अरिष्टनेमि के कथन से पहले ही स्पष्ट हो चुका था कि देवकी महारानी को आठ पुत्र होंगे । फिर भी देव को याद करने के पीछे निम्न कारण हो सकते हैं–

१. कहीं पूर्व भाइयों के समान देव इसका हरण न कर ले । देव से स्पष्ट हुआ वह युवावस्था आने पर संयम लेगा यानि हरण नहीं होगा ।
२. कब जन्म लेगा इस जिज्ञासा को शांत करने के भाव थे ।
३. माँ को संतोष बना रहे कि कृष्ण मेरी पीड़ा को दूर करने के प्रयास कर रहे हैं।

जैसे हड्डी का जोड़ ४५ दिन में, टायफाइड बुखार २१ दिन में ठीक होता है यह जानते हुए भी मरीज नित्य इलाज लेता रहता है जिससे शांति बनी रहे ।

श्रीकृष्ण देवता से जानकारी प्राप्त कर माता के पास गये और एक सहोदर भ्राता के जन्म की बात कही । पर दीक्षा लेगा यह बात नहीं बतायी । यह श्रीकृष्ण वासुदेव का वचन विवेक है कहाँ बोलना ? कितना बोलना ?

वचन विवेक

३ इंच की जबान बिना हड्डी की जबान ६ फुट के आदमी को हिलाकर रख देती है ।

व्यक्ति समझता है अधिक बोलने पर मैं समझदार समझा जाऊँगा पर ऐसा नहीं है । जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सब कम ही बोलते थे । ऐसा अनुभव आपने किया होगा ।

अकबर बीरबल को नीचा दिखाने का सोचा करता था । एक दिन उसे विचार आया कि बीरबल के पिता को कुछ सवाल पूछे जावे । पिता उत्तर नहीं दे पायेंगे और मैं बीरबल को नीचा दिखाते हुए कहुंगा कि देखो बीरबल, तुम इतने बुद्धिमान हो, आपके पिताजी अनपढ़ हैं, इसका तात्पर्य है कि तुम किसी ओर की संतान हो ।

अकबर ने अपनी सोची युक्ति पर अमल करते हुए बीरबल से कहा – कल अपने पिताजी को भी राजसभा में लाना । बीरबल समझदार था । उसने कहा – जी हुजूर ! घर आकर पिताजी से कहा – कल दरबार में चलना है । अकबर बादशाह कुछ भी पूछे तो आपको उत्तर नहीं देना है, मौन रहना है ।

दूसरे दिन राजसभा में बीरबल अपने पिताजी के साथ उपस्थित हुआ । राजा ने प्रश्न पूछे पर पिताजी मौन रहे । राजा को अच्छा लग रहा था क्योंकि उन्हें बीरबल को नीचा दिखाने का मौका मिल रहा था ।

उसने बीरबल से कहा – क्यों बीरबल ! तुम्हारे पिताजी का मौन व्रत हैं ? या गूंगे हैं? या इनको प्रश्नों का उत्तर नहीं आता है ?

बीरबल ने कहा – हुजूर ! न मेरे पिता गूंगे हैं न उनका मौन है । पर नीति का कथन है कि यदि कोई बेवकूफ आदमी प्रश्न करे तो समझदार को चुप रहना चाहिए ।

आप हंस रहे हैं, पर अकबर बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया । अकबर बीरबल का यह किस्सा संदेश दे रहा है कि कम बोलो, मीठा बोलो, समझदार बोलो, अधिक बोलने वाला समझदार नहीं कहा जाता है ।

अधिक बोलने वाला गंभीर नहीं रहता, गुप्त बातें प्रकट करता है झूठ बोलना पड़ सकता है, आम लोगों का विश्वास खो देता है ।

कृष्ण ने परिमित वचन से माँ को आश्वस्त किया ।

कालान्तर में माता देवकी ने सिंह का स्वप्न देखा । देखकर जागृत हुई । अपने स्वप्न का वृतांत पति से निवेदन किया । पतिदेव ने कोई पुण्यशाली गर्भ में आने का अनुमान बताया । देवकी रानी सुनकर बहुत हर्षित हुई ।,

स्वप्न विचार

स्वप्न भी कभी-कभी भविष्य की सूचना देते हैं। जैन धर्म में स्वप्न का विशेष महत्व है भगवती सूत्र में इसका विशेष वर्णन है । वहाँ स्वप्न के ५ प्रकार बताये हैं ।

१. यथा तथ्य – जैसा स्वप्न देखा, वैसा ही हो, जैसे स्वप्न में सिंह देखा,

जागृत होने पर सिंह दिखे ।

२. तदविपरीत – विपरीत फल मिले – जैसे स्वप्न में देखा धन मिलेगा और जागृत होने पर नुकसान हुआ ।

३. चिंता स्वप्न – दिन भर जो चिंतन किया वैसा स्वप्न में आवे ।

४. प्रतान स्वप्न – स्वप्न का फल नष्ट हो जावे । विस्तार से आता । सत्य भी हो सकता है, असत्य भी ।

५. अव्यक्त स्वप्न – अस्पष्ट, याद नहीं आवे, या जिसका कोई फल नहीं होता या बता नहीं सकते ।

स्वप्न आने पर धीर गंभीर अच्छे व्यक्ति को कहना चाहिये अच्छा स्वप्न आने के बाद सोना नहीं चाहिए । बुरा स्वप्न आने पर सो जाना चाहिए । ऐसी जनश्रुति है । पर पूज्य गुरुभगवंतों से सुना कि स्वप्न कैसा भी हो ? पर नींद से उठकर नवकार गिनना ४ लोगस्स गिनना, आज का दिन शुभ हो, मनोरथ आदि का चिंतन करना । स्वप्न शुभ हो तो शीघ्र फल देगा । अशुद्ध हो तो फल नष्ट हो जायेगा । अधिक सोना तो प्रमाद है आलस है ।

स्वप्न हमेशा अर्द्धनिद्रित अवस्था में आते हैं । गहन निन्द्रा में नहीं आते । जागृत अवस्था में नहीं आते ।

सामान्यत: असंख्य स्वप्न जीवन में आ सकते हैं । उनका ७२ प्रकार के स्वप्न भेदों में वर्गीकरण है । उसमें ३० महाफल देने वाले । ४२ सामान्य फल देने वाले । ३० महाफलों में तीर्थंकर की माता १४ स्वप्न चक्रवर्ती की माता १४ स्वप्न, वासुदेव की ७, बलदेव की ४, माँडलिक राजा की एक स्वप्न देखकर जागृत हो जाती हैं ।

तीर्थंकर की माता स्पष्ट स्वप्न देखती हैं जबकि चक्रवर्ती की माता धुंधले स्वप्न देखती है ।

यदि तीर्थंकर देवलोक से आये तो विमान दिखायी देता है, नरक से आये तो भवन दिखाई देता है । इस वर्तमान चौवीसी के सारे तीर्थंकर देवलोक से आये ।

भगवान महावीर स्वामी को अपने साधनाकाल में दो घड़ी की खड़े खड़े नींद

आयी जिसमें १० स्वप्न देखे थे । हस्तिपाल राजा ने सोलह स्वप्न देखे थे ।

हमारे मन, हृदय, पेट, तीनों को सदैव कुछ न कुछ चाहिये मन को विचार, हृदय को श्वास, पेट को आहार । यही कारण है कि सोते हुए भी विचारों के कारण स्वप्न आते हैं ।

प्रथम प्रहर में आये स्वप्न का फल १ वर्ष में द्वितीय प्रहर में आये तो छह माह में । तृतीय प्रहर में आये स्वप्न का फल ३ मास में, चतुर्थ प्रहर में आये स्वप्न का फल एक मास में प्राप्त होता है । ऐसा ज्योतिषियों का कथन है ।

जो स्थिर चित्रवाला, जितेन्द्रिय, शांतमुद्रा, प्रमाणिक, सत्यवादी, दयालु, श्रद्धालु होता है । उसे जो स्वप्न आता है वह निरर्थक नहीं जाता ।

पूज्य आचार्यश्री नंदलालजी म.सा. को स्वप्न आया 'मकान बदलना है' वह उन्होंने साथी संतों को सुनाया । उसका फल निकाला गया कि आपको देह बदलने का अवसर आ गया । तुरंत संथारा कर लिया और कुछ समय में ही आयुष्य पूर्ण हो गया ।

ग्रंथों में स्वप्न आने के और भी कारण बताये हैं – यथा

(१) जानी बात से, (२) देखी बात से (३) सुनी बात से (४) वात पित कफ वृद्धि से (५) मलमूत्र रोकने से (६) चिंता करने से (७) देव के अनुष्ठान से (८) अधिक पुण्य योग से या अधिक धर्मध्यान से (९) अधिक पाप के उदय से ।

सामान्यत: सोते हुए कई स्वप्न देखता है । पर अधिकांश स्वप्न याद नहीं आते हैं । स्वप्न याद रहे उसका फल शीघ्र मिले इसके लिए आवश्यक है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में शयन न करें । फिर जब भी सोयेंगे । ५–६ घंटे की गहरी निद्रा आवे । फिर चौथे प्रहर में नींद के चंचल होने पर स्वप्न आवे । वह याद रहेगा । फल भी सुंदर मिल सकता है ।

देवकी रानी ने गर्भकाल पूर्ण होने पर पुत्र को जन्म दिया । गजतालु के समान कोमल होने के कारण उसका नाम गजसुकुमाल रखा ।

नाम रखने की कला

पहले के लोग नाम ऐसा रखते थे जिसका कोई अर्थ हो । या गुण युक्त हो या

प्रेरणादायक हो । दशरथ की तीन पत्नियाँ कौशल्या, कैकई, सुमित्रा । राम को कौशल्यानंदन कहा जाता है, इससे पता चलता है कि वह किसका पुत्र है ।

प्रश्न पूछा जाता है कि पड़ा पड़ा सबका पड़ा कोई रहा न बाकी उसका उत्तर है ''नाम'' दुनिया में बिना नाम की कोई वस्तु नहीं है सभी का कुछ न कुछ नाम रखा जाता है ।

नाम में बहुत कुछ अर्थ निकलता है जैसे अंतिम पुत्री को धापूबाई वर्तमान में तृप्ति, पुत्र हो तो अंतिम रखा जाता है । राजवंशों में दादा का नाम पोतों का नाम एक जैसा रख देते थे, उनके आगे द्वितीय प्रथम आदि लगा देते थे – होल्कर द्वितीय, होल्कर प्रथम ।

बुरे किरदार निभाने वाले या बुरा कार्य करने वालों के नाम कोई नहीं रखता, जैसे रावण, कुंभकरण, दुर्योधन, अमरीशपुरी, प्राण ।

दो जवांई एक नाम के हों तो चल जाता है पर दो देरानी जेठानी एक नाम की हो तो न ही चले । कोई कोई माँ के नाम से प्रसिद्ध हो गये जैसे मृगापुत्र, थावच्चा पुत्र । किसी किसी के बच्चे जिंदा नहीं रहे तो टोटका किया जाता है नाम से – उनके नाम खराब रखे जाते हैं – फटीचर, झापड़ी, दगडू, कचरदास आदि । कोई कोई नाम के बजाय गाँव से प्रसिद्ध हो जाते हैं जैसे इंदौर वाले भाभी सा., जीवन भर सभी यही बोलते हैं । किसी को पूछें कि इंदौर वाले भाभी सा. का नाम क्या ? तो अधिकांश नहीं बता पायेंगे । मरने के बाद शोक पत्रिका से पता चलता है क्या नाम था ?

यहाँ पर गुणानुसार नाम रखा 'गजसुकुमाल' मेघकुमार के समान उसका जन्मोतसव मनाया गया । जैसे –

१. पुत्र रत्न होने की सूचना देने वाले दास का दासत्व दूर किया
२. नगर को सुगंधित किया ।
३. कैदियों को बंधन मुक्त किया ।
४. दस दिन राज्य को करमुक्त किया ।
५. गरीब अनाथों को दान दिया ।

६. राज्य में महोत्सव मनाया गया । बारहवें दिन नामकरण किया ।

उस काल उस समय में सोमिल ब्राह्मण, सोमश्री ब्राह्मणी, द्वारिका में रहती थी । उसकी सोमा नाम की कन्या थी । सोमिल ब्राह्मण ४ वेद, ऋगवेद, यजुर्वेद, आथर्ववेद, सामवेद का ज्ञाता था । किसी समय सोमा कन्या स्वर्ण गेंद से खेल रही थी ।

ठीक उसी समय कृष्ण वासुदेव भगवान अरिष्ट नेमि के दर्शनार्थ जाते हुए उस कन्या को देखा । उसे अपने लघु भ्राता गजसुकुमाल के योग्य जाना । अनुचरों को भेज उस कन्या की याचना की गई और सोमिल ब्राह्मण की आज्ञा मिलने पर उसे कृष्ण महाराज ने अंतपुर में पालन पोषण हेतु भेज दी । समय पाकर वह गजसुकुमाल की भार्या (पत्नी) होगी ।

यहां से स्पष्ट होता है कि जिस दिन से कन्या का अपना माना उसी दिनसे उसका पालन पोषण करना वर पक्ष का दायित्व होता था । यह उस समय की परंपरा थी । आज उसका छोटा रूप रह गया है । सगाई से लेकर शादी तक जो भी त्यौहार आते हैं दोनों पक्ष एक दूसरे के यहां कुछ खाद्य सामग्री लेकर जाते हैं ।

भगवान के पास पहुंचकर कृष्णवासुदेव ने धर्मकथा सुनी और लौट गये । पर गजसुकुमाल भगवान से बोले मुझे आपका धर्म अच्छा लगा । मैं आपके पास श्रमण धर्म ग्रहण करूंगा ।

वह ज्ञाताधर्मकथा में वर्णित मेघकुमार के समान अपने घर जाकर माता-पिता के सामने दीक्षा लेने के विचार प्रकट किये । माता-पिता ने कहा – तुम प्रिय हो । तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकेंगे । अभी तुम्हारा विवाह नहीं हुआ है । इसलिए विवाह कर कुल की वृद्धि करो । फिर संतान को दायित्व सौंपकर दीक्षा ग्रहण करना ।

कृष्ण वासुदेव वैराग्य ही बात सुनकर पास आये । गोद में बिठाया बड़े प्यार से कहा – तुम दीक्षा धारण मत करो । मैं तुम्हें समारोहपूर्वक राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूंगा । तब गजसुकुमाल मौन रहे । दो-तीन बार कहने पर गजसुकुमाल ने कहा – 'देह अपवित्र है, मलमूत्र का थैला है । सड़न, गलन, विध्वंसी है आगे पीछे नष्ट होने वाला है । इसलिए मैं आपकी आज्ञा मिलने पर

दीक्षा धारण कर लूं । निराश होकर कृष्ण एवं माता-पिता बोले आपका निर्णय अडिग है तो हम एक दिन की आपकी राज्य श्री देखना चाहते हैं ।

गजसुकुमाल के मौन रहने पर उन्हें एक दिन का राजा बनाया गया । फिर उन्होंने भगवतीसूत्र में वर्णित महाबलकुमार के समान दीक्षा ले ली ।

ब्यूटी पॉर्लर

गजसुकुमाल ने शरीर की नश्वरता को कहा । प्रेरणादायक है । इस शरीर के किसी द्वार से भी अच्छी वस्तु बाहर नहीं आती । यह शरीर अंदर से दुर्गंधमय है पर बाहर से भी यह शरीर दुर्गंधयुक्त है । आपके कपड़े अलमारी में प्रेसयुक्त महीनों से पड़े हैं जैसे ही आप पहनते हो एक दो घंटे में खराब हो जाते हैं । इससे स्पष्ट हो रहा है कि यह शरीर बाहर से भी खराब है । फिर भी व्यक्ति इसे सजाने संवारने में लगा है । जैसे विष्ण से भरे घड़े को कोई सजाता है । उसे आप मूर्ख ही कहेंगे । ऐसे ही यह शरीर को सजाने वाला समझदार नहीं है ।

शरीर को सजाने के लिए आप ब्यूटी पार्लर जाते हो । वहाँ पैसे देकर समय का नाश, धन का नाश और उन रसायनों से शरीर का नुकसान हो जाता है ।

शरीर के पोषण के नाम पर, विटामिन के नाम पर रात्रि को खाना, जमीकंद खाना, त्याग तपस्या की खिल्ली उड़ाना, खूब बेहिसाब किताब खाना पीना सब शरीर को नुकसान दायक होता है । फिर भगवान की आज्ञा नहीं मानने वाले को विटामिन प्राप्त होते हैं पर कौने से ? **A,B,C,D,E,** आप जानते हैं इनका पूर्ण अर्थ-

A यानि अटेक

B यानि ब्लड प्रेशर

C यानि कैंसर

D यानि डायबिटिज़

E यानि **END** समाप्त

(यहाँ समय हो तो और अच्छे से शरीर की क्षणभंगूरता को सुनाया जा सकता है)

गजसुकुमाल दीक्षित हुए उसी दिन चतुर्थप्रहर में भगवान के पास जाकर वन्दन नमस्कार कर उनसे महाकाल श्मशान में जाकर एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा धारण करने की आज्ञा मांगी । भगवान ने आज्ञा प्रदान कर दी ।

भगवान की आज्ञा मिलने पर श्मशान में आकर भूमि की प्रतिलेखना की । प्रतिलेखना करके खड़े होकर दोनों पैरों के मध्य सामान्य अंतर रखकर महाप्रतिमा धारण कर ध्यान मग्न हो जाते हैं ।

यहाँ प्रश्न होता है यह महाप्रतिमा क्या होती है ? कौन धारण कर सकता है ?

श्रावक की ग्यारह प्रतिमा होती हैं और भिक्षु की १२ प्रतिमा होती हैं । इसे धारण करने वाले की निम्न योग्यता होनी चाहिए । ठाणांग सूत्र ८ के अनुसार

(१) उम्र ९ वर्ष (२) संयम पर्याय २० वर्ष अर्थात् आयु २९ वर्ष (३) नव में पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का ज्ञान । (४) विशिष्ट महाशक्ति धैर्य वीर्यादि से सम्पन्न हो ।

प्रतिमाधारी को यह नियम भी पालने होते हैं । जो दशाश्रुत स्कंध की सातवी दशा में बताये गये हैं ।

१. ६ प्रकार से भिक्षा लेना
२. परिचित स्थान पर एक रात्रि, अपरिचित स्थान पर दो रत्रि ठहरते हैं ।
३. पांव में काटा, आंख में धूल कण, अपने हाथ से नहीं निकालते ।
४. चार कारण से बोलते हैं ।
५. तीन जगह निवास करते हैं ।
६. तीन शय्या लेते हैं ।
७. देव मनुष्य तिर्यंच गति संबंधी उपसर्ग सहन करते हैं ।
८. सूर्यास्त के बाद एक कदम भी आगे नहीं चलते ।
९. हाथी घोड़ा शेर आदि आने पर मार्ग नहीं बदलते ।
१०.हाथ पाँव दाँत आदि नहीं धोते ।
११.गोचरी दिन में एक बार ही करते हैं ।

१२.भिक्षु प्रतिमा को धारण कर पूर्ण करने में सात माह अठावीस दिन लगते हैं । एक-एक माह की प्रथम सात प्रतिमा होती हैं । शेष ५ प्रतिमा में २८ दिन लगते हैं । जिसमें एकांतर, उपवास, बेला, तेला आदि तप किया जाता है ।

यहां प्रश्न है कि गजसुकुमाल में उपरोक्त योग्यताएँ नहीं भी फिर कैसे उन्होंने प्रतिमा की आराधना की ?

भगवान के द्वारा बतायी गयी परिपाटीयाँ आगम व्यवहारी एवं केवलज्ञानियों एवं स्वयं भगवान पर लागू नहीं होती हैं । वह साधक के ज्ञान, मानसिक, शारीरिक बल देखकर अनुक्रम से निर्णय करके कहते हैं । भगवान जानते थे गजसुकुमाल का आयुष्य कम कर्म ज्यादा है । इसे सहायक का मिलना जरूरी है। भवितव्यता ही ऐसी है ।

जब गजसुकुमाल ध्यान में खड़े थे । उसी समय सोमिल ब्राह्मण समिधा (यज्ञ की लकड़ी) आदि के लिए श्मशान भूमि से कुछ देर पूर्व ही गुजरा था । वह लौटते समय गजसुकुमाल को देखता है । पूर्व भव का वैर जागृत हुआ और कहने लगा कि यह तो गजसुकुमाल है, जिसने मेरी निर्दोष सोमा कन्या को छोड़ असमय में दीक्षा ग्रहण कर ली । इसे मुझे शिक्षा देनी चाहिए । चारों तरफ देखकर तय कि मुझे कोई नहीं देख रहा है । तालाब की मिट्टी लाकर गजसुकुमाल के सिर पर चारों ओर पाल बाँधी । और केसू के समान लाल अंगारे कत्थे (खेर) की लकड़ी के मुनि के सिर पर रखने के बाद भयभीत होकर वहां से भाग निकला ।

गजसुकुमाल को महाभयंकर वेदना हुई पर सोमिल ब्राह्मण पर थोड़ा सा भी द्वेष नहीं रखते हुए समभाव से सहन करने लगे । शुभअध्यवसायों के फलस्वरूप कर्म विनाशक अपूर्वकरण में प्रविष्ट हुए और उन्हें केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति हुई । अनंतर आयुष्य पूर्ण कर मुक्त हो गये ।

यहाँ प्रश्न होता है कि गजसुकुमाल ने पूर्व भव में ऐसा क्या किया कि उनके सिर पर अंगारे रखे गये ।

गजसुकुमाल का जीव ९९ लाख ९९ हजार ९९९ भव पहले महिला के रूप में था । उस महिला की एक सौतन थी । सौतन के पुत्र होने से उन्हें पति का अति प्रेम प्राप्त था । जिससे महिला को सौतन से द्वेष हो गया । वह सोचती रहती किसी

तरह से इसका पुत्र मर जावे तो पति का प्रेम मुझे भी प्राप्त हो जावे ।

योग से पुत्र को सिर मैं गुमड़ी हो गई । सौतन ने कहा मैं इसका उपचार जानती हूँ अभी ठीक कर देती हूँ । इस पर महिला ने अपने पुत्र को सौतन को दिया । उसने गरमागरम रोटी बनाकर सिर पर रख दी वह पीड़ा से छटपटाने लगा और मर गया । कालान्तर में बच्चे का जीव 'सोमिल' और सौतन का जीवन 'गजसुकुमाल' बना । उसने बदला ले लिया ।

गजसुकुमाल के जीवन से प्रेरणा मिलती है कि उन्होंने सिर पर अंगारों को सहन किया । हम भी किसी की कड़वी बात को सहन करें ।

उस काल उस समय में कृष्ण वासुदेव भगवान अरिष्टनेमि के दर्शनार्थ पधारे । रास्ते में एक वृद्ध ईंटे अपने घर में रख रहा था । कृष्ण वासुदेव ने एक ईंट उठायी और वृद्ध के घर में रखी । उनका अनुसरण जनता ने किया । कुछ समय में सारी ईंटें अंदर पहुंच गईं ।

कृष्ण महाराज भगवान के दर्शन करके संतुष्ट हुए । चारों ओर नजर ढूंढ रही है कल के दीक्षित स्वयं के भाई मुनि नहीं दिखे । तो भगवान से पूछा भगवन् में उन्हें वन्दन नमस्कार करना चाहता हूँ । भगवान ने कहा जिस उद्देश्य से दीक्षा ली वह उद्देश्य पूरा हो गया । कृष्ण को आश्चर्य हुआ ऐसा कैसे हुआ ?

भगवान ने पूर्व का सारा वृतांत बताया । पर भगवान ने नाम नहीं बताया । तब कृष्ण ने कहा भगवन् मैं उसको कैसे पहचानुंगा । भगवान ने कहा कि आप जब नगर में प्रवेश करेंगे उस समय आपको देखते ही जो पुरुष मृत्यु को प्राप्त हो जावे । वही है आपके भ्राता के सहयोगी । भगवन् वह मेरे भ्राता का सहयोगी कैसे हुआ ? भगवन् ने कहा – हे कृष्ण तुम उस पर द्वेष मत करो जैसे रास्ते में वृद्ध का कार्य आपके ईंट उठाने से जल्दी हो गया । वैसे ही उस पुरुष ने शीघ्र कर्म निर्जरा में सहयोग किया ।

कृष्ण वासुदेव को शोक हो गया । विचार किया भाई की मृत्यु हो चुकी है और इस समय मुझे प्रमुख द्वार से न जाकर अन्य गली से लौट रहे थे ।

उधर सौमिल भगवान के केवलज्ञान को जानता था । उसने विचार कि भगवान कृष्ण वासुदेव को बता ही देंगे कि मैंने उसके भाई को मारा । वो सुबह

दर्शन करने जायेंगे ही । लौटकर कृष्ण किस मौत मारेंगे ? इससे अच्छा कृष्ण के आने के पूर्व मैं नगर छोड़ दूँ । कृष्ण वासुदेव राजमार्ग से लौटेंगे । मैं गली मार्ग से जाऊँ ।

इधर दोनों आमने-सामने हुए । कृष्ण को देखते ही वह स्तंभित हो गया । खड़े खड़े आयुष्य पूर्ण कर गया और नीचे गिर गया । कृष्ण वासुदेव कहने लगे – अहो ! यह सौमिल ब्राह्मण है, जिसने मेरे भाई को मार डाला । उसके शव को चंडालों से घसीटवाकर नगर के बाहर फिकवा दिया और उसके शव से स्पर्शित भूमि को पानी से धुलवाया । यहां आश्चर्य करने योग्य बात यह है कि सौमिल को भी भगवान के ज्ञान पर श्रद्धा थी

आठवां अध्याय समाप्त

नवमा अध्ययन में सुमुख का वर्णन है । सुमुख के पिता का नाम बलदेव माता का नाम धारिणी था । ५० कन्याओं के साथ सगाई हुई । चौदह पूर्व का ज्ञान किया । २० वर्ष साधुपना पाला । शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध हुए ।

नवमा अध्याय समाप्त

दसवां व ग्यारहवां अध्ययन दुर्मुख, कूपदारूक का है । इनका समस्त वर्णन सुमुख के समान जानना । ग्यारहवां, बारहवां 'दारूक' अनादृष्टि का है । सभी वर्णन सुमुख समान अंतर पिता वसुदेव माता धारिणी थी

।। तीसरा वर्ग समाप्त ।।

चतुर्थ वर्ग

चौथे वर्ग के १० अध्ययन हैं । प्रथम जालिकुमार का, कृष्ण वासुदेव की द्वारिका नगरी में, पिता वसुदेव माता धारिणी ने सिंह का स्वप्न देखा । पुत्र का नाम 'जालि' रखा । पचास कन्याओं के साथ विवाह हुआ । १६ वर्ष संयमपर्याय । १२ अंग का अध्ययन । शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध ।

ठीक इसी प्रकार मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वारिसेन का वर्णन समझना।

छठा प्रद्युम्नकुमार का अध्याय है । पिता श्रीकृष्ण माता रुक्मिणी थी । ऐसे सातवे 'शांबकुमार' का अध्याय है । भिन्नता है पिताश्रीकृष्ण, माता जांबवती

थी।

आठवे अध्ययन में 'अनिरुद्ध कुमार' इनके पिता प्रद्युम्न कुमार माता 'वेदर्भी' थी।

नवमां सत्यनेमि का, दसवां दृढ़नेमि का समझना इनके पिता समुद्रविजय माता शिवादेवी थी।

चौथा वर्ग समाप्त

पांचवा वर्ग

पाँचवे वर्ग में १० अध्ययन कहे हैं। द्वारिका नगरी में भगवान अरिष्टनेमि पधारे। कृष्ण महाराज वंदन नमस्कार करने के लिए भगवान के पास पहुँचे। दर्शन करते उन्होंने अभिगमों का पालन किया अर्थात् भगवान के पास जाते या संतसति के पास जाते समय जिन नियमों को पालन किया जाता है उन्हें अभिगम कहा जाता है। अभिगम पांच हैं –

१. सचित्त का त्याग – जीव सहित वस्तुएं, सजीव वस्तुएं, संत सति के दर्शनार्थ नहीं ले जाना जैसे मोबाइल, कच्ची सब्जी, कच्चा पानी आदि।

२. अचित का विवेक – निर्जीव वस्तुओं को ले जाने का विवेक – जो आवश्यक हो वो ले जा सकते हैं। जैसे मुँहपत्ति, रुमाल, पहने हुए कपड़े, नंबर का चश्मा, आदि पर छतरी, आभूषण, वस्त्र जो दिखावा प्रस्तुत करते हैं) गागल आदि।

३. अंजलीकरण – अर्थात् संत सति के देखते ही हाथ जोड़कर वंदन करना।

४. उत्तरासंग – संत सति से खुले मुंह चर्चा नहीं करना।

५. मन की एकाग्रता – जो भी सुनावे संत सति ध्यान पूर्वक सुनना।

स्वयं कृष्ण महाराज राज्योचित समस्त छत्र मुकुट आदि को बाहर निकालकर भगवान के दर्शनार्थ पधारे।

कृष्ण स्वयं भगवान के दर्शन करने जाते हैं। ३ खंड के अधिपति। दर्शन से क्या होता ? भगवान ने भगवती सूत्र में शतक २ उद्देश्क ५ में फरमाया है कि संत

पंचम वर्ग की शिक्षायें

* शराब पीना हानिकारक है।
* मन मर्जी से साधना करना हानिप्रद द्वीपायन ऋषि के समान
* क्रोध साधना को खा जाता है।
* संयम नही ले पाने का खेद व्यक्त करना जैसा श्री कृष्ण ने किया। हम उल्टा करते है संयम एवं संयमियों को गलत ठहराते है।
* करणी का फल नही मॉगना - कृष्ण वासुदेव बने। मरकर नरक गये। द्वीपायन ऋषि को द्वारिका नाश करना पड़ा
* द्वारिका का नाश हुआ। ऐसे ही हमारे मकान घर का होगा ही। ऐसा सोचकर राग नही रखे।
* 3 खंड के राजा को भी जंगल जाना पड़ा। तो हमारे पास घमंड करने जैसा क्या है?
* दुख के बाद सुख आता है। जैसे नरक से निकलकर कृष्ण तीर्थंकर बनेंगे।
* निराशा मे भी सावधान रहना। जैसे कृष्ण ने नरक जाने का सुनकर निराश नही हुये बल्कि उन्होने दलाली कर तीर्थकर गोत्र का उपार्जन किया।
* अच्छे कार्य की शुरुवात अपने घर से करे। जैसे कृष्ण ने सर्वप्रथम अपनी रानी को दीक्षा प्रदान की। आप दीक्षा को अच्छा समझते हो। किसी की करवाना हो तो म. सा. को विनंती करते हो। पर आपका बालक दीक्षा के लिए तैयार हो जावे तो आप ऊँचे नीचे हो जाते हो।
* दीक्षा लेने मे "लोच का सोच" आता है। पद्मावती अत्यन्त सुकोमल पटरानी थी। उन्होंने अपने हाथों से लोच कर लिया। आप लोच के लिए कायर न बने।
* गुरु एक शिष्य अनेक होते है। गुरु सभी को अध्ययन नहीं करवा सकते। इसलिए शास्त्र में स्थविर भगवंतो ने अध्ययन करवाया। आपको गुरुदेव समय न दे पावे तो रूष्ट नही होना वरन् एकलव्य के समान स्वयं ज्ञान पाने का प्रयास करना। अविनय, अवहेलना नहीं करना।
* जवानी में संयम धारण करना बुढ़ापे का रास्ता नही देखना। शांबकुमार, मूलश्री, मूलदत्ता जालि उवालि आदि के समान
* बुढ़ापा हो तो भी कायर न बनना काली आदि के समान
* दीक्षार्थी को अंतराय नही सहयोग देना। जैसा श्री कृष्ण वासुदेव ने किया।

सति की पर्युपासना से दस लाभ होते हैं ।

१. सुनने को मिलेगा, २. ज्ञान होगा, ३. ज्ञान से विज्ञान होगा, ४. पच्चक्खाण, ५. दीक्षा, ६. आश्रव द्वार रूक जायेंगे, ७. तपस्या, ८. अष्टकर्म क्षय, ९. क्रिया रहित, १०. मोक्ष ।

भगवान का आगमन जानकर पटरानी पद्मावती दर्शनार्थ गयी । भगवान की वाणी को सुनकर वापस अपने घर लौट आई ।

कृष्ण ने प्रश्न पूछा कि इस द्वारिका का विनाश किस कारण से होगा ?

भगवान ने कहा मदिरा, अग्नि, द्वेपायन ऋषि के कोप के कारण इसका नाश होगा ।

इतनी बड़ी द्वारिका नगरी जो कुबेर द्वारा निर्मित थी । नाश हो गई । अर्थात् दुनिया में पुद्गलों का परिणमन होते रहने से वह सड़न–गलन विध्वंस गुणों के कारण विनाश को प्राप्त होती है ।

एक व्यक्ति ने बड़ा बंगला बनाया । उद्घाटन किया, महात्मा को भी बुलाया। महात्माजी से पूछा कि कैसा लगा हमारा बंगला । महात्माजी ने कहा बंगला तो बढ़िया है पर दो कमी हैं । प्रथम यह कभी विनाश को प्राप्त हो जायेगा दूसरा इसको बनाने वाला मर जावेगा ।

इस प्रसंग से अपने को शिक्षा प्राप्त हो रही हैं इन नश्वर को छोड़कर ईश्वर की आराधना करनी चाहिये ।

भगवान से द्वारिका का विनाश जानकर कृष्ण को विचार उत्पन्न हुआ । धन्य है जालि आदिकुमार जो संयम की आराधना कर रहे हैं । मैं पुण्यहीन हूँ जो जालि आदिकुमार के समान अंतपुर छोड़कर दीक्षित नहीं हो सकता ।

उनके आर्तध्यान को जानकर भगवान ने कहा – हे कृष्ण ! ऐसा चिंतन करके आर्तध्यान मत करो । वासुदेव निदानकृत होने के कारण दीक्षित नहीं हो सकते ।

श्रीकृष्ण का आगामी जन्म

भगवान से श्रीकृष्ण ने पूछा मैं यहाँ से काल करके कहाँ उत्पन्न होऊँगा .

तब भगवान ने कहा – तुम नगरी एवं परिवार का विनाश होने के बाद राम बलदेव के साथ दक्षिणी समुद्र तट पर पाण्डुराजा के पुत्र युधिष्ठिर प्रमुख पाँचों पाण्डवों के समीप पांडु मथुरा जाओगे । रास्ते में कोशाम्ब उद्यान में विश्राम लेने के लिए वटवृक्ष के नीचे पीताम्बर ओढ़कर सोओगे उस समय जराकुमार द्वारा बाण चलाया जायेगा जो तुम्हारे बायें पैर में लगेगा । काल करके बालुकाप्रभा नाम की तीसरी पृथ्वी में जाओगे ।

इस वर्णन में कई प्रश्नों का उत्पन्न होना सहज है –

१. मदिरा अग्नि द्वीपायन ऋषि के कोप से कैसे विनाश हुआ ?

२. निदान क्या होता है ?

३. पांडु मथुरा कैसे बसी ?

४. जराकुमार कौन था ?

५. बालुका प्रभा नामक तीसरी पृथ्वी क्या होती है ?

६. द्वारिका विनाश होगी ? ऐसा प्रश्न कृष्ण ने क्यों किये ?

मदिरा को विनाश का कारण जानकर कृष्ण महाराज ने मदिरा को नगर के बाहर फिकवा दिया और नगर में मदिरा का निषेध कर दिया ।

कुछ कुमार यादव उधर घूमने लगे । प्यास लगी । शराब का सेवन कर लिया। वहां एक द्वीपायन ऋषि ध्यान कर रहे थे । नशे में वे यादव कुमार उन पर घोड़े कुदाने लगे । वहां मरा हुए एक नाग (सांप) था वह उनके गले में डाल दिया। उन्होंने द्वारिका नाश का निदान कर लिया ।

मालूम पड़ने पर कृष्ण बलदेव ने उन्हें निदान त्यागने की प्रार्थना की । ऋषि ने कहा तुम दोनों बच जाओगे ।

द्वीपायन ऋषि मरकर अग्निकुमार देव बना । तप के प्रभाव से वह द्वारिका को जला न सका । कृष्ण ने विनाश जानकर आयंबिल तप निरंतर चालू करवा दिये थे। १२ वर्ष तक तप आराधना मंद गई हो गई । तप का प्रभाव नहीं होने पर

अग्निकुमार देव ने अपना प्रभाव दिखाया । द्वारिका ६ मास तक जलती रही ।

* जराकुमार कृष्ण के भाई थे । जब उन्होंने भगवान से सुना कि मैं मेरे भाई की मृत्यु करने वाला मैं होऊँगा वह राज्य का त्याग कर वनवासी हो गया । शिकार करके अपना जीवन यापन करने लगा ।

* पाँडु मथुरा – जब द्रौपदी का हरण हुआ तब धातकी खंड में पद्मनाभ राजा के पास द्रौपदी के होने का पता चला । कृष्ण पाण्डव उसे छुड़ाने गये । लौटते समय पांडवों के नाव छुपा देने पर कृष्ण क्रुद्ध हुए और उन्होंने पाण्डवों को देश निर्वासन की आज्ञा दी । तब कुंती ने कहा कि ३ खंड पर पूरा ही आपका शासन है तो हम कहाँ जावें ? तब कृष्ण ने समुद्र के दक्षिणी तट पर बसने की आज्ञा दी । वहां पाण्डवों ने 'पाण्डु मथुरा' बसायी ।

* चौदह राजू लोक में तीन भाग हैं – नीचा लोक, मध्यम लोक, ऊँचा लोक । उसमें नीचे लोक में सात पृथ्वी पिंड हैं, जिन्हें नरक कहा जाता है । जहाँ जीव अपनी पापकरणी का फल पाता है । तीसरी नरक का जीव वहां से निकलकर अगले भव में तीर्थंकर बन सकता है । आगे की नरकों से निकला जीव तीर्थंकर नहीं बन सकता ।

* जब अपने सगे भाई को अपने ही शासन में मार डाला गया तब कृष्ण को चिंता हुई कि मेरी पुण्यवानी में कमी हो रही है ।अब मुझे अपनी पुण्यवानी बढ़ाना होगी । एवं यह भी पता करना होगा कि मैं कैसे मरूंगा ? द्वारिका का विनाश कब होगा ?

* निदान यानि अपनी संयम तप की करणी का फल मांगना । निदान कल्याण में बाधक है । निदान करने वाला मिथ्यात्व को प्राप्त हो जाता है । निदान वाला यथाख्यात चारित्र को प्राप्त नहीं होता ।

दशाश्रुतस्कंध में निदान करने में नौ रूप बतलाये हैं । अगले जन्म में साधु बनने का निदान करने का भी भगवान ने मना किया है । इसका कितना व्यापक उद्देश्य है कि हमारी करनी सिर्फ मोक्ष के लिए ही हो ।

तो यहाँ भगवान फरमा रहे हैं कि तुम निदान करने के कारण संयम नहीं ले

सकते एवं मरकर तीसरी नरक में जाओगे ।

नरक में जाने की बात सुनकर कृष्ण खिन्न हो गये तब भगवान ने कहा तुम खिन्न मत बनो ! आप वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में उत्सर्पिणीकाल में पुण्ड्रपद जनपद के शतद्वार नगर में अमम नाम के बारहवें तीर्थंकर बनोगे ।

भगवान से अपना उज्ज्वल भविष्य जानकर प्रसन्न हुए । अपने हस्तिरत्न पर आरूढ़ होकर राजप्रसाद में आये और सेवकों को आदेश दिया कि जो भी दीक्षा लेना चाहे उन्हें सूचित करो, उनका जो परिवार है उसकी पालना, संरक्षण, कृष्ण वासुदेव करेंगे ।

यहां चिंतन की बात है कि व्यक्ति को कष्ट आने पर भी घबराना नहीं चाहिये। पता चल गया नरक ही जाना है । फिर भी कृष्ण अपने धन को निर्जरा और पुण्य के खाते में लगा रहे हैं । कृष्ण सच्चे दलाल बन गये । कइयों ने घोषणा को सुनकर भगवान के पास संयम ग्रहण किया । उसमें अपने घर से ही पटरानी पद्मावती ने संयम ग्रहण कर लिया ।

पद्मावती को शिष्या के रूप में भेंट करते समय कृष्ण कहते हैं । यह मुझे श्वासोच्छवास के समान प्रिय है । ऐसा स्त्रीरत्न उदुम्बर के पुष्प के समान देखने को दुर्लभ है । सुना है कि उदुम्बर के पुष्प को देखने के लिए देवताओं की भी लाइन लगती है ।

पद्मावती रानी ने पंचमुष्टि लोच किया । अर्थात् उस समय कुछ केश लुंचन नाई भी करते थे एवं कुछ स्वयं भी करते थे । लगभग सभी पंचमुष्टि लोच करते हैं पर भगवान ऋषभदेव ने चार मुष्टि लोच कर लिया । उसके बाद पांचवी मुष्टि कर रहे थे तभी इन्द्र के मना करने पर उन्होंने एक मुष्टि लोच छोड़ दिया ओर तभी से कई लोग मुंडन के समय चोटी रख लेते हैं पर संत नहीं रखते हैं ।

पद्मावती रानी की गुरुणी आर्या यक्षिणी बनी । पद्मावती रानी ने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । कई उपवास, बेले, तेले आदि तप किये । २० वर्ष संयम पालकर एक मास के संथारेपूर्वक उपाश्रय से ही मुक्त हो गई ।

प्रथम अध्ययन समाप्त

दूसरे अध्ययन से ८वें अध्ययन तक गांधारी लक्ष्मणा सुसीमा जाम्बवती सत्यभामा रुक्मिणी के भी छ: अध्ययन पद्मावती के समान समझने चाहिए ।

नवमें दसवें अध्ययन में कृष्ण की बहुऐं मूलश्री मूलदत्ता का वर्णन है जो जाम्बवतीदेवी के पुत्र शांबकुमार की पत्नियाँ थी सभी वर्णन पूर्व अनुसार समझना विशेषता यह है कि जांबकुमार जांबवती दोनों पूर्व मे दीक्षित हो गई थी । इसलिए ससुर श्रीकृष्ण से आज्ञा से सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

पंचम वर्ग समाप्त

कृष्ण ने कब निदान किया

(उनके पूर्व भव की कथा)

हस्तिनापुर नगर में एक सेठ था । उसके ललित नाम का एक पुत्र था । वह अपनी माता को अत्यंत प्रिय था । ललित की माता पुन: गर्भवती हुई । वह गर्भ माता के लिए अत्यन्त संतापकारी हुआ । सेठानी ने उस गर्भ को गिराने के बहुत प्रयत्न किये, किन्तु वह नहीं गिरा । यथासमय पुत्र का जन्म हुआ । सेठानी ने पुत्र को जनशून्य स्थान में डाल देने के लिए दासी को दिया । दासी जब बच्चे को फैंकने के लिए जा रही थी कि उसे सेठ ने देख लिया । सेठ ने अपनी पत्नी का अभिप्राय जानकर दासी से पुत्र ले कर गुप्त रूप से अन्यत्र प्रतिपालन करने लगा । उसका नाम ''गंगदत्त'' रखा । ललित माता से छुप कर गुप्त रूप से अपने छोटे भाई को देखने-खिलाने जाने लगा उसे गंगदत्त से प्रीति थी। बसंतोत्सव के अवसर पर ललित ने पिता से आग्रह कर के गंगदत्त को भी भोजन करने के लिए बुलवाया । माता से छुपाये रखने के लिए गंगदत्त को पर्दे में रखकर भोजन कराने लगे । ललित और पिता, पर्दे के बाहर बैठकर भोजन करने लगे और अपने भोजन में से कुछ भाग पर्दे में रहे हुए गंगदत्त को भी देने लगे । वायुवेग से पर्दा उलटा और गंगदत्त पर उसकी माता की दृष्टि पड़ी । गंगदत्त को देखते ही माता का रोष उमड़ा । उसने गंगदत्त को खूब पीटा । फिर बाल पकड़ कर घसीटती हुई बाहर ले गई और धक्का देकर गिरा दिया । सेठ और ललित गंगदत्त को उठाकर फिर गुप्त स्थान पर लाये । उसे स्नान करवा कर कपड़े बदले और समझा-

बुझाकर स्वस्थान आये ।

कुछ दिन बाद वहाँ विशिष्ट ज्ञानी महात्मा पधारे । सेठ ने पूछा - 'महात्मन् ! ललित और गंगदत्त सगे भाई हैं, फिर भी इनकी माता, ललित पर तो अत्यंत प्रीति रखती है, किन्तु गंगदत्त पर तीव्र घृणा और द्वेष रखती है । गंगदत्त को वह मीठी दृष्टि से देख नहीं सकती । इसका क्या कारण है ?

महात्मा ने कहा - एक गांव में दो भाई रहते थे । बड़ा भाई कोमल स्वभाव का था और छोटा क्रूर । एक बार वे गाड़ी लेकर वन में लकड़ी लेने गए । लकड़ी से गाड़ी भरकर लौट रहे थे। बड़ा भाई आगे आगे चल रहा था और छोटा भाई गाड़ी पर बैठा हुआ बैलों को हंकाल रहा था । आगे चलते हुए बड़े भाई ने मार्ग में एक सर्पिणी पड़ी हुई देखी । वह भाई से बोला - 'मार्ग में साँपिन पड़ी है, इसे बचाकर गाड़ी चलाना।' छोटे भाई ने बड़े भाई की बात सुनकर उपेक्षा की । सर्पिणी, बड़े भाई की बात सुनकर आश्वस्त हो वहीं पड़ी रही । छोटे भाई के क्रूर हृदय में साँपिन पर गाड़ी का पहिया फिरा कर चकचूर होती हुई हड्डियों की आवाज सुनने की आकांक्षी हुई और उसने वैसा ही किया । सांपिन के मन में इस क्रूर मनुष्य पर तीव्र क्रोध आया । वह वैरभाव में मर कर इनकी माता हुई । बड़ा भाई साँपिन को बचाने वाला प्रशस्त जीव, तुम्हारा ज्येष्ठ पुत्र ललित है । यह इसकी माता को अति प्रिय है और छोटा गंगदत्त है । गंगदत्त की क्रूरता ही उसकी माता के द्वेष का कारण बनी । कृत-कर्म का ही वह फल है ।

महात्मा से कर्मफल की दारूणता और आत्मोद्धारक उपदेश सुनकर सेठ और ललित प्रव्रजित हुए और संयम पाल कर महाशुक्र देवलोक में देव हुए । गंगदत्त ने भी दीक्षा ग्रहण की । उसके मन में माता का द्वेष खटक रहा था । उसने विश्ववल्लभ या स्त्री होने का निदान किया और काल करके महाशुक्र में देव हुआ ।

ललित का जीव, देवायु पूर्ण कर वसुदेवजी की रानी रोहिणी की कुक्षि में उत्पन्न हुआ । रानी के उस रात्रि में चार स्वप्न देखे - १. हाथी, २. समुद्र, ३. सिंह और ४. चन्द्रमा । गर्भकाल में पूर्ण होने पर रोहिणी ने पुत्र को जन्म दिया । जन्मोत्सवादि के बाद पुत्र का नाम राम (विख्यात नाम बलदेव) दिया । बलदेव बड़े हुए और सभी कलाओं में पारंगत हो गए । गंगदत्त का जीव कृष्ण बना ।

दलाली का तरीका अनूठा

कृष्ण महाराज ने कैसे दलाली की । इसका एक कथानक और प्राप्त होता है कि उन्होंने अपनी बेटियों से पूछा कि रानी बनना या नौकरानी । जो रानी बनने का कहती उन्हें वे दीक्षा दिलवाते थे । एक केतुमंजरी ने विचार किया कि मैं रानी बनने का कहुँगी तो ये दीक्षा दिलवा देंगे इससे इच्छा है कि मैं नौकरानी बनने का कहूँ ताकि मेरी शादी करवा दें ।

उसकी भावना को जानकर कृष्ण को एक ऐसा गरीब व्यक्ति मिला । जिससे कृष्ण ने पूछा जीवन में कोई बहादुरी का कार्य किया ।

उसने कहा – मैं गरीब व्यक्ति क्या बहादुरी का कार्य करूंगा । एक बार मैंने नाली के बहते पानी को पाँव से रोका था । एक बार मटके में बैठी मक्खियों को मटके के ऊपर हाथ रखकर अंद कर दिया था ।

कृष्ण ने उसे राजसभा में आने का निमंत्रण दिया । राजसभा में कृष्ण ने कहा – ये बहादुर शूरवीर है या नहीं सभासद निर्णय करें । उन्होंने एक बार नदी को पाँव से रोक दिया था । एक बार बार–बार परेशान करने वाली शत्रु सेना को हाथ से बंद कर दिया था ।

सभासदों ने कहा बहादुर है । केतुमंजरी का विवाह उसके साथ कर दिया ।

केतुमंजरी को लेकर पति चला । झोपड़ी में पहले बिचारा, शरमाया, कहाँ राजकुमारी कहाँ मैं । राजकुमारी भी आश्चर्य चकित परेशान, मैं इसके साथ कैसे जीऊँगी ? पति भोजना बनाकर खिलाता, साफ सफाई करता ।

कृष्ण ने पति को बुलाया – कैसी है गृहस्थी ? बोला मैं सब काम करता हूँ ।

कृष्ण ने कहा – सारे काम 'केतुमंजरी' से करवाओ । नहीं माने तो मारो और करवाओ । ऐसा नहीं किया तो तुम्हें सजा दी जावेगी । बेचारा पति डर गया । घर जाकर केतुमंजरी को काम करने कहा – नहीं करने पर पिटाई कर दी । केतुमंजरी वापस पिता कृष्ण के पास आई और कहा मुझे नहीं बनना नौकरानी मुझे रानी बनना है । कृष्ण ने उसे दीक्षा दिला दी ।

इस प्रकार कृष्ण महाराज दीक्षा की दलाली करते थे ।

पंचम वर्ग समाप्त

वर्ग छठा

आज हम भगवान महावीर के समय की उसी भव मोक्षगामी १६ आत्माओं के जीवन को जानेंगे । इस वर्ग में १६ पुरुषों का ही वर्णन है ।

इसमें मुख्य रूप से श्रमणोपासक सुदर्शन एवं बाल मुनि अतिमुक्त का वर्णन प्रभावशाली रूप से प्रेरित करता है ।

श्रावक सामान्यत: ५वें गुणस्थान वाला होता है । श्रमणोपासक कहने से तात्पर्य हुआ जो श्रमणो का उपासक है । या श्रमण भगवान महावीर स्वामी उपासक है ।

यहाँ राजगृहनगर में गुणशीलक उद्यान में भगवान पधारे । वहां महाराज श्रेणिक राज्य करते थे ।

वहां मंकाई नाम का गाथापति रहता था । जो अत्यन्त समृद्ध था । भगवान के उपदेश श्रवणकर बड़े पुत्र को कार्यभार सौंपकर दीक्षित हो गये । ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । सोलह वर्ष दीक्षा पर्याय पाली । विपुलगिरि पर्वत से सिद्ध हुए । इसी प्रकार शेष १५ में से १२ अध्ययन (जिसमें ३रा, १५वां, १६वाँ अध्ययन) छोड़कर सभी का वर्णन समान है । अंतर सिर्फ नगर में है –

२.	राजगृह – किंकम	४.	काश्यप – राजगृह
५.	काकंदी – क्षेमक	६.	काकंदी – धृत्तिधर
७.	काकंदी – कैलाश	८.	साकेत – हरिचंदन
९.	साकेत – वास्त	१०.	वाणिज्य – सुदर्शन
११.	वाणिज्य – पुण्यभद्र	१२.	श्रावस्ति – सुमनभद्र
१३.	श्रावस्ति – सुप्रतिष्ठित	१४.	राजगृह – मेघकुमार

अब शेष वर्णन योग्य अध्ययन ३रा जिसका नाम मुद्‌गरपाणि है । इसमें अर्जुन माली का प्रेरक दृष्टांत है । रसयुक्त कथा के लिए जिज्ञासुओं को आचार्य उमेश गुरुदेव द्वारा कथित 'मोक्खपुरिसत्थो भाग ४' देखना चाहिये । कितनी सुंदर कहानी लिखी है ? पढ़ने पर आप स्वयं अनुभव करेंगे ।

राजगृह नगर में अर्जुन नाम का माली रहता था । उसकी पत्नी बंधूमती थी । उनका बगीचा था (पुष्पाराम) पांचों वर्ण के फूलों से अच्छादित था, दर्शनीय था । वहाँ बगीचे में मुदगरपणि नाम के यक्ष का यक्षायतन था । उसके पूर्वज उसी यक्ष की फूलों से अर्चना करते थे । उस यक्ष की प्रतिमा के हाथ में एक हजार पल, ६२.५ सैर आज के अनुसार ५६ किलो का लोहे का मुदगर था ।

अर्जुन माली भी उस यक्ष का पूर्वजों की परंपरानुसार भक्त था। वह राजमार्ग के किनारे फल बेचता था ।

उस राजगृह नगर में 'ललिता गोष्ठि' थी, जिसे राजा ने किसी कार्य पर प्रसन्न होकर अभयदान दिया । अर्थात् वो जो भी करे सब माफ है । इस कारण वह गोष्ठी उद्दण्ड बन गयी । किसी समय उस नगर में उत्सव मनाने की घोषणा हुई । उसने अनुमान लगाया इस समय अच्छे फूल बिक जायेंगे । इसलिए प्रात:काल वह पत्नी के साथ फुलवाड़ी में पहुँचा ।

उन छ: पुरुषों ने अर्जुन एवं बंधुमति को यक्षायतन की ओर आते देखा । देखकर परस्पर विचार करके निश्चय किया कि अर्जुन माली को बांधकर एक ओर कर दे एवं उसकी पत्नी के साथ कामक्रीड़ा करें ।

ऐसा निश्चय कर वो यक्षायतन के दरवाजों के पीछे छुप गये । जैसे ही अर्जुन आया । उसे बांधकर एक ओर पटक दिया स्वयं बंधुमति के साथ कामक्रीड़ा करने लगे ।

अर्जुन माली के मन में यह विचार आया कि यहां मात्र काष्ट का पुतला है । यदि यहाँ यक्ष होता तो आज मुझे विपत्ति में पड़ा वैसे देखता ? जबकि मैंने बचपन से इसकी पूजा के बाद अपना व्यापार किया ।

अर्जुन माली के मनोगत भाव जानकर यक्ष ने शरीर में प्रवेश किया । बंधन तोड़ डाले । मुद्गर हाथ में लिया छहों मित्रों को मार डाला । साथ में बंधूमति पत्नी को भी । यक्ष आविष्ट वह प्रतिदिन ७ प्राणियों की हत्या कर घूमने लगा ।

ऐसी कषाय का उदय होता है । कभी मोह वश ऐसा हो जाता है–

* संतति के मोह से आर्तभाव जैसे देवकी

* संतति के मोह से रौद्रभाव जैसे सोमिल
* स्त्री मोह से अनर्थ जैसे ललितागोष्ठी
* स्त्री मोह से रौद्रभाव जैसे अर्जुन
* देह मोह जय से – मोक्ष जैसे गजसुकुमाल

अर्जुन माली फूल बेचने वाला आज कठोर हत्यारा बन गया । यह चिंतनीय है कौन बना सहयोगी उसे हत्यारा बनाने में देव दो प्रकार के 'सरागी, वीतरागी' अर्जुन सरागी देव का अनुरागी था । उसने उस अर्जुन को हत्यारा बना दिया ।

प्रकोप बढ़ने लगा । बहुत से लोग परसस्पर बाते कर रहे हैं कि अर्जुन ६ पुरुष एक स्त्री को नियमित मार रहा है । राजा श्रेणिक ने घोषणा करवा दी । कोई नगर के बाहर न जावे जो जावेगा उसका प्राणांत हो सकता है ।

यहाँ अर्जुन माली ने इतनी दया रखी कि नगर में जाकर किसी को नहीं मारता था । जो नगर के बाहर आता था उसी को मारता था ।

उस राजगृही नगर में सुदर्शन नाम के श्रमणोपासक धनाढ्य सेठ थे । जिनकी कोई अवमानना नहीं करते थे । वह जीव अजीव ९ तत्वों का ज्ञाता था । १४ प्रकार का दान सदैव देने के लिए तत्पर रहते थे ।

उस काल उस समय में भगवान महावीर स्वामी राजगृह पधारे । उनके दर्शन, वंदन, वाणी श्रवण एवं उपदेश का आचरण करने का विपुल फल है । उसका कहना ही क्या ?

६ महीने से नगर से बाहर नहीं निकले हैं । भगवान भी लंबे समय से यही विराज रहे हैं । आम जनता वार्तालाप कर रही है ।

(शाहजी को किसी ने कहा – आप तो भगवान के परम भक्त हैं, आप दर्शनों को नहीं जा रहे । शाहजी ने बात आगे ही नहीं बढ़ने दी कहा – राजा की आज्ञा नहीं है)

कहीं दादाजी को पोते ने कहा – भगवान् के दर्शन करने चले – दादाजी ने कहा – दर्शन के स्थान पर दर्शन हैं बाहर यक्ष घूम रहा है, प्राणों पर संकट आ जायेंगे ।

पोता कहता है कोई बात नहीं यह तो अच्छी बात है कि धर्म के लिए प्राण लुट जावें ।

दादा ने कहा – कौन जायेगा मरने के लिए चुपचाप बैठ जा ।

दो मजदूर दर्शन के विषय में चर्चा कर रहे थे एक ने कहा अपन क्या जावें भगवान के बड़े–बड़े भक्त सेठ साहूकार भी नहीं जा रहे हैं । वो जाते तो अपना भी रास्ता खुल जाता ।

एक मजदूर बोला – रास्ते तो इन सेठ साहुकारों के बंद हैं । हमारे तो सदा खुले हैं हम मरे तो भी कल्याण जिये तो भी कल्याण ।

पर ये भी क्या कोई भी भगवान के पास जाने की नहीं सोच रहा, सभी भयभीत हैं ।

कोई साहसी पुरुष भगवान के दर्शनों को जायेगा तो जरूर । भगवान का भी अतिशय है । वे विराजते हैं । वहाँ उपद्रव नहीं होते । देखते है कौन बाजी मारता है। जो भगवान के दर्शनों को सर्वप्रथम जाने का साहस करेगा ।

इधर घर के अंदर भी चर्चा ये चल रही है खासकर बहनों को तो संत सति के प्रवचन आदि के श्रवण का ज्यादा ही रहता है । फिर साक्षात् भगवान आये हैं फिर तो मन की उमंगों का कहना ही क्या ? पर क्या करें ?

बेटे भी माता–पिता से जाने की जिद कर रहे हैं । एक शूरवीर बेटा सुदर्शन माता–पिता से आज्ञा माँगता है । माता–पिता अर्जुन के विषय में कहते हैं । बेटा! तुम भी मारे जाओगे । भगवान तो अन्तर्यामी है । तुम यहीं से वंदन कर लो, भगवान स्वीकार कर लेंगे .

सुदर्शन कहते हैं माता–पिता ! दुविधा यह है कि दर्शन मुझे करना है भगवान को नहीं है इसलिए आप आज्ञा दे भगवान की कृपा से ठीक होगा ।

माता–पिता ने कहा–बेटा शरीर रहा, जीवन रहा तो धर्म तो फिर हो जायेगा।

सुदर्शन ने कहा – तो यह शरीर जिसके लिए मिला उसी के लिए लुट जावे । तो इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा ? उस सुदर्शन को आज्ञा मिल गई वह दर्शनार्थ आस्था श्रद्धा के साथ निकल पड़ा । उमंगों के साथ यहाँ प्रश्न होता है कि आखिर

'दर्शन' से क्या लाभ ? एक भाई आया बोला – म.स. मैंने आपके दर्शन किये और मेरा ब्याव हो गया । एक भाई आया बापजी आप मेरे घर पधारे । मेरी झोपड़ी आलीशान बंगला बन गई । एक बहन आई छोटा बालक फर्श पर सुलाकर दर्शन वंदन किये । मैंने पूछा बहन यह कौन है ? बहन ने कहा म.सा. सब आपके आर्शीवाद का फल है ।

आप को हंसी आ रही है पर हम धार्मिक अनुष्ठानों को इस लोक के फल से जोड़ लेते हैं । आप ही बताएं कि मैथुन का सेवन करना पाप है या पुण्य । हमारे दर्शन किये आपका ब्याव हो गया मतलब आप पापी बने ।

परिग्रह बढ़ाना पाप है या पुण्य – १८ पाप में परिग्रह पाप है तो हमारे आने से आपका बंगला बना यानि आप पापी बने ।

यदि म.सा. के आशीर्वाद से संतान उत्पत्ति हो जावे तो विवाह की क्या आवश्यकता ?

यहां सोचना होगा कि हमारे त्याग, तप, दर्शन का फल क्या होना चाहिये ? आप नियमित १ माला गिनते हो और दो माला गिनने का मन हो जावे तो समझना यह दर्शन आदि का फल है । धार्मिक क्रियाओं से आप पाप से नहीं धर्म से जुड़ते हैं ।

दर्शन करने से हमारे अंदर उत्साह आना चाहिये । हमारे उत्साह से सारे कार्य सम्पन्न होते हैं । संत सति निकलते हैं तो आम व्यक्ति भी देखता है आप भी देखते हो पर आपको देखते ही उत्साह आता है ।

आप रोज दर्शन करने आते हैं पर कोई खास उत्साह नहीं हासिल कर पाते। पर आप इन्दौर कोर्ट के कार्य से जा रहे हैं हम अचानक रास्ते में मिल जावें। आप तुरंत नीचे उतरकर दर्शन करते हो । मांगलिक श्रवण कर आप उत्साह से भर जाते हो । सोचते हो आज तो काम हो जायेगा और काम हो भी जाता है । क्योंकि अचानक दर्शन से आपके अंदर उत्साह का वर्धन हुआ है ।

एक राजा था – सैनिक थे ५००० । पड़ोसी राजा जिसके पास १ लाख सैनिक थे । उसने आक्रमण कर दिया । राजा घबराया हमारे सैनिक कम हैं । मंत्री

ने कहा हमारे नगर के महात्माजी को बुलावें ।

महात्माजी आये, उन्हें कहा – क्या करना ? महात्माजी ५००० सैनिक लेकर युद्ध करने चल दिए । रास्ते में मंदिर आया । महात्माजी ने कहा – मैं यहां सिक्का उछालता हूँ । सीधा गिरा तो हम जीतेंगे । सिक्का सीधा ही गिरा । सभी सैनिकों को महात्मा ने कहा सिक्का सीधा गिरा है । चलो ।

सैनिक उत्साहित हो गये । युद्ध कौशल सुंदर रहा । सामने पड़ोसी राजा के कुछ सैनिक मारे गये कुछ भाग गये । विजयी होकर लौटे रास्ते में वही मंदिर आया । सैनिक बोले भगवान् की कृपा से जीत गये ।

महात्मा ने कहा हम भगवान की कृपा से नहीं जीते । महात्माजी ने जेब से सिक्का निकाला कहा कि यह सिक्का दोनो ओर से सीधा ही है । सैनिक हैरान हो गये सिक्का सीधा गिरा सोचकर सैनिक उत्साह से भरे वही उत्साह उन्हें जीत दिला गया ।

ऐसे ही दर्शन करने से उत्साह आना चाहिए । जैसे अच्छे व्यक्ति के दर्शन से उत्साह आता है वैसे ही हर व्यक्ति को देख उत्साह आना चाहिए । किसी का भी चेहरा मनहूस नहीं होता ।

मनहूस कौन ?

एक व्यक्ति का चेहरा जो देखता उसका काम बिगड़ जाता । राजा को शिकायत की । राजा ने कहा पहले मैं अनुभव करूँ । फिर उसे देश निकाला दे सकते हैं । राजा ने उस व्यक्ति को अपने महल में साथ में सुलाया । सुबह उठकर सबसे पहले उसका ही मुँह देखा और चले गये शिकार पर । दिर भर परेशान रहे न शिकार मिला, न भोजन, न पानी ।

राजा ने उसे मनहूस घोषित कर फांसी की सजा सुना दी । क्योंकि वह किसी भी राज्य में जायेगा तो सभी के काम बिगाड़ेगा । ऐसे व्यक्ति को मारना ही उचित है ।

मनहूस व्यक्ति फांसी के तख्ते पर लाया गया । अंतिम इच्छा पूछी गई । अंतिम इच्छा राजा से मिलना है मुझे । राजा को बुलाया । राजा ने उसने पूछा – मुझे फांसी क्यों ? मेरा क्या अपराध है ? राजा ने कहा – तुम मनहूस हो . तुम्हें देखने वाले के काम बिगड़ जाते हैं ।

मनहूस व्यक्ति बोला – आपने मुझे देखा तो आपको शिकार, आहार नहीं मिला । पर सुबह मैंने भी पहले आपको ही देखा था, मुझे तो फांसी मिली । यानि आपका मुंह भी खराब है । आप भी मनहूस हैं । आपको देखने वाले को फांसी मिल रही है । राजा को समझ में आ गया किसी को देखने से कुछ नहीं होता । जब तक हमारे अंदर भाव नहीं आये उत्साह नहीं आये ।

माँ, बहन, बेटी सभी महिलायें हैं पर देखने में अंतर है । क्योंकि भावों में अंतर है ।

भगवती सूत्र में दर्शन करने से १० लाभ कहे । १. सुनना, २. ज्ञान, ३. विज्ञान, ४. पच्चक्खाण ५. दीक्षा ६. आश्रव बंद, ४. तप ८. निर्जरा ९. क्रिया रहित और १० मोक्ष ।

१. गर्द भाली के दर्शन से संयति राजा मुनि बन गये ।
२. मृगापुत्र भी संत दर्शन से मुनि बन गये ।
३. केशी श्रमण के दर्शन से प्रदेशी राजा तिर गये ।
४. भगु पुरोहित के पुत्र संत दर्शन से संत बन गये ।

भाग्याशाली व्यक्ति को ही संतों के दर्शन होते हैं । किसी के भाव दर्शन के होते हैं किसी के नहीं । इस विषय में चौभंगी बनती है ।

१. किसी को भगवान के दर्शन के भाव होते हैं हो जाते हैं – सुदर्शन
२. किसी को भगवान के दर्शन के भाव होते हैं नहीं होते – पाण्डव
३. किसी को भगवान के दर्शन के भाव नहीं होते हैं, हो जाते हैं – रोहिणेय चोर
४. भगवान के दर्शन के भाव नहीं होते, नहीं होते – श्रेणिक की दादी

यहाँ प्रस्तुत प्रसंग में भी सुदर्शन के दर्शन के भाव हैं । वह माता-पिता की आज्ञा लेकर चल पड़ा । नगर बाहर होते ही अर्जुन माली ने देखा तो उसकी ओर बढ़ा । सुदर्शन ने उपसर्ग को देखते ही सागारी संथारा कर लिया ।

सुदर्शन के ऊपर यक्ष का प्रभाव नहीं चला और वह अर्जुन माली के शरीर

को छोड़ कर चला गया। अर्जुन माली वही भूमि पर गिर पड़ा। उपसर्ग टल गया। जानकर सुदर्शन श्रावक ने संथारा पाला। कुछ समय बाद अर्जुन माली स्वस्थ होकर उठा – पूछा आप कौन हैं और कहाँ जा रहे हो ?

सुदर्शन ने कहा – मैं श्रमणोपासक हूँ और भगवान महावीर के दर्शन करने जा रहा हूँ। अर्जुन माली ने कहा मैं भी भगवान महावीर के दर्शन करना चाहता हूँ। सुदर्शन ने कहा – आपको जैसा सुख हो।

भगवान महावीर स्वामी जहाँ विराजमान थे दोनों वहां आये। भगवान ने धर्मकथा कही। सुदर्शन अपने घर लौट गये। अर्जुन माली वहीं बैठे रहे।

यहाँ जानने लायक बात यह है कि लोग कहते हैं धार्मिक क्रियायें, प्रभु दर्शन स्नान करके करना चाहिए। पर ऐसा नहीं है। यहाँ अर्जुन माली पाँच माह १३ दिन से स्नान नहीं किया हुआ, ११४१ व्यक्तियों के खून से सने हाथ थे फिर भी बिना स्नान किये भगवान के पास चला गया। और भगवान की वाणी सुनकर आज्ञा लेकर प्रव्रजित हो गया। जिस दिन से दीक्षा ली उसी दिन से बेले २ तप किया बेले बेले करते करते पारणे में जब भी जाते लोग उन्हें कटु वचन कहते, लट्ठ आदि मारते, पत्थर आदि मारते। कोई कहता इसने मेरे भाई को मारा, कोई कहता माँ को, कोई कहता बेटी को मारा। इसे मारो।

कभी गोचरी मिलती तो कभी पानी नहीं। कभी पानी मिलता तो गोचरी नहीं। पर किसी को कुछ नहीं कहते, सोच बदली, दिशा बदली तो दशा बदल गयी। सोचने का तरीका आसान हो गया। सोचते रहे कि ये पत्थर तो बहुत कम वजन के हैं जो इतनी तीव्रता से लगते हैं अति दुख होता है। तो मेरे इतने वजन के मुद्गर से इनके परिजन को कितना दुख हुआ होगा। मेरे पीछे तो रोने वाला कोई नहीं है। पर इनके पीछे परिवार कितना दुखी है। इन पर क्या बीत रही होगी ?

कपड़े से मैल उतारने के लिए लोग लट्ठ का प्रयोग करते, मोगरे का प्रयोग करते हैं। ऐसे ही ये लोग मुझे लट्ठ मारकर मेरी आत्मा पर लगी कर्म मैल को कम करते हैं।

ऐसा अच्छा सोचकर वे नये कर्म बंध से बच रहे थे। भगवान वहां से विहार

करते हैं। अर्जुन माली कहते हैं भगवन् ! मैं यहीं रह कर साधना करना चाहता हूँ। उनकी सोच यह रही होगी कि अन्य जगह विचरण में लोग सन्मान देंगे जबकि यहां पर ताड़ना तर्जना अपमान मिलेगा तो मेरे कर्म क्षय शीघ्र होंगे।

अर्जुन अणगार ने ६ माह बेले २ तप किया। खूब सहन किया। अंत में १५ दिन की संलेखना कर मुक्त हो गये।

भगवान ने नरक में जाने के ४ कारण बताये हैं।

१. महाआरंभ
२. महापरिग्रह
३. मांस मदिरा सेवन
४. पंचेन्द्रिय जीव की हत्या

यहां अर्जुन माली ने एक नहीं ११४१ की हत्या की फिर भी नरक नहीं गये। क्या कारण जबकि पंचेन्द्रिय की हत्या वाला मरकर नरक जाता है।

जब तक अगले जन्म का आयुष्य बंध नहीं हो तब तक जीव कहीं भी जा सकता है। अर्जुन माली मोक्ष गये यानि आयुष्य बंध नहीं हुआ था। उन्होंने हत्या की ऐसा एकांत नहीं कह सकते क्योंकि यक्ष उनके शरीर में प्रवेश कर चुका था। उनको तो मात्र उन ७ पर रोष आया। उनका अहित का भाव था। अन्य की जो हत्या हुई वह यक्ष के कारण। उसके बाद भी पश्चातप खेद किया। संयम तप का आचरण भयंकर पापों को भी समाप्त कर देता है। अनेक भव के संचित दुष्कर्मों को तप संयम से समाप्त किया जाता है। तो यह कोई आश्चर्य नहीं। उन्होंने करणी ऐसी की। संयम तप के साथ समता भी रखी। हम तो जहाँ अपमान हो वहां से भागने का प्रयास करते हैं पर अर्जुन माली ने स्वेच्छा से अपमान होने वाली जगह में रहना स्वीकार किया। शुभ भावों का शुभ परिणाम आया।

तीसरा अध्ययन समाप्त

इसके बाद ५ से लेकर १३ अध्ययन तक का पूर्व में वर्णन किया जा चुका है। अब पंद्रहवाँ अध्ययन में 'एवंता मुनि' का वर्णन है जो इस प्रकार है–

पोलासपुर नगर था। विजय नाम का राजा था। श्रीदेवी नाम की रानी थी।

अतिमुक्त नाम का कुमार था ।

उस काल उस समय भगवान महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अंतेवासी शिष्य इन्द्रभूति गौतम गोचरी के लिए गये । अतिमुक्त कुमार खेल खेलने के लिए क्रीड़ा स्थल पर बालक बालिकाओं के साथ आये । और खेल खेलने लगे ।

इन्द्रभूति गौतम को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि ये कौन हैं और इस तरह क्यों घूम रहे हैं ? गौतम स्वामी ने कहा – हम श्रमण निर्ग्रंथ हैं और भिक्षा के लिए भ्रमण कर रहे हैं ।

ऐसा सुनकर गौतम स्वामी की उंगली पकड़ी और कहा चलो मैं आपको भिक्षा दिलाता हूँ ।

यहां ऐसा संकेत मिलता है कि गौतम स्वामी खुले मुंह नहीं बोले । कारण एक हाथ में पात्र दूसरे हाथ की अंगूली अतिमुक्त ने पकड़ ली एवं चर्चा चल रही थी इससे स्पष्ट होता है कि उनके मुँह पर मुंहपत्ति रही होगी।

महारानी श्रीदेवी ने गौतम स्वामी को आते देख विधिपूर्वक गोचरी आदि का प्रतिलाभ दिया । गौतम स्वामी वहां से सारा आहार लेकर जाने लगे तो अतिमुक्त ने कहा अब कहाँ जा रहे हो यहीं खाओ ना ।

गौतम स्वामी – नहीं हम गुरुदेव को बताएंगे फिर वापरेंगे । एवंता बोले आपका भी कोई गुरु है क्या ? क्या मैं उनके दर्शन कर सकता हूँ । गौतम स्वामी ने कहा जैसे तुम्हें सुख हो ।

वह गौतम स्वामी के साथ गये भगवान से धर्म कथा सुनी और वैराग्य जागृत हो गया । अतिमुक्त ने भगवान से कहा कि मैं अपने माता–पिता से आज्ञा लेकर आपके पास दीक्षा धारण करूंगा ?

बच्चों के प्रश्न जिज्ञासा से परिपूर्ण होते हैं । उनमें सरलता होती है । भेदभाव नहीं होता ।

प्रसंग 1

एक बच्चे ने अपने बड़े पिताजी से पूछा–आप मंजू बोलते हैं तो बड़ी मम्मी आ जाती हैं । बड़ी मम्मी 'मंजू' बोलती हैं तो आप आ जाते हो । ये क्या कमाल

है । बटन एक दबाते हो बल्ब दो चालू हो जाते हैं । बड़े पिताजी ने कहा कि हम पति–पत्नि एक दूसरे का नाम नहीं लेते हैं । इसलिए हमारी बेटी का नाम लेते हैं । बच्चे को जिज्ञासा बढ़ गई । बोला–पर ताऊजी जब मंजूबहन का जन्म नहीं हुआ था तब आप एक दूसरे को क्या कहते थे ?

प्रसंग 2

पत्नी पति को बुलाना हो तो बोलती थी 'सुनो', आमतौर पर पति पत्नी ऐसा ही कहते हैं । उनके पुत्र को हम पूछते तेरे पापा का नाम क्या है तो वह पुत्र कहता 'सुनो' । मम्मी का क्या नाम है ? तो कहता 'सुनो'

इस प्रकार बच्चे भोले होते हैं । यहां एवंता को भी भगवान की वाणी को सुनकर वैराग्य आया । माता–पिता से आज्ञा मांगी । माता–पिता ने कहा अभी तुम बालक हो । अभी क्या जानते हो ? अभी धर्म को जानो ।

अतिमुक्त ने कहा मैं जो जानता हूँ वो नहीं जानता । जिसको नहीं जानता उसको जानता हूँ ।

माता–पिता ने कहा ये क्या पहेलियाँ हैं ? हमें समझाओ । अतिमुक्त ने कहा – मैं जानता हूँ जो जन्मा है वो मरेगा पर यह नहीं जानता की कब, कहाँ, किस प्रकार, कितने दिनों बाद मरेगा । किन कर्मों के कारण चार गति में कहां उत्पन्न होगा । पर इतना जरूर जानता हूँ कि वह अपने कर्म के कारण चतुर्गति संसार में जन्म लेता है ।

यहां बालक छोटा है पर उत्तर गंभीर जैसे महाज्ञानी हो ।

ज्ञानी अज्ञानी में क्या अंतर यही कि अज्ञानी मृत्यु से डरता है । ज्ञानी जन्म से डरता है । ज्ञानी मूल को पकड़ता है । वह जानता है जन्मेगा वो जरूर मरेगा ।

कल संवत्सरी का दिन है । अगले जन्म के आयुष्य बंधन के सबसे अधिक संभावना वाला दिन । आज चिंतन करना है कि हमें कैसे मरना है ? क्योंकि दुनिया में कोई अमर नहीं है । तीर्थंकर भगवान को भी मरना पड़ता है तभी मोक्ष मिलता है । इसलिए कहावत बन गई "मरे बिना मोक्ष भी नहीं मिलता" ।

आयुष्य बंधन जीव उम्र के तीसरे हिस्से में होता है । जैसे कोई ९० वर्ष का व्यक्ति हो तो ६० वर्ष के बाद बंधेगा । आयुष्य बंधन दो प्रकार का 'सोपक्रम २. निरूपक्रम । सोपक्रम यानि कभी भी टूट सकता है, दुर्घटना आदि से निरूपक्रम यानि कि जितना आयुष्य है उतना भोगना ही है । उसके पहले किसी भी कारण से मृत्यु नही होती । ऐसी आयुष्य तीर्थंकर, देवता, नारकी, चक्रवर्ती, वासुदेव श्रीदेवी आदि की होती है ।

तो हमरा भी जन्म नहीं हो ऐसी आराधना करें । माता -पिता अतिमुक्त से बोले कि हम तुम्हें एक दिन का राजा बनायेंगे । अतिमुक्त मौन रहे फिर राज्याभिषेक हुआ । फिर दीक्षा लेकर ४ अंगों का अध्ययन किया बहुत वर्षों तक चारित्र पालन किया । गुणरत्नआदि तप का आराधन किया यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए ।

भगवती सूत्र शतक ५ उद्देश्यक ४ में अतिमुक्त ने दीक्षा लेने के बाद शौच क्रिया के लिए जंगल की ओर गए । साथ में साथी संत भी थे । रास्ते में नाला बह रहा था । शौच क्रिया से निवृत्त होकर उन्होंने नाले में पाल बांधकर पानी को रोक लिया एवं उसमें अपनी पात्री डाल दी ।

अन्य संतों ने देखा । आकर भगवान से पूछा भगवन् अतिमुक्त मुनि कितने भव करके मोक्ष जायेंगे ? क्योंकि संतों को लगा जो कच्चे पानी में अपना पात्र डाले वह पाप का सेवन करने वाला क्या मोक्ष जायेगा ।

पर भगवान ने कहा वह इसी भव में मोक्ष जायेगा । आप उसकी हीलना निंदा मत करो और उसकी सेवा करो ।

यहाँ कितनी शिक्षाप्रद बात है कि जीव छोटा हो या बड़ा हमें किसी की निंदा नहीं करना । कल संवत्सरी के अवसर पर हमको सभी को यदि किसी का भी अपराध हुआ हो तो उदार हृदय रखकर क्षमापना करना है ।

इस एवंता मुनि के वर्णन में एक महत्वपूर्ण कथन ऐसा है कि 'एवंता' अनेक बच्चों के साथ खेल रहे थे पर एवंता के मन में ही ऐसा विचार आया, गौतम स्वामी को देखकर कि ये कौन हैं ? क्यों घूम रहे हैं ? इतनी सी जिज्ञासा ने उन्हें

वैरागी, मोक्षार्थी बना दिया, मोक्ष पहुँचा दिया । ऐसा क्यों हुआ ?

तो उत्तर देते हुए ज्ञानीजन फरमाते हैं उनके भाग्य का उदय हो गया था । पुण्यवानी उदय में आयी । इसी कारण ऐसे भाव बने । धर्म करना नीरस कार्य है । इसमें किसी किसी को ही रस आता है । पापी जीव को इसमें रस नहीं आता है । तो आपको भी धर्म करणी में रस आ रहा है इसलिए आप सभी भी पुण्यवान हैं ।

पन्द्रहवां अध्ययन समाप्त

सोलहवां अध्यय 'अलक्ष राजा' का है । जिनका वर्णन कोणिक राजा के समान हैं जो उववाइय सूत्र में वर्णित है । अलक्ष राजा वाराणासी नगरी के थे । जिसको वर्तमान में काशी भी कहते हैं । काम महावन नाम के उद्यान में भगवान पधारे । उदायन राजा की तरह दीक्षा ली । जिनका वर्णन भगवती सूत्र शतक १३ उद्देशक ६ में है । विशेष बात यह है कि अलक्ष राजा ने ज्येष्ठ पुत्र को सिंहासन पर बिठाया । ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । बहुत वर्षों तक संयम पालन कर विपुलगिरि पर्वत परसिद्ध हो गये ।

छठा वर्ग समाप्त

सातवाँ वर्ग

इसमें श्रेणिक राजा की १३ रानियों का वर्णन है । नंदा, नन्दवती, नन्दोत्ररा, नन्दश्रेणिका, मरूंता, सुमरूता, महामरूता, मरुदेवा, भद्रा, सुभद्रा, सुजाता, सुमनायिका, भूतदत्ता । सभी ने पद्मावती रानी के समान दीक्षा ली । ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । २० वर्ष संयम पालकर मुक्त हो गई ।

सातवां वर्ग समाप्त

आठवां वर्ग

रोटी, खाखरा, बिस्किट, तीन वस्तुऐं हैं आपके पास । रोटी एक दो दिन में खराब होती है । खाखरा महीना भर में तो बिस्किट छः महीने साल भर में ? ऐसा क्यों तो उत्तर दिया गया रोटी को कम तपाया, खाखरे को अधिक बिस्किट को और अधिक । अर्थात्, जिसको जितना अधिक तपाया उतनी देर से खराब होता

है, भगवान कह रहे हैं आत्मा को इतना अधिक तपा दे कि वह कभी खराब नहीं हो ।

शरीर में दर्द हो तो तपाया जाता है । बर्फ पर चलो तो पांव फिसलते हैं । आग लगा दे तो पानी बन जायेगा । कर्म जीव को नाच नचाता है पर तप कर्म को नाच नचाता है । आजकल के नेता भी भूख हड़ताल कर अपनी माँगे मनवा लेते हैं । तप के अंदर विशेष शक्ति है यदि वह भगवान की आज्ञा अनुसार किया जावे तो शीघ्र मुक्ति प्रदान करता है। ऐसे ही तप की प्रेरणा देने वाला यह आठवा वर्ग है।

राजगृह नगर में चम्पा नाम की नगरी थी । पूर्णभद्र नाम का यक्षायतन था । कोणिक राजा राज्य करता था । श्रेणिक राजा की भार्या, कोणिक की छोटी माँ काली नाम की रानी थी । उन्होंने भगवान के पास दीक्षा ली, ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और अपनी गुरुणी चंदनबाला की आज्ञा लेकर रत्नावली तप किया । चार बार किया । जिसको यहां परिपाटी शब्द से कहा गया है। ऐसे ही १० रानियों का वर्णन है, जिन्होंने अलग अलग प्रकार के तप किये ।

१० रानियों की दीक्षा पर्याय एक एक वर्ष बढ़ाना है । प्रथम काली रानी ने ८ वर्ष संयम पालन किया तो आगे की रानी ने ९ वर्ष .... इस प्रकार एक एक वर्ष बढ़ाना है ।

यहां प्रश्न होता है कि काली आदि रानियों की दीक्षा का निमित्त क्या बना ?

मगधेश्वर श्रेणिक राजा ने चेलना के लघु पुत्र हल विहल्ल को देवनामी हार एवं सेचनक हाथी उपहार रूप में दिया । हाथी पर बैठकर, हार पहनकर निकलते तो सभी प्रशंसा करते । प्रशंसा सुनकर कोणिक की पटरानी पद्मावती को ईर्ष्या हो गई, उन्होंने पति कोणिक को कहा ये दोनों वस्तुएं आपको शोभा देती हैं ।

कोणिक ने मना कर दिया कि मेरे पिताजी ने ये वस्तुऐं उन्हें दी हैं । मांगना उचित नहीं है पर पटरानी की जिद के कारण हल विहल्ल से दोनों चीजें मांग ली । तब हल विहल्ल कुमार ने कहा हमें राज्य का हिस्सा दो तो हम आपको लौटा सकते हैं । कोणिक ने राज्य देने से मना कर दिया । बलपूर्वक उसे लेने का प्रयास

किया ।

हल विहल्ल अपने परिवार सहित नाना चेटक के पास पहुचे । कोणिक ने उन्हें वापिस लौटाने का कहा । चेटक ने मना कर दिया कहा यदि आपको हार,हाथी चाहिये तो इन्हें आधा राज्य दे ।

इसको अमान्य कर कोणिक ने चेटक राजा पर हमला कर दिया । कोणिक के साथ इन दसों रानियों के पुत्र भी युद्ध में गये ।

भगवान महावीर से माताओं ने पूछा – हमने हमारे पुत्रों को जाते देखा । वापस लौटने पर हम मुंह देखेंगे या नहीं । भगवान ने युद्ध में काम आने की बात कही । अर्थात् युद्ध में मारे जायेंगे । संसार की असारता को समझकर वो दीक्षित हो गयी ।

रानियों के तप को आप सुनते रहे हैं । सबसे कम काल वाला ताप 'लघुसर्वतोभद्र' तथा सर्वाधिक लंबा वर्धमान आयंबिल तप है । हम यहाँ इन तपों को समझने का प्रयास करेंगे ।

१. प्रथम रानी काली ने ''रत्नावली'' तप किया । इसमें उपवास बेला तेला फिर ८ बेले फिर १ से १६ उपवास तक बढ़ना फिर ३४ बेले । जैसे बढ़े वैसा उतरना अर्थात् १६ से १ तक आना फिर ८ बेले फिर ३,२,१ ।

सीधी सी बात है कि जैसे हार में धागा होता है उसमें बीच में बड़ा पेंडिल होता है । समान दूरी पर ऊपर की ओर से छोटे पेंडिल होते हैं । जैसे चित्र नम्बर १ में है A-B छोटे पेंडिल हैं, 0 बड़ा पेंडिल है । **संयम पर्याय ८ वर्ष**

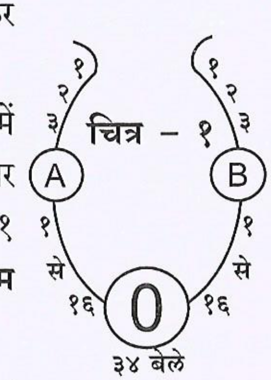

२. दूसरी रानी सुकाली ने 'कनकावली' तप किया । ऊपर के तप में बेले के स्थान पर ८ तेले एवं ३४ तेले करना है । **संयम पर्याय ९ वर्ष ।**

३. तीसरी महाकाली रानी ने 'लघुसिंह निष्क्रीड़ीत' तप किया । इसका नाम

लघुसिंह अर्थात् सिंह का बच्चा दो कदम आगे बढ़ता है एक कदम पीछे आता है । इसमें एक उपवास पारणा एक उपवास पारणा फिर +२ करना अर्थात् १+२=३ इसमें एक घटाना अर्थात् ३-१=२, इसमें २ जोड़ना २+२=४ इसमे एक घटना ४-१=३ । इस प्रकार ९ तक बढ़ना । सेंटर में ८ आयेगा वहां से । जोड़ना १ घटाना २ अर्थात् ८+१=९, ९-२=७, ७+१=८, ८-२=६ इस प्रकार उपवास तक आना ।

चढ़ने में फार्मूला (+२ -१), उतरने में (+१ -२), **संयम पर्याय १० वर्ष**

४. कृष्णा रानी का चौथा अध्ययन है, 'महासिह निष्क्रीड़ीत' तप इसमें फार्मूला तीसरी रानी समान है पर ९ के स्थान पर १९ तक बढ़ना । **संयम पर्याय ११ वर्ष ।**

५. पांचवे अध्ययन में सुकृष्णा रानी ने 'भिक्षुप्रतिमा' की आराधना की जो चार प्रकार से 'सप्तसप्तमिका' 'अष्टअष्टमिका' 'नवनवमिका' 'दस दसमिका' । इसमें 'दति' से आहार पानी लेते हैं । प्रथम सप्ताह में एक बार में जितना भोजन दे, एक बार में जितना पानी दे, उतना लेना । कम पड़े तो दुबारा नहीं लेना । अधिक हो रहा हो तो मना किया जा सकता है ।

सप्त सप्तमिका ४९ दिन, अष्ट अष्टमिका ६४, नवनवमिका ८१, दस दशमिका १०० दिन की होती है । **संयम पर्याय – १२ वर्ष**

६. छठा अध्ययन महाकृष्णा रानी का था । महाकृष्णा रानी ने १ उपवास से ५ उपवास तक के पारणे किये । इसमें ७५ दिन तप के २५ पारणे ।

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

सरलता से याद रखना हो तो प्रथम बार में १२३४५ लिखा उसमें मध्य में ३ है । आगे की लाईन ३ से शुरु होगी ३४५१२ इसमें मध्य में ५ है । आगे की लाइन मध्य से ५१२३४ आगे की लाइन मध्य से २३४५१, ४५१२३१ इस प्रकार । **संयम पर्याय – १३ वर्ष ।**

७. सातवां अध्ययन महासर्वतोभद्र तप करने वाली वीर कृष्णा रानी का है । पूर्व के लघुसर्वतोभद्र तप में ५ तक बढ़े । यहां सात तक बढ़ना है । विधि वही १२३४५६७ इसमें मध्य में ४ है वहां से शुरू करना ऐसा ७ बार करना । **संयम पर्याय १४ वर्ष**

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

८. आठवे अध्ययन में रामकृष्णा रानी का वर्णन है । उन्होंने 'भद्रोत्तर प्रतिमा' की । इसमें ५ से शुरू कर ९ तक करते हैं । बीच वाले अंक से पुन: आगे की लाइन शुरू करते हैं । ५, ६, ७, ८, ९ इसमें बीच में ७ है, इससे अगली लाइन शुरू होगी । ७ ८ ९ ५ ६ ऐसी ५ लाइन करना । **संयम पर्याय १५ वर्ष ।**

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५

९. नवमी 'पितृसेन कृष्णा' ने मुक्तावली तप किया इसमें १ से १६ तक तप करते हैं पर लगातार लड़ी नहीं चलाकर बीच-बीच में उपवास किया जाता है, उपवास पारणा बेला पारणा इसके बाद करना चाहिए तेला पर वे किया उपवास पारणा कर फिर तेला । तेले के बाद करना था चोला पर पहले उपवास किया फिर चोला किया । इसी प्रकार १६ तक बढ़ी । फिर १६ से एक तक वापस उतरी । **संयम पर्याय १६ वर्ष ।**

१०.दसवींरानी 'महासेन कृष्णा' ने वर्धमान आयंबिल तप की आराधना की इन्होंने १ से लेकर १०० तक आयंबिल किये । पारणा नहीं किया जहां भी पारणा आता है वहां उपवास करते हैं । जैसे उपवास पारणा पर पारणा नहीं किया वहां उपवास किया । फिर दो आयंबिल पारणे के स्थान पर उपवास । **संयम पर्याय १७ वर्ष ।**

इस प्रकार तप को याद रखने का प्रयास किया जा सकता है ।

किस रानी को कितने दिन का तप एवं पारणा रहा वह तालिका के माध्यम से कहा जा सकता है । जिन्होंने ४ परिपाटी की उन्होंने प्रथम परिपाटी के पारणे सब प्रकार का निर्दोष आहार लिया । दूसरी में नीवि । तीसरी में अलेप वाला । चौथी में आयंबिल किया ।

१. अंतगढ़ – आठवां अंग शास्त्र है ।
२. अंतगढ़ में ८ वर्ग हैं ।
३. अंतगढ़ में १० अध्ययन हैं ऐसा समवायांग में बताया है ।
४. अंतगढ़ सूत्र में अंतिम समय में केवलज्ञान पायी ९० आत्माओं का वर्णन है।
५. तीर्थंकर (२२वें + २४वें) के समय का वर्णन है ।
६. अंतगढ़ को संभवत: प्रभवस्वामी द्वारा लिपिबद्ध किया गया । क्योंकि सुधर्मा स्वामी ने वाचना जंबू स्वामी एवं प्रभवस्वामी दोनों को दी । अपने गुरु जंबू स्वामी दादा गुरु सुधर्मास्वामी दोनों को लेकर लिपिबद्ध किया ।
७. आगम की वाचन के लिए तीन जोड़ियाँ हैं – भगवान महावीर-गौतम, सुधर्मा-जंबू, तीसरी अज्ञात-वाचनाचार्य एवं शिष्य ।
८. सर्वविरति धारण की – ९० आत्माओं ने ।
९. देशविरति धारण की – सुदर्शन श्रावक ने ।
१०. अनुमोदना – श्रीकृष्ण एवं श्रेणिक के समान ।
११. लोकोत्तर देव की लोकोत्तर आराधना – सुदर्शन श्रावक ने की ।
१२. लोकोत्तर देव की लौकिक आराधना – राजाओं ने, तीर्थंकरों की ।
१३. लौकिक देव की लोकोत्तर आराधना – श्रीकृष्ण ने पौषध से देव की ।
१४. लौकिक देव की लौकिक आराधना – यक्ष की अर्जुन माली ने की ।
१५. आराधना से देवशक्ति हारती है – जैसे – सुदर्शन से यक्ष हारा ।
१६. बालवय में दीक्षित – अतिमुक्तकुमार ।
१७. कुमारवय में दीक्षित – गजसुकुमार ।
१८. युवावय में दीक्षित – प्रद्युम्न शाम्ब आदि ।
१९. प्रौढ़ अवस्था में दीक्षित – काली आदि रानियाँ ।
२०. संतान के मोह से आर्त्तभाव – देवकी रानी को आया ।
२१. संतान के मोह से रौद्रभाव – सोमिल ब्राह्मण को आया ।
२२. स्त्रीमोह से अनर्थ – ललिता गोष्ठी का हुआ ।

२३. स्त्री मोह से रौद्र भाव – अर्जुन मालाकार के समान ।
२४. देह का मोह छोड़ा – गजसुकुमार ने ।
२५. उपकार कार्यों को प्रोत्साहन – श्रेणिक राजा ने दिया ललिता गोष्ठी को ।
२६. असमर्थों को सहयोग – श्रीकृष्ण ने दिया वृद्ध को ।
२७. वैर की वसूली से कर्म बंध – सोमिल ब्राह्मण ने किया ।
२८. धैर्य दृढ़ विश्वास गजसुकुमार के समान होना चाहिए ।
२९. सहन शक्ति अर्जुन माली के समान होना चाहिए ।
३०. श्रावकों को सुदर्शन श्रमणोपासक का अनुसरण करना चाहिए ।
३१. धर्म पर विश्वास कृष्ण के समान होना चाहिए ।
३२. प्रश्नोत्तरी शैली अतिमुक्त के समान होनी चाहिए ।
३३. त्याग कृष्ण की पटरानियों जैसा होना चाहिए ।
३४. तपस्या श्रेणिक की रानियों के समान होना चाहिए ।
३५. अहितकर्ता कर्मक्षय में सहायक होता है – जैसे सोमिल ब्राह्मण ने नेगजसुकुमाल को ।
३६. देव भी भाग्य नहीं पलट सकते ।
३७. निदान का फल अशुभ होता है – श्रीकृष्ण वत् ।
३८. सरागी देव की पूजा अनर्थ का फल – अर्जुन माली .
३९. पर्व लौकिक, लोकोत्तर दो प्रकार के ।
४०. लौकिक दो प्रकार के – धार्मिक एवं राष्ट्रीय
४१. हाथ अंग है । अंगुलियाँ उपांग हैं । नख अंगोपांग हैं ।
४२. अंतसमय में केवलज्ञान पाया । उसको कहते हैं अन्तकृत ।
४३. दशाअर्थ अवस्था एवं दसा ।
४४. सार पूर्ण हो, असंदिग्ध हो, अल्पअक्षरयुक्त हों, दोषरहित हो, वह सूत्र कहलाता है ।
४५. उपासक दशा में श्रावकों का वर्णन हैं । अंगढ़ में संत सतियों का ।
४६. पहले से पाँचवे वर्ग तक ५१ जीवों का वर्णन है वह २२वें तीर्थंकर

अरिष्टनेमि के अनुयायी थे ।

४७. ६ से ८वें वर्ग तक ३९ जीवों का वर्णन हैं वे २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर के अनुयायी थे ।

४८. अरिष्टनेमि के शासन के ४१ अणगार, १० साध्वियाँ ।

४९. भगवान महावीर के शासन के १६ अणगार, २३ साध्वियाँ ।

५०. भगवान अरिष्टनेमि की यक्षिणीआर्या, भगवान महावीर स्वामी की चंदना आर्या प्रवर्तिनी थी ।

५१. दो राजकुमार एक दिन के राजा बने – गजसुकुमार, अतिमुक्तकुमार ।

५२. अर्जुन अणगार एवं गजसुकुमार को कष्ट अधिक आये ।

५३. अंतगढ़ में वर्णित देव विशेष तीन – मुद्गर पाणियक्ष, वेश्रमण कुबेर, हरिणगमैषी ।

५४. आगम विशेष के दो नाम आये हैं – उपासकदसा, पण्णणति (भगवती सूत्र)

५५. तीर्थंकर विशेष ३ – अमम, अरिष्टनेमि, महावीर स्वामी ।

५६. व्यक्ति या मुनि विशेष – अभयकुमार, उदांयन, गंगदत्त, गौतमस्वामी, देवानंदा ब्राह्मणी, महाबल, मेघकुमार, स्कन्दक मुनि, चंदना, यक्षिणी, अतिमुक्त श्रमण ।

५७. रानियाँ – देवकी, श्रीदेवी, बलदेवपत्नी, धारिणी, चेलना, जांबवती ।

५८. क्षत्रिय वर्ण के कुल ८९ नाम हैं, जिसमें ११ राजा, रानियाँ ४०, राजकुमार ३८ हैं ।

५९. वैश्य वर्ण के १७ नाम हैं .

६०. ब्राह्मण वर्ण के ३ नाम हैं ।

६१. शुद्रवर्ण के २ नाम हैं ।

६२. यक्षायतन २ – पूर्णभद्र, सूरप्रिय ।

६३. द्वीप एक – जंबूद्वीप ।

६४. उद्यान ६ – काममहावन, गुणशीलक, द्युतिपलाश, नंदनवन, सहस्राम्रवन, श्रीवन उद्यान ।

६५. पर्वत ४ – रेवतक, विपुलाचल, शत्रुंजय, हिमवान ।

६६. वृक्ष ४ – अशोक, कोरंट, कोशाभ्र, न्यग्रोधवृक्ष ।

६७. रत्न एक – हस्ति रत्न ।

६८. धातु एक – सुवर्ण ।

६९. भवन विशेष ५ – इन्द्रस्थान, अंत:पुर, उपस्थानशाला, पौषधशाला, वासग्रह ।

७०. बंधन २ – अवकोटक, कंचुक

७१. अंलकार – वलय बांह

७२. पकवान– सिंहकेशरिया मोदक ।

७३. ग्रह ४ – चन्द्र, मंगल, शनि, सूर्य ।

७४. क्षेत्र – भरत क्षेत्र (भारत वर्ष)

७५. नगरी विशेष १४

७६. आठ वर्ग में – १०, ८, १३, १०, १०, १६, १३, १० इस प्रकार क्रम से अध्ययन हैं ।

७७. स्त्रियों का वर्णन ३ वर्ग में – ५,७,८ में ।

७८. लौकिक आगम – रामायण आदि । लौकोत्तर आगम – आचारांग आदि ।

७९. लौकिक पर्व अनेक हो सकते हैं ।

१. दीवाली आदि लोभ जन्य पर्व

२. दशहरा आदि विजय जन्य पर्व

३. होली, शीतलामाता, नागपंचमी आदि भय जन्य पर्व । देव अनिष्ट से बचने का प्रयास है ।

४. राष्ट्रीय पर्व – २६ जनवरी, १५ अगस्त आदि ।

५. स्नेह पर्व – रक्षाबंधन आदि ।

६. आमोद प्रमोद पर्व – बसंत उत्सव, शरद उत्सव, मकर सक्रांति आदि ।

७. धार्मिक पर्व – कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, क्रिसमस डे, रमजान आदि

प्रथम वर्ग

१. अध्ययन १०
२. सभी के माता-धारिणी, पिता - अंधकवृष्णी।
३. चैत्य शब्द के ११२ अर्थ श्री जयमलजी म.स. ने खोजे।
४. आर्य सुधर्मा स्थवीर ५००शिष्यों के साथ पधारे।
५. पूर्ण भद्र उद्यान में रूके।
६. ७वें अंग का नाम उपासक दसा हैं।
७. सुधर्मास्वामी भगवान के ५वें गणधर थे। १४ पूर्व, ४ ज्ञान के धनी थे।
८. शिष्य को अंतेवासी कहते हैं।
९. गणधरों द्वारा गुंफित शास्त्र अंग सूत्र हैं।
१०. वर्तमान में अंगसूत्र ११ हैं, होते १२ हैं, दृष्टिवाद नहीं हैं।
११. दृष्टिवाद छठे आचार्य/भद्रबाहु तक रहा।
१२. ९८० वीर निर्वाण में शास्त्रदेवर्धिगणि क्षमा श्रमण ने लिखे।
१३. आगमों की भाषा अर्धमागधी।
१४. गौतम, समुद्र,सागर, गंभीर, स्तिमित, अचल, काम्पिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजीत, विष्णु ये दस कुमारों का वर्णन है।
१५. गौतमगणधर गौतमकुमार अलग अलग हैं .
१६. अचल भ्राता गणधर हैं। अचल कुमार हैं
१७. शास्त्र श्रवण का फल भगवती सूत्र में आया है।
१८. उपदेश नहीं देने वाले को मूककेवली कहते हैं।
१९. सभी द्वारिका के निवासी थे।
२०. द्वारिका का निर्माण प्रथम देवलोक के देव कुबेर ने किया।
२१. द्वारिका १२ योजन लंबी, ९ योजन चौड़ी थी।
२२. कुबेर को वैश्रमण देव भी कहते हैं।
२३. द्वारिका नगरी अलकापुरी समान थी जो कुबेर की नगरी थी।
२४. रैवतक नामक पर्वत द्वारिका में था।

२५. नंदनवन में सुरप्रिय यक्षायतन था।
२६. धारिणी ने सोते हुए सिंह का स्वप्न देखा।
२७. श्रीकृष्ण अर्धभरत (३ खंड) के अधिपति थे।
२८. महाबल का वर्णन भगवतीशतक ११ उद्देश्क ११ में।
२९. भगवान के समवसरण में ४ प्रकार के देव आये - भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिक।
३०. मेघकुमार का वर्णन ज्ञाता धर्मकथा में है।
३१. गौतम अणगार ने भगवान अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली।
३२. ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। स्थवीर भगवंतों से।
३३. भिक्षु की १२ प्रतिमाओं की आराधना की। गुणरत्न संवर तप की भी।
३४. गुणरत्नसंवर तप में ७३ पारणे ४०७ उपवास होते हैं। कुल ४८० दिन तप के।
३५. स्कंधक मुनि का वर्णन भगवती शतक - २ उद्देशक १ में हैं।
३६. एक मास की संलेखना की।
३७. १२ वर्ष दीक्षा पर्याय पालकर मोक्ष .
३८. गौतमकुमार के समान सभी अध्ययन जानना चाहिए।
३९. दशदशार्ह - समुद्रविजय आदि।
४०. ५ श्रेष्ठ बलशाली बलदेव आदि।
४१. ३.५ करोड़ कुमार प्रद्युम्न आदि।
४२. ६० हजार दुर्दांत वीर - शांब आदि।
४३. ५६ हजार बलवर्ग सैनिक - महासेन आदि।
४४. २१ हजार वीर योद्धा - वीरसेन आदि।
४५. १६ हजार प्रमुख राजा - उग्रसेन आदि।
४६. १६ हजार रानियाँ - रूकमणि प्रमुख।
४७. हजारों गणिका - अनंगसेना आदि।
४८. गौतमकुमार की ८ पत्नियाँ थी ८-८ करोड़ प्रीतिदान मिला।

द्वितीय वर्ग

१. दूसरे वर्ग के ८ अध्ययन हैं।

२. अक्षोभ, सागर, समुद्र, हिमवंत, अचल, धरण, पूरण, अभिचंद।

३. सभी बातें प्रथम वर्ग समान सिर्फ दीक्षा पर्याय १६ वर्ष है।

४. प्रथम वर्ग में अक्षोभ, अचल, सागर, समुद्र नाम हैं, कुमारों के इसमें भी यही नाम हैं, कुमारों के +। जो एक रहस्य है। ऐसा क्यों ?

तृतीय वर्ग

१. तृतीय वर्ग में १३ अध्ययन हैं।

२. १ से ६ अध्ययन – अनीक सेन, अनंतसेन, अजीतसेन, अनहतरिपु, देवसेन, शत्रुसेन के हैं।

३. इनकी माता सुलसा, पिता नाग गाथापति, भद्दिलपुर नगर के रहने वाले।

४. ये सुलसा के अंगजात नहीं 'पालितपुत्र हैं'। मूल माता देवकी हैं।

५. अनीकसेन का पालन पोषण दृढ़ प्रतिज्ञकुमार समान बतलाया जिनका वर्णन राजप्रशनीय सूत्र में है।

६. धाय माता ५ प्रकार की होती हैं।

७. ८ वर्ष उम्र है – कलाचार्य के पास पढ़ने भेजने की।

८. ८ वर्ष माँ बाप के संस्कार मिलने चाहिए। फिर स्कूल भेजना चाहिये।

९. ३२ कन्याओं के साथ विवाह हुआ।

१०. ३२ करोड़ का प्रीतिदान मिला।

११. दहेज को प्रीतिदान कहा गया है – जिसका तात्पर्य प्रेम से दिया गया उपहार। यहां पिता की ओर से बहुओं को दिया गया।

१२. अनीकसेन ने भगवान अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली।

१३. माता–पिता की आज्ञा से दीक्षा ली।

१४. छहो भाइयों ने भगवान के पास जिस दिन दीक्षा ली उसी दिन से बेले–बेले तप चालू किये।

१५. छहो की दीक्षा पर्याय २० वर्ष थी। संथारा एक माह का हुआ।

१६. १४ पूर्व का अध्ययन किया।

१७. सातवाँ अध्ययन सारणका–माता–धारिणी, पिता–वसुदेव, स्वप्न सिंह का, विवाह ५० कन्याओं के साथ, १४ पूर्व का अध्ययन, दीक्षा पर्याय २० वर्ष, शत्रुंजय पर्वत पर एक मास की संलेखनापूर्वक सिद्धि।

१८. 'सेंस जहा गोयमस्स' यानि शेष बातें प्रथम अध्ययन के गौतमकुमार के समान।

अध्ययन 8वाँ

२०. अनीकसेन आदि नलकुबेर के समान दिखते थे।

२१. उनके वक्षस्थल पर श्रीवस्त अंकित था। बाल घुंघराले थे, कुंडल के समान।

२२. साधक को प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, द्वितीय प्रहर में ध्यान, तृतीय प्रहर में गोचरी जाना चाहिए।

२३. गौतमस्वामी का गोचरी जाने का वर्णन भगवती सूत्र शतक २ उद्देश्यक ३ में है।

२४. ऊँच–नीच, मध्यम कुल में गोचरी करते हुए देवकी रानी के यहां दो–दो के संघाड़े से गये।

२५. तीसरे संघाड़े को देख शंका हुई और द्वारिका के गौरव के लिए एवं संत की साधना की स्थिरता के लिए उच्चकोटि की श्राविका का परिचय देते हुए प्रश्न किया।

२६. गोचरी में सिंह केशरिया मोदक वोहराया।

२७. ७–८ कदम लेने गयी, वोहराकर उपकार मान, वंदन नमस्कार कर वापस छोड़ने के लिये गयी।

२८. बड़े प्रसाद को उच्च, दो तीन मंजिला का मध्यम, सामान्य झोपड़ी आदि में रहने वाले को निम्न कुल मानते हैं, जो शाकाहारी हो वहाँ गोचरी गये।

२९. अतिमुक्त श्रमण पोलासपुर के थे।

३०. अतिमुक्त मुनि ने देवकी के ८ पुत्रों की भविष्यवाणी की थी।

३१. अतिमुक्त मुनि देवकी के भाई थे।

३२. जीवयशा कंस देवकी के भाई भाभी थे।

३३. नाग गाथापति सुलसा भद्दिलपुर के रहने वाले थे।

३४. सुलसा ने हरिणगमेषी देव की मूर्ति बनाकर आराधना की।

३५. निमित्तक ने सुलसा को मृत बालक जन्मेंगे – ऐसा कहा।

३६. हरिणगमेषी देवकी के पुत्र एवं सुलसा के पुत्रों को आदान प्रदान करता था।

३७. देवकी पूर्व जन्म में देरानी थी – जेठानी के ६ रत्न चुराये थे, बदनामी के डर से चूहे के बिल में डाल दिये । ताकि पकड़ाने पर आरोप चूहे पर रहे । वही चूहा हरिणगमेषी देव बना । जेठानी सुलसा, देरानी देवकी बनी ।

३८. अपने पुत्रों को देख देवकी की आंखों में आँसू आ गए ।

३९. कृष्ण ४०० माताओं को नित्य वंदन करते थे ।

४०. कृष्ण की ७२००० मातायें थी ।

४१. माता देवकी को वंदन करने ६ माह में जाते थे ।

४२. कृष्ण ने चौवीहार तेला करके देव का आव्हान किया, पूछा – मेरा सहोदर कब होगा ?

४३. वासुदेव निदान कृत होने के कारण मोक्षपथ हेतु तप नहीं कर सकते पर लौकिक दृष्टि से कर सकते हैं ।

४४. अभयकुमार का वर्णन ज्ञाता धर्म कथा में है ।

४५. अभयकुमार ने अपनी छोटी माँ धारिणी के लिए तेला तप किया जिससे उनका दोहद पूरा हुआ ।

४६. देव ने युवावस्था आने पर गजसुकुमाल के दीक्षा लेने का कथन किया ।

४७. सिंह केसरिया मोदक कृष्ण के नाश्ते के लिए बनते थे ।

४८. देवकी ने सिंह का स्वप्न देखा ।

४९. स्वप्न का वर्णन भगवती सूत्र में है ।

५०. स्वप्न के वहाँ ५ प्रकार बताये हैं ।

५१. स्वप्न के ७२ भेद हैं ।

५२. ४२ सामान्य फल वाले, ३० विशेष फल वाले ।

५३. १४ स्वप्न तीर्थंकर, चक्रवर्ती की माँ देखती है, ७ वासुदेव की, ४ बलदेव की, १ मांडलिक राजा की माँ देखती है । चक्रवर्ती की माँ अस्पष्ट, धुंधले स्वप्न देखती है, तीर्थंकर की स्पष्ट देखती है । तीर्थंकर नरक से आवे तो माँ विमान स्थान पर भवन देखती है ।

५४. श्रीकृष्ण के ६ बड़े भाई, १ छोटा भाई था ।

५५. छोटे भाई का नाम गजसुकुमाल था ।

५६. सोमा कन्या से सगाई की । वह सोमिल ब्राह्मण सोमश्री ब्राह्मणी की कन्या थी ।

५७. सोमिल ४ वेद का ज्ञाता था ।

५८. सोमा सोने की गेंद से खेल रही थी ।

५९. कृष्ण भगवान अरिष्टनेमि के दर्शन करने गये, तब रास्ते में सोमा कन्या को देखा।

६०. गजसुकुमाल ने एक दिन का राज्य किया ।

६१. गजसुकुमाल की आयु दीक्षा समय करीब १६ वर्ष मानी है ।

६२. गजसुकुमाल ने भिक्षु प्रतिमा धारण की महाकाल श्मशान में ।

६३. गजसुकुमाल के सिर पर अँगारे सोमिल ने रखे ।

६४. सोमिल पूर्व भव में बालक था ।

६५. विमाता के बालक के सिर पर गरम गरम रोटी रखी जिससे बालक मर गया बड़ी माँ गजसुकुमाल बनी । लड़का–सोमिल बना । ९९ लाख भव पूर्व का बदला लिया । ऐसा कहा जाता है । शास्त्र में अनेक लाखों भव संचित हैं ।

६६. गजसुकुमाल का निर्वाण महोत्सव देवों ने मनाया ।

६७. सभी केवली का निर्वाण महोत्सव मनाने की नियमा देवों की नहीं है । नियमा सिर्फ तीर्थंकरों की है ।

६८. दूसरे दिन कृष्ण दर्शनार्थ गये । रास्ते में वृद्ध को ईंट रखवाने में मदद की ।

६९. भगवान ने सोमिल का नाम बताये बिना गजसुकुमाल के निर्वाण की बात कही ।

७०. कृष्ण पिछले द्वार से नगरी में गये । सोमिल उनको देख मरण को प्राप्त हुआ।

७१. भगवान सहस्राम्र वन में विराजमान थे ।

७२. भिक्षु प्रतिमा के लिए उम्र २९ वर्ष, दीक्षा पर्याय २० वर्ष, नव में पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का ज्ञान, विशिष्ट श्रद्धा शक्ति सम्पन्न होना आवश्यक है ।

७३. नवमाअध्ययन सुमुख का है, माता धारिणी, पिता बलदेव हैं, ५० कन्याओं के साथ विवाह, ज्ञान १४ पूर्व का २० वर्ष दीक्षा पर्याय, एक माह संलेखना, शत्रुंजय पर्वत से सिद्धि ।

७४. इसी प्रकार का वर्णन दसवें दुर्मुख का ग्यारहवाँ हैं, कुवदारक का जानना ।

७५. बारहवें दारूक, तेरहवें अनादृष्टि का जानना, इनके पिता वासुदेव माता धारिणी थे ।

चतुर्थ वर्ग

१. दस अध्ययन है - जालि, मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वारिसेन, प्रद्युम्नकुमार, शाम्ब, अनिरूद्ध, सत्यनेमि, दृढ़नेमि ।

२. नगरी - द्वारिका, वासुदेव राजा, धारिणी रानी, पुत्र जालिकुमार, ५० कन्याओं के साथ विवाह, अध्ययन १२ अंग का । दीक्षा १६ वर्ष, शत्रुंजय पर्व पर । मास का संथारा ।

इसी प्रकार मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वारिसेन का जानना ।

३. छठे प्रद्युम्न के पिता श्रीकृष्ण, माता रूक्मिणी शेष ऊपर समान ।

४. सातवें शांब के पिता श्रीकृष्ण माता जाम्बवती शेष ऊपर समान ।

५. आठवें अनिरूद्ध इनके पिता प्रद्युम्न, माता वेदर्भी, शेष ऊपर समान ।

६. नवमें सत्यनेमि दसवें दृढ़नेमि के पिता समुद्र विजय माता, शिवादेवी । शेष ऊपर समान ।

७. सत्यनेमि, दृढ़नेमि कौन हैं ? अरिष्टनेमि रथनेमि के भाई ।

८. समुद्रविजय, वसुदेव से लेकर अनिरूद्ध तक कितनी पीढ़ियाँ हुई ? पहली पीढ़ी-समुद्रविजय, वसुदेव, दूसरी पीढ़ी-जालि आदि पाँच कुमार तथा सत्यनेमि, दृढ़नेमि, तीसरी पीढ़ी - प्रद्युम्न तथा शाम्ब और चौथी पीढ़ी - अनिरूद्ध, यों चार पीढ़ियाँ हुई ।

पंचम वर्ग

१. कृष्ण की ८ पट्टराणी का एवं दो बहुओं का वर्णन है ।

२. द्वारिका का नाश मदिरा, अग्नि और द्वीपायन ऋषि का क्रौध है ।

३. कृष्ण का पश्चात मैं पुण्यहीन हूँ । दीक्षा नहीं ले सकता ।

४. वासुदेव निदानकृत होने के कारण दीक्षा नहीं ले सकते ।

५. निदानों का वर्णन दशश्रुतस्कंध में है ।

६. राम बलदेव के साथ पाण्डु मथुरा की ओर प्रयाण किया कृष्ण ने ।

७. पाण्डु मथुरा समुद्र के दक्षिणी तट पर थी ।

८. कौशाम्ब वन में वट वृक्ष के नीचे सोये हुए कृष्ण पर भाई जराकुमार द्वारा तीर

चलाया जिससे कृष्ण काल करके बालुकाप्रभ नामकतीसरी पृथ्वी में जन्म लिया

९. बाण बांये पैर में लगेगा ।

१०. द्वारिका का नाश द्वीपायन ऋषि के कारण हुआ जो मरकर अग्निकुमार देव बने थे

११. कृष्ण तीसरी पृथ्वी से निकलकर पाण्डुपद जनपद में शतद्वार नगर में ममम नाम के तीर्थंकर बनेंगे । उनका क्रमांक १२वाँ होगा ।

१२. उक्त घटना जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल मे होंगी ?

१३. ऐसा सुनकर हर्षनाद कर दीक्षा की दलाली की ।

१४. पद्मावती ने पंच मुष्टि लोच किया ।

१५. पद्मावती ने २० वर्ष संयम पालन किया । एक मास संथारा आया ।

१६. पद्मावती की गुरुणी यक्षिणी थी ।

१७. इसी प्रकार शेष सात पटरानियों को समझना - गांधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जाम्बवती, सत्यभामा, रूक्मिणी ।

१८. शाम्बकुमार की माता जाम्बवती पिता कृष्णवासुदेव थे ।

१९. शाम्बकुमार की पत्नि मूलश्री थी ।

२०. मूलदत्ता के पति भी शाम्बकुमार थे ।

२१. श्रीकृष्ण उत्सर्पिणीकाल में जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में पुण्ड्रजनपद के शतद्वार नगर में १२वें अमम नाम के तीर्थंकर बनेंगे ।

२२. सबसे पहले पद्मावती ने दीक्षा ली ।

छठा वर्ग

१. वर्ग ६ में ८ तक ३९ जीवों का वर्णन है ।

२. सभी भगवान महावीर स्वामी के अनुयायी थे ।

३. राजग्रह नगर के राजा श्रेणिक थे ।

४. वहां गुणशीलक नाम का चैत्य था ।

५. मंकाई नामक गाथापति भगवान के प्रवचन सुनकर वैराग्य से भर गया ।

६. बड़े पुत्र को भार सौंपकर १००० पुरुषों द्वारा उठाई जाने वाली शिविका से भगवान के पास गये । दीक्षा ली ११ अंगों का अध्ययन किया । सोलह वर्ष संयम पाला, मुक्त हो गए ।

७. दूसरे अध्ययन में किंकम गाथापति था ।

८. तीसरे अध्ययन में अर्जुन माली का वर्णन है ।

* अर्जुन माली राजगृह का निवासी था ।
* अर्जुन माली की पत्नि का नाम बंधुमति था ।
* उसका एक बहुत बड़ा बगीचा था ।
* अर्जुन माली यक्षा का भक्त था ।
* मुदगर का वजन ५६ किलो था ।
* गोष्ठि अर्थात् मित्र मण्डली ।
* उस गोष्ठि में ६ पुरुष थे । गोष्ठि का नाम ललिता था ।
* अर्जुन माली प्रतिदिन ६ पुरुष और एक स्त्री ७ प्राणियों की हत्या करता था ।
* अर्जुन अणगार ने बेले-बेले तप का यावज्जीवन करने का अभिग्रह किया ।
* ५ माह १३ दिन में ११४१ स्त्री पुरुषों की हत्या की ।
* नगरी के बाहर सुदर्शन सेठ भगवान के दर्शन हेतु गए ।
* अर्जुन माली सुदर्शन को देखकर मारने दौड़ा ।
* अर्जुन माली को देखकर सुदर्शन ने सागारी संथारा किया ।
* सुदर्शन ने अर्जुन माली से प्रेम व्यवहार किया ।
* पानी में नाव तिराने का वर्णन भगवती सूत्र में है ।
* अतिमुक्त का नाम दीक्षा के बाद एवन्ता मुनि रखा ऐसा सुना है ।
* धुतिपलाश उद्यान वाणिज्य ग्राम नगर में था ।
* इन्द्रस्थान को महाचौक (खेल का मैदान) भी कहते हैं ।
* गाथापति किसे कहते हैं ? गाथा यानि घर पति याने मालिक-अर्थात घर के मालिक ।
* गाथापति का अर्थ अन्य क्या है ? इभ्य, धनीसेठ गृहस्थ, गृहस्थ धर्म का पालन करने वाला ।
* दीप्त याने ? प्रकाशमान, तेजस्वी ।
* अपरिभुत - बाह्य एवं आभ्यंतर शत्रु से कभी पराभुत न होने वाले ऐसे पराक्रमी दमितेन्द्रिय व्यक्ति ककी अपरिभुत है ।
* एवंता मुनि ने सबसे कम उम्र में दीक्षा ली और सबसे ज्यादा उम्र तक संयम का पालन किया ।
* श्रमणों को १४ प्रकार का दान दिया जाता है ।

सातवाँ वर्ग

१. सातवें वर्ग में श्रेणिक राजा की १३ रानियों का वर्णन है ।
२. श्रेणिक राजा आगामी चौवीसी में प्रथम पद्मनाभ तीर्थंकर बनेंगे ।
३. श्रेणिक राजा के समक्ष १३ रानियों ने दीक्षा ली ।

आठवां वर्ग

१. सबसे कठिन तपस्या महासेन कृष्ण ने किया ।
२. सबसे छोटा तप महाकृष्णा ने लघु सर्वतों भृद्र तप किया ।
३. इन १० रानियों ने पुत्र एवं पति नियोग के कारण दीक्षा ली ।

जनरल

१. अर्जुन माली ने पांच माह १३ दिन में कितने स्त्री पुरुषों की हत्या की ? ९७८ पुरुष एवं १८३ स्त्रियाँ कुल ११४१ जनों की हत्या की ।
२. विराधना से आराधना में ले जाने का काम करता है - पज्जुसण ।
३. जिस प्रकार कपड़ों के मैल को पानी व साबुन से धोकर साफ किया जाता है उसी प्रकार आत्मा पर लगे मैल को तप संयम से दूर किया जाता है ।
४. अंतगढ़ सूत्र का एक अर्थ ऐसा भी करते हैं कि सभी ९० साधक मोक्ष जाने से अंतर मुहूर्त पूर्व ही केवली बने थे और सभी अन्तर मुहूर्त केवली पर्याय में रहकर मोक्ष पधार गये ।
५. एक परिवार से (यादववंशी) सबसे ज्यादा दीक्षाएं हुई, दूसरे नम्बर पर श्रेणिक राजा की रानियों ने दीक्षा ली ।
६. मंत्रवाद की तरफ जाना अर्थात् पुरुषार्थ कमजोर है ।
७. द्वेष के परिणामों में अनंत उपकारी गुरुदेव भी दोषी दिखेंगे । द्वेष रूपी चश्मे में नंबर गलत होते हैं ।,
८. मोह व अज्ञानता से हुई भूलों, द्वेषभावों को मिटाना नहीं, सच्चा पर्व मनाना है । जीव मात्रा क्षमा का अधिकारी है ।
९. जब तक द्वेष नहीं जायेगा तब तक धर्म आत्मा में नहीं आयेगा । बदले का फल स्वयं की दुर्गति होती है ।
१०. जैन दर्शन भाव प्रधान हैं न कि भव प्रधान ।

५. आगम आप्त वचन हैं।

६. आप्त कौन–राग द्वेष से रहित सर्वज्ञ सर्वदर्शी।

७. भंते शब्द के ७ अर्थ –

१. भगवंत – जो ऐश्वर्य रूप, श्री ज्ञान, वैराग्य, यशकीर्ति से युक्त है –

२. भवान्त – भव का अन्त करने वाला भवान्त।

३. भदन्त – कल्याण रूप, सुख रूप।

४. भयान्त – ७ प्रकार के भय का अंत करने वाला।

५. भजन्त – भज यानि सेवा सिद्धों की सेवा में सतत् रत रहने वाले, सिद्ध मार्गों का अनुसरण करने वाले।

६. भांत – ज्ञानादि गुणों से दीप्तिमान हैं जो वह भान्त।

७. भ्रांत – मिथ्यात्वआदि भ्रान्तियों से रहित हैं जो वह भ्रान्त ऐसे अनेक अर्थ भंते शब्द के हैं

८. दृष्टिवाद शास्त्र को लुप्त हुए लगभग १५०० वर्ष हुए।

९. दृष्टिवाद शास्त्र का ज्ञान आचार्य पट्टावली के छटे आचार्य भद्रबाहु स्वामी तक सुरक्षित था।

१०. आगम अर्ध मागधीभाषा में क्यों ? प्रभु महावीर ने जब उपदेशना दी तब यही भाषा उस क्षेत्र में बोली जाती थी।

११. अंतगढ़ में स्त्रियों का वर्णन, पांचवे, सातवें, आठवें ऐसे ३ वर्ग में है।

१२. श्रीकृष्ण की ७२००० माताएँ थीं।

१३. ऐसा कहीं पढ़ा या सुना कि कृष्ण महाराज ने गजसुकुमाल के विवाह के लिए १०० लड़कियाँ लाकर अंत:पुर में रखी थी।

१४. गजसुकुमाल ने लगभग १६ वर्ष की आयु में दीक्षा ली।

१५. अरिष्टनेमि भगवान और कृष्ण का चचेरे भाई का नाता था।

१६. भगवान महावीर और श्रेणिक का साला बहनाई का नाता था।

१७. श्रीकृष्ण के ३ भतीजों ने दीक्षा ली।

१८. राजकुल में उत्पन्न हुए ७६ सिद्ध हुए।

१९. श्रेष्ठि कुल में उत्पन्न १३ जन सिद्ध हुए।

२०. भोग से निवृत्त होकर योगवृत्ति ८८ साधकों ने ग्रहण की।

8. सिद्ध क्षेत्र द्वार

स्थान	श्मशान साधु	卐 साधु	उपाश्रय में साध्वियाँ	शत्रुंजय साधु	विपुलगिरि साधु	योग
मोक्ष गामी जीव	१ (गजसुकुमाल)	१ (अर्जुन माली)	३३	४४	१५	९०

9. प्रकीर्णक तप द्वार

तप	बारह भिक्षु प्रतिमा	गुणरत्न तप	卐 साधु	卐 साध्वियाँ	रत्नावली साध्वियाँ	कनकवली साध्वियाँ	प्रकीर्णक तप साध्वियाँ	योग
मोक्ष गामी जीव	३२	२३	२	२३	१	१	८	९०

10. वर्ग द्वार

वर्ग	प्रथम	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाँचवा	छठा	सातवाँ	आठवाँ	योग
अध्ययन	१०	८	१३	१०	१०	१६	१३	१०	९०

11. अन्तगढ़ दशा सूत्र के नगर आदि के वर्णन किस सूत्र में किस स्थान पर हैं

वर्ग	किसका वर्णन	वर्णन कौन से सूत्र में
प्रथम	नगरी, उद्यान, राजा आदि	औपपातिक सूत्र
	आर्य सुधर्मा, जम्बू आदि	ज्ञाता सूत्र
	रेवतक, नंदनवन, सुरप्रिय	वृष्हिदशा
	महाबल	भगवती सूत्र शतक, ११ उद्देशक १
	अरिष्टनेमी समवसरण	ज्ञाता धर्म कथा अध्ययन ५
	मेघ कुमार	ज्ञाता धर्म कथा अध्ययन १
	खंदक सन्यासी	भगवती शतक २ उद्देशक १
तीसरा	गाथापति	उपासक दशांग अध्ययन १
	दृढ़प्रतिज्ञ	राजप्रश्नीय ३ पांत में
	गौतम स्वामी	भगवतीशतक २, उद्देशक ५
	देवानन्दा	भगवती शतक ९ उद्देशक ३३
	अभयकुमार	ज्ञाता धर्मकथा अध्ययन १
	ब्राह्मण	भगवती शतक २, उद्देशक १

दूसरा वर्ग

नाम	पिता	माता	नगरी	विवाह	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
अक्षोभ	वृष्णि	धारिणी	द्वारिका	8	11 अंगो	16 वर्ष	1 मास	शत्रुंजय
सागर	"	"	"	"	"	"	"	"
सुमुद्र	"	"	"	"	"	"	"	"
हैमवंत	"	"	"	"	"	"	"	"
अचल	"	"	"	"	"	"	"	"
धरण	"	"	"	"	"	"	"	"
पूरण	"	"	"	"	"	"	"	"
अभिचंद्र	"	"	"	"	"	"	"	"

तृतीय वर्ग

नाम	पिता	माता	नगरी	विवाह	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
अनीकसेन	नागगाथापति	सुलसा	भद्दिलपुर	32	14 पूर्वो	20 वर्ष	1 मास	शत्रुंजय पर्वत
अनंतसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
अजीतसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
अनहत	"	"	"	"	"	"	"	
देवसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
शत्रुसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
सारण	वासुदेव	धारिणी	द्वारिका	50	14 पूर्वो	20 वर्ष	1 मास	"
गजसुकुमाल	वासुदेव	देवकी	द्वारिका	नहीं मात्र शताधिक सगाई	नहीं	एक दिन		महकाल श्मसान
सुमुख	बलदेव	धारिणी	"	50	14 पूर्वो	20 वर्ष	1 मास	शत्रुंजय पर्वत
दुर्मख	बलदेव	"	"	"	"	"	"	"
कूपदारूक	बलदेव	"	"	"	"	"	"	"
दारूक	वासुदेव	"	"	"	"	"	"	"
अनादृष्टि	वासुदेव	"	"	"	"	"	"	"

चतुर्थ वर्ग

नाम	पिता	माता	नगरी	विवाह	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
जालि	वासुदेव	धारिणी	द्वारिका	50	12 अंगो	16 वर्ष	1 मास	शत्रुंजय
मयलि	"	"	"	"	"	"	"	"
उवयालि	"	"	"	"	"	"	"	"
पुरुषसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
वारिसेन	"	"	"	"	"	"	"	"
प्रद्युम्न	कृष्ण	रुक्मिणी	"	"	"	"	"	"
शाम्ब	कृष्ण	जाम्बवती	"	"	"	"	"	"
अनिरूद्ध	प्रद्युम्न	वैदर्भी	"	"	"	"	"	"
सत्यनेमि	समुद्रविजय	शिवादेवी	"	"	"	"	"	"
दृढ़नेमि	"	"	"	"	"	"	"	"

पंचम वर्ग

नाम	पति	नगरी	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
पद्मावती	कृष्ण	द्वारिका	11 अंगों	20 वर्ष	1 मास	उपाश्रय
गौरी	"	"	"	"	"	"
गांधारी	"	"	"	"	"	"
लक्ष्मणा	"	"	"	"	"	"
सुसीमा	"	"	"	"	"	"
जाम्बवती	"	"	"	"	"	"
सत्यभामा	"	"	"	"	"	"
रूक्मणी	"	"	"	"	"	"
मूलश्री	शाम्ब	"	"	"	"	"
मूलदत्ता	"	"	"	"	"	"

छठा वर्ग

नाम	पिता	नगरी	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
मंकाई	-	राजगृह	11 अंगों	16 वर्ष	1 मास	विपुलगिरि पर्वत
किंकम	-	"	"	"	"	"
अर्जुन माली	-	"	-	6 माह	15 दिन	
काश्यप	-	"	11 अंगों	16 वर्ष	1 मास	विपुलगिरि पर्वत
क्षेमक	-	"	"	16 वर्ष	1 मास	"
धृतिधर	-	काकंदी	"	16 वर्ष	"	"
कैलाश	-	साकेत नगर	"	12 वर्ष	"	"
हरिचन्दन	-	"	"	"	"	"
वारत्त	-	राजगृह	"	"	"	"
सुदर्शन	-	वाणिज्य ग्राम	"	5 वर्ष	"	"
पुण्यभद्र	-	"	"	"	"	"
सुमनभद्र	-	श्रावस्ती	"	12 वर्ष	"	"
सुप्रतिष्ठित	-	"	"	27 वर्ष	"	"
मेघ	-	राजगृह	"	बहुत वर्ष	"	"
अतिमुक्त	पिता-विजय राजा	पोलासपुर	"	बहुत वर्ष	"	"
	माता-श्रीदेवी					
अलक्ष्य	-	वाराणसी	"	"	"	"

सातवाँ वर्ग

नाम	पति	नगरी	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
नंदा	श्रेणिक	राजगृह	11 अंगों	20 वर्ष	1 मास	उपाश्रय
नंदवती	"	"	"	"	"	"
नंदोत्तरा	"	"	"	"	"	"
नंदश्रेणिका	"	"	"	"	"	"
मरूता	"	"	"	"	"	"
सुमरूता	"	"	"	"	"	"
महामरूता	"	"	"	"	"	"
मरुद्देवा	"	"	"	"	"	"
भद्रा	"	"	"	"	"	"
सुभद्रा	"	"	"	"	"	"
सुजाता	"	"	"	"	"	"
सुमनायिका	"	"	"	"	"	"
भूतदत्ता	"	"	"	"	"	"

आठवाँ वर्ग

नाम	पति	नगरी	अध्ययन	दीक्षा पर्याय	संथारा	सिद्धि
काली	श्रेणिक	राजगृह	11 अंगों	8 वर्ष	1 मास	उपाश्रय
सुकाली	"	"	"	9 वर्ष	"	"
महाकाली	"	"	"	10 वर्ष	"	"
कृष्णा	"	"	"	11 वर्ष	"	"
सुकृष्णा	"	"	"	12 वर्ष	"	"
महाकृष्णा	"	"	"	13 वर्ष	"	"
वीरकृष्णा	"	"	"	14 वर्ष	"	"
रामकृष्णा	"	"	"	15 वर्ष	"	"
पितृसेनकृष्णा	"	"	"	16 वर्ष	"	"
महासेनकृष्णा	"	"	"	17 वर्ष	"	"

तप विवरण

रानियों के नाम	तप	1 परिपाटी	तप दिन	पारणा दिन	संयम पर्याय
काली	रत्नावली	472 दिन	384 दिन	88 दिन	8 वर्ष
सुकाली	कनकावली	522 दिन	434 दिन	88 दिन	9 वर्ष
महाकाली	लघुसिंहनिष्क्रिडित तप	6 माह 7 दिन	5 माह 3 दिन	33 दिन	10 वर्ष
कृष्णा	महासिंहनिष्क्रिडित तप	1 वर्ष 6 माह	1 वर्ष 4 माह	61 दिन	11 वर्ष
		18 दिन	17 दिन		
सुकृष्णा	सप्तसप्तमिका	49 दिन			12 वर्ष
	अष्टअष्टमिका	64 दिन		25 दिन	
	नवनवमिका	81 दिन			
	दश-दशमिका	100 दिन			
	भिक्षु प्रतिमा				
महाकृष्णा	लघुसर्वतोभद्र	100 दिन	75 दिन	25 दिन	13 वर्ष
वीरकृष्णा	महासर्वतोभद्र	8 माह 5 दिन	6 माह 16 दिन	49 दिन	14 वर्ष
रामकृष्णा	भद्रोत्तर प्रतिमा	6 माह 20 दिन	175 दिन	25 दिन	15 वर्ष
पितृसेनकृष्णा	मुक्तावली	11 माह 15 दिन	9 माह 15 दिन	60 दिन	16 वर्ष
महासेनकृष्णा	आयंबिल वर्धमान तप	14 वर्ष 3 मास 20 दिन	5050 आयंबिल	100 उपवास	17 वर्ष

तप विवरण

रानियों के नाम	तप	चार परिपाटी	तप दिन	पारणा दिन
काली	रत्नावली	5 वर्ष 2 माह 28 दिन	4 वर्ष 3 माह 6 दिन	352
सुकाली	कनकावली	5 वर्ष 6 माह 18 दिन	4 वर्ष 9 माह 26 दिन	352
महाकाली	लघुसिंहनिष्क्रिडित तप	2 वर्ष 28 दिन	1 वर्ष 8 माह 16 दिन	132
कृष्णा	महासिंहनिष्क्रिडित तप	6 वर्ष 2 माह 12 दिन	5 वर्ष 6 माह 8 दिन	244
सुकृष्णा	सप्तसप्तमिका			
	अष्टअष्टमिका			
	नवनवमिका			
	दश-दशमिका			
	भिक्षु प्रतिमा			
महाकृष्णा	लघुसर्वतोभद्र	1 वर्ष 2 माह 10 दिन		
वीरकृष्णा	महासर्वतोभद्र	2 वर्ष 8 माह 20 दिन		
रामकृष्णा	भद्रोत्तर प्रतिमा	2 वर्ष 2 माह 20 दिन		
पितृसेनकृष्णा	मुक्तावली	3 वर्ष दस माह		
महासेनकृष्णा	आयंबिल वर्धमान तप			

रत्नावली तप यन्त्र की स्थापना

प्रश्न- १. रत्नावलि, २. कनकावलि, ३. मुक्तावलि, हार की आकृति वाले तप किन्होंने किये हैं?

उत्तर- मात्र सतियों ने किये हैं, संतों में उल्लेख नहीं मिलता।

कनकावली तप यन्त्र की स्थापना

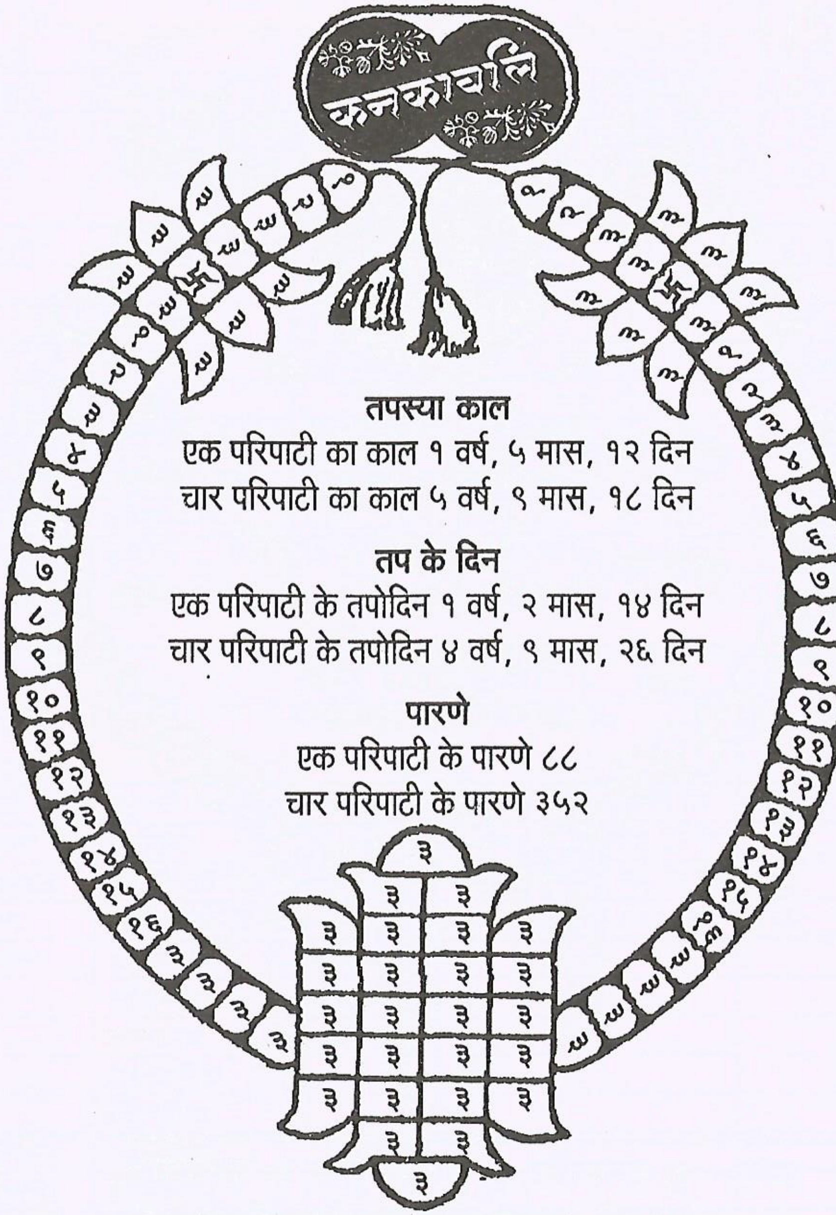

दो हा	कनक सी काया तजी, तज कनक शृंगार। कनक बनाई आत्मा, धर कनकावलि हार।।

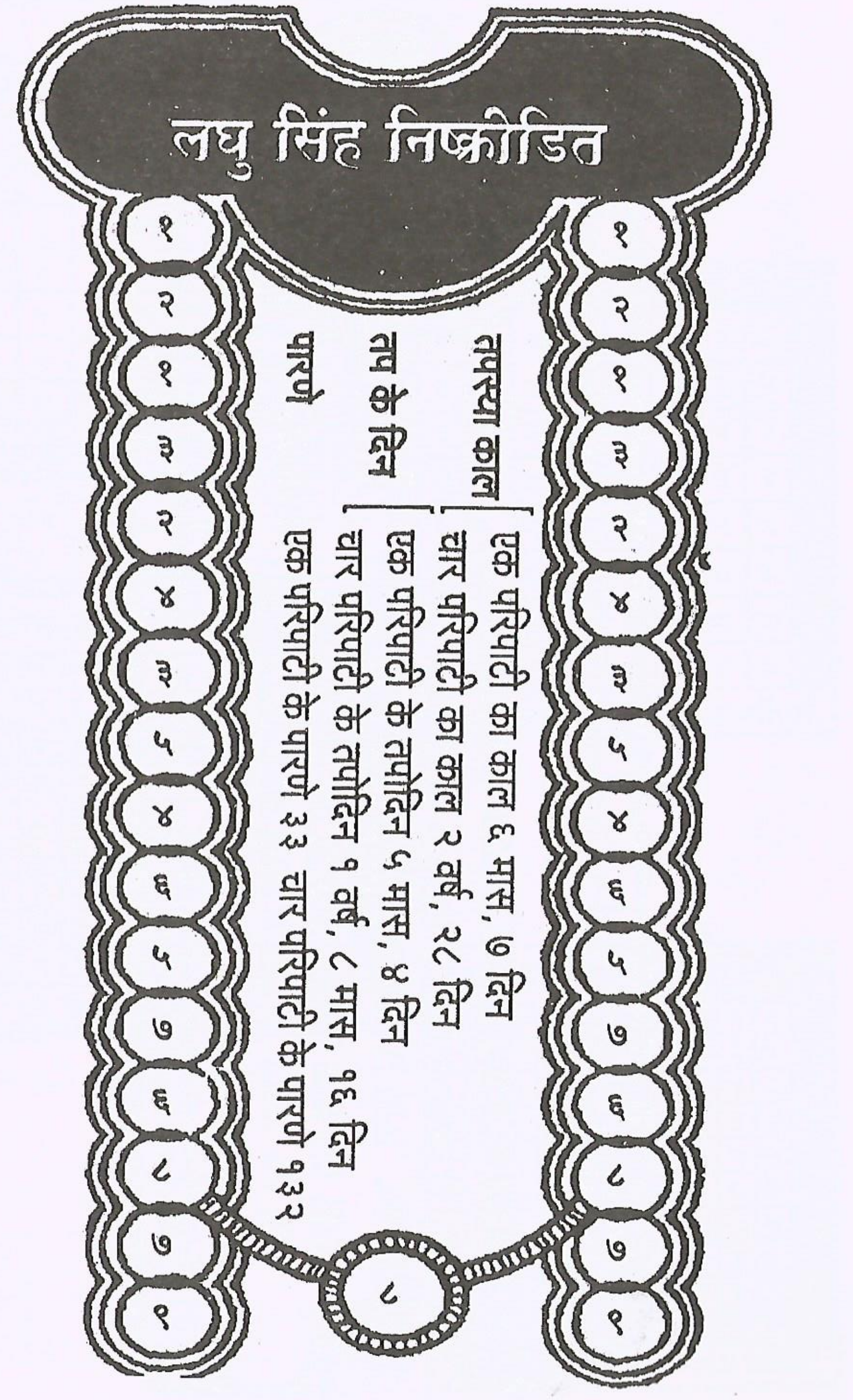

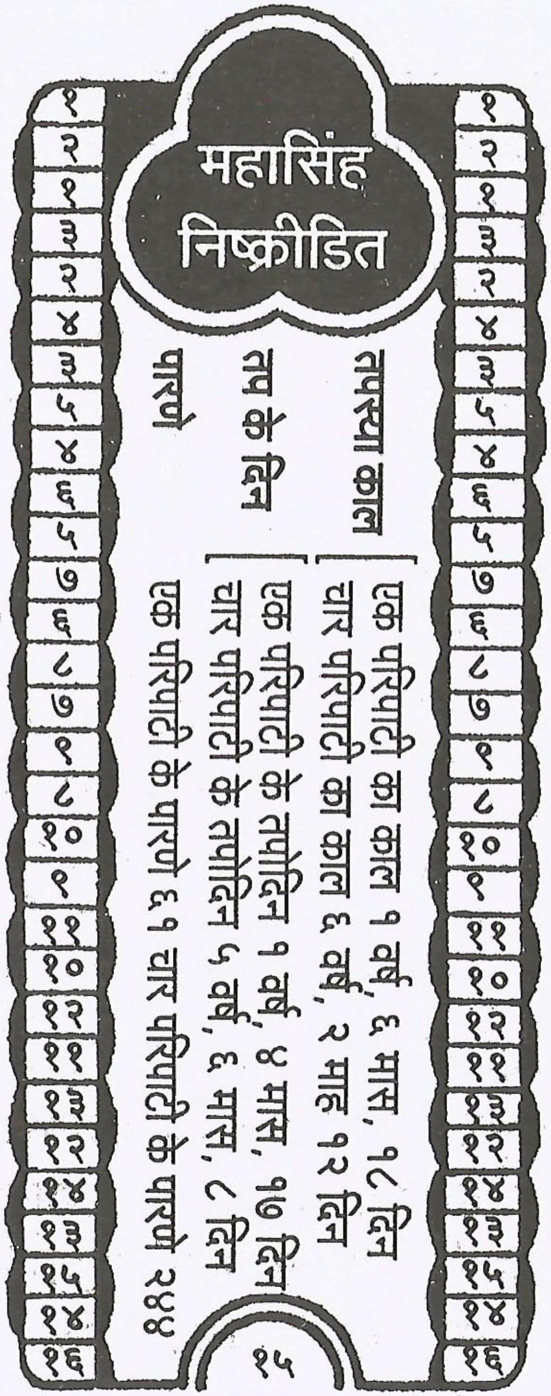

सप्त-सप्तमिका					भिक्षु प्रतिमा		
१	१	१	१	१	१	१	७
२	२	२	२	२	२	२	१४
३	३	३	३	३	३	३	२१
४	४	४	४	४	४	४	२८
५	५	५	५	५	५	५	३५
६	६	६	६	६	६	६	४२
७	७	७	७	७	७	७	४९
४९ दिवस *** १९६ दत्तियाँ							

अष्ट-अष्टमिका						भिक्षु प्रतिमा		
१	१	१	१	१	१	१	१	८
२	२	२	२	२	२	२	२	१६
३	३	३	३	३	३	३	३	२४
४	४	४	४	४	४	४	४	३२
५	५	५	५	५	५	५	५	४०
६	६	६	६	६	६	६	६	४८
७	७	७	७	७	७	७	७	५६
८	८	८	८	८	८	८	८	६४
६४ दिवस *** २८८ दत्तियाँ								

नवम-नवमिका						भिक्षु प्रतिमा			
१	१	१	१	१	१	१	१	१	९
२	२	२	२	२	२	२	२	२	१८
३	३	३	३	३	३	३	३	३	२७
४	४	४	४	४	४	४	४	४	३६
५	५	५	५	५	५	५	५	५	४५
६	६	६	६	६	६	६	६	६	५४
७	७	७	७	७	७	७	७	७	६३
८	८	८	८	८	८	८	८	८	७२
९	९	९	९	९	९	९	९	९	८१
८१ दिवस ****४०५ दत्तियाँ									

दशम-दशमिका							भिक्षु प्रतिमा			
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२०
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३०
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५०
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६०
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७०
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८०
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९०
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१००
१०० दिवस **** ५५० दत्तियाँ										

मुक्तावली तप यन्त्र की स्थापना

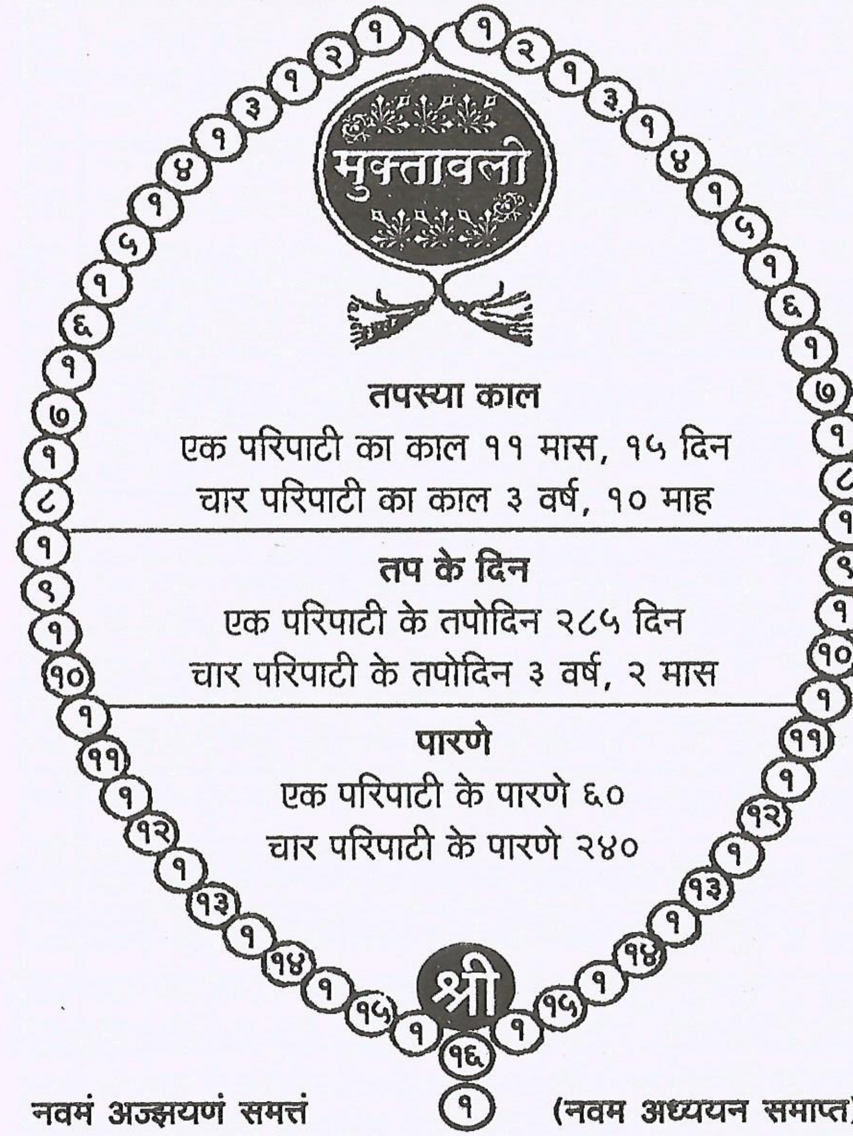

नवमं अज्झयणं समत्तं (नवम अध्ययन समाप्त)

दो	*काली आदि ने किया, सार्थक पुत्र वियोग।*
हा	*विविध तप में भी किया, उत्कृष्ट उद्योग।।*

उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
उपवास	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आयम्बिल	१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१

* "जिसने मेरा घर जलाया
उसे रहने [illegible] घर देना
कि बाहर निकलने को चले
पर निकल न पाये।"

अगला कदम जमने के पूर्व पिछला कदम उठाने से मात्र पछतावा बाकी रहता है

* "जिनके पास समय है, समय उनके साथ नहीं"
जिनके पास समय नहीं समय उनके साथ है।"

* A बिल गेट्स ने कभी लक्ष्मी पूजा नही की
पर दुनिया का सबसे अमीर आदमी कहलाया।
B आइंस्टीन ने कभी सरस्वती पूजा नही की
वह दुनिया का सबसे बुद्धिमान आदमी कहलाया
भाग्य में नही, कर्म में विश्वास रखिये।

* जिस पर अधिकार न हो उसे न कहे
अधिकार हो पर पुण्य न हो उसे न कहे
अधिकार हो, पुण्य हो, पर पात्र न हो तो न कहे।

* गलति करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं
गल्ती सुधारने के लिए कोई समय बुरा नहीं

* मच्छर के काटने पर पॉव काटकर नहीं फेका जाता।

* वक्त बर्बाद करने वालों को वक्त बर्बाद करके छोड़ेगा।

* प्रजा से हारने में भी राजा की विजय है। * दोअक्षर का लक
* ढाई अक्षर का भाग्य, तीन अक्षर का नसीब, ३½ अक्षर की किस्मत मुकद्दर, ४ अक्षर की तकदीर इससे बढ़कर ५½ अक्षर का पुरुषार्थ

NO यानि NEXT-OPPORTUNITY

* जिसके होठो पे हँसी पॉव मे छाले होंगे
वही भगवान को ढूंढने वाले होंगे।

* "बीते कल मै साहसी था
दुनिया को बदलना चाहता था।
आज मै समझदार हो गया हूँ
अपने आपको बदल रहा हूँ"

* "ये दुनिया एक फुल है
इस पर मकान बनाने की कोशिश मत करो
"बस गुजर जाओं। पीछे और भी लोग आ रहे हैं।"

* "जीवन में इतनी गलतियाँ ना करो कि
पेंसिल से पहले ही रबर घिस जाय"

* सबसे अधिक घना अंधेरा होने के बाद
सूर्योदय निश्चित है। जीवन में सबसे ज्यादा
अंधेरा छा जाये तो मान के चलिये -
सूर्योदय होने वाला है।

* जियो तो ऐसे जियों, जैसे सब कुछ तुम्हारा है।
मरो तो ऐसे मरों जैसे तुम्हारा कुछ नही था।

* मन को मनाने की नहीं, मारने की जरूरत है।

* किसी व्यक्ति को ऊँचा उठाने मे एक महिला का हाथ जरूर होता है
" " " नीचे गिराने मे एक से अधिक " " " "

भौरा जंगल में रहकर भी कमल के पास जाकर रस सुगंध लेता है। मेंढक जल में रहकर भी कमल के रस सुगंध का लाभ नहीं उठा पाता।

अनमोल - वचन

1. दुनिया के सारे लोग अच्छे है, जब तक उनसे ना करे उम्मीद आप भी दुनिया के लिए अच्छे है, जब तक आप पूरी करते रहे उनकी उम्मीद
2. प्यार और मौत बिन बुलाये मेहमान है, ये कब आयेंगे
■. कोई नहीं जानता... पर दोनो करते है एक ही काम एक दिल ले जाता है और दूसरा उसकी धड़कन
3. सिर्फ उन्हीं का साथ मत ढूंढो जो तुम्हें खुश रखते है। उन्हें भी समय दो जो तुम्हारे बिना खुश नहीं रहते
4. एक महान काम जो छोटा बल्ब कर सकता है, वह बड़ा सूर्य नहीं कर सकता। बल्ब रात में उजाला कर सकता है, सूर्य नहीं। कोई भी आकार से नहीं, काम से बड़ा बनता है।
5. सफलता और बहाने एक साथ नहीं चल सकते। अगर आपके पास बहाने है तो सफलता को भूल जाइये और अगर आप सफलता चाहते है तो बहानों को भूल जाइये
6. बहस यह सिद्ध करने के लिए होती है कि कौन सही है बातचीत यह तय करती है कौन सही है (क्या सही है)
7. हम प्रवासी है, निवासी नहीं। हम मेहमान है मालिक नहीं
8. शिखर पर चढ़ने में समय अवश्य लगेगा पर सही नजारा वहीं से दिखेगा।
9. वही दिखाते सच्ची राह, जिन्हें न पद पैसे की चाह
10. अर्जन के साथ विसर्जन जरूरी है।
11. भाग लो या भाग लो।
12. शर्ट का पहला बटन सही लगता है तो शेष बटन

अपने आप सही लग जाते है।

13. जिंगदी की राह में पुल बनो दीवार नहीं।

14 अकेले चलो यदि तेज चलना हो
सबको साथ लेके चलो यदि लंबे चलना हो

15 मनचाहे रंगो से भरे वह तस्वीर
अनचाहे रंगों से भरे वह तस्वीर (तकदीर)

16 आने वाले कल की योजना है वह जवान है।

17. प्यार और मौत बिन बुलाये मेहमान हैं एक दि
ले जाता है, दूसरा दिल की धड़कन।

18. ऐसी वैसी बातों से तो खामोशी अच्छी है
या फिर ऐसी बात करे जो खामोशी से अच्छी हो

19. कौन सी बात कहाँ और कैसे कही जाती है
ये सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है।

20. हमे दूसरों की गल्तीयों से भी सबक लेना चाहिये
क्योंकि हमारे पास इतना समय नहीं है कि
सारी गल्तियाँ हम खुद करे और सीखे.

21. अच्छा दिल होना अच्छा स्वभाव होना दोनो
अलग अलग बाते है। अच्छा दिल संबंधों को
जीत सकता है। अच्छा स्वभाव उन्हे आजीवन
निभा सकता है।

22. जिस दिन आप अपने बारे में पूरी जिम्मेदारी लेते है
बहाने बनाना बंद कर देते हैं, उसी दिन आप शिखर
की ओर यात्रा शुरू कर देते है।

23 कामयाबी को दिमाग में और नाकामी को दिल में जगह न दे,
क्योंकि कामयाबी दिमाग में घमंड और नाकामी दिल में
मायूसी पैदा कर देती है।

24. किसी लेक्चर के आखरी पॉच मिनट दुनिया के सबसे
लंबे 5 मिनट है। जबकि किसी परीक्षा के आखरी 5
मिनिट दुनिया के सबसे छोटे पॉच मिनिट है।

25. बर्थ डे यानि एक मात्र दिन जब आपके रोने पर आपकी
माँ मुस्कायी थी।

26 दुनिया से मिलने में सब मस्त है
खुद से मिलने में सारी लाइने व्यस्त है।

27. दुनिया में कोई (कुछ) स्थायी नहीं
मै हमेशा बारिश में चलना पसंद करता हूँ ताकि मुझे कोई
रोते नहीं देख सकता।
जीवन का वह दिन सबसे व्यर्थ है जिस दिन हँसे नहो

28 गम को खुशी में और खुशी को गम में बदलने वाला वाक्य
"ये वक्त भी गुजर जायेगा"

29 जीवन का बेहतर समय कौन सा?
जब आपका परिवार आपको मित्र समझे
आपके मित्र आपको अपना परिवार

लोग आपकी आलोचना करते है
आपका दिल दुखाते है
आप पर अपना गुस्सा निकालते है
आप बिल्कुल चिंता न करे
सिर्फ याद रखिये
हर खेल में सिर्फ दर्शक ही शोर मचाते है
खिलाड़ी नहीं।

संगीत सुनकर ज्ञान नहीं मिलता
मंदिर जाकर भगवान नहीं मिलता
पत्थर तो लोग इसलिए पूजते है कि
विश्वास के लायक इंसान नहीं मिलता

सिक्के आवाज करते है पर नोट खामोश।
इसलिए जब भी आपकी कीमत बढ़ती है
आप शांत रहे
शोर मचाने का जिम्मा आपसे छोटे लोगों को है।

दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जोड़ी "खुशी और आँसु"

अच्छे व्यक्ति का जीवन गोलकीपर की तरह होता है
यह कोई याद नहीं रखता कि आपने कितने गोल रोके
ये सब याद रखते है आपने कितने गोल नहीं रोके

आपका नजरिया सकारात्मक है तो आप इस दुनिया में
सभी को पसंद करेंगे और अगर आपकी वाणी सकारात्मक

है तो इस दुनिया के सभी मनुष्य आपको पसंद करेंगे।

रिश्ते और रास्ते एक ही सिक्के के दो पहलू है
कभी कभी रिश्ते निभाते रास्ते खो जाते है और कभी
रास्ते पर चलते चलते रिश्ते बन जाते है।

अच्छा सुनने से अच्छा बोलने की आदत बनती है।

बस इंतजार करती है समय नहीं। अतः चलते रहें और
अपना लक्ष्य प्राप्त करें।

दुनिया में दो लोगों का हमेशा ख्याल रखो
1. एक तो उनका जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया।
2. दूसरा उसका जिसने तुम्हारे लिए जन्म लिए।

जो तुम्हारी निंदा करे तुम उसकी प्रशंसा करो
आज नहीं तो कल वह तुम्हारा हो जावेगा।

नौकर को कोई बात कहना उसे नौकर से स्वामी बनाना है

गुलाम बेगम बादशाह को एका जीत लेता है।
जो सहता है, वो रहता है।

जिंदगी एक यात्रा है। बस समस्या यह है कि आपको बिना नक्शे के अपनी मंजिल तक पहुँचना है।

अपने ओहदे को लेकर जीवन में कभी घमंड मत करो और ना ही कभी निराश हो क्योंकि
शतरंज के खेल में बाजी खत्म होते ही राजा हो या प्यादे। हमेशा सबको एक ही डिब्बे में बंद होना होता है

प्रसन्न जीवन के लिए दो नियमों का हमेशा पालन करो
1. गुस्से मे हो तो चुप रहो।
2. आप उन शब्दों को महत्त्व मत दो जो दूसरे गुस्से में कहे है।

अगर रास्ता खूबसूरत है तो पहले यह पता लगा ले कि मंजिल कैसी है, पर अगर मंजिल खूबसूरत हो तो यह चिंता छोड़ दे कि रास्ता कैसा है!

अगर आप एक निर्णय लेने में बेहद समय लगाते है तो याद रखिये.. एक सही निर्णय भी गलत हो जाता है अगर वह देरी से लिया गया हो।

यहाँ "कम्पलीट" और "फिनिश" मे कोई अंतर नहीं है जब आप अच्छे व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हो तो वह "कम्पलीट" है और बुरे व्यक्ति पर विश्वास करते हो तो वह फिनीश है।

आँख नहीं हो तो सज्जन बन सकते है।
बुद्धि नही हो तो संत बन सकते है।
कषाय नही हो तो अरिहंत बन सकते है।
कर्म नहीं हो तो सिद्ध भगवंत बन सकते है।

मन को डेंजर, वचन को बुल्डोजर, काया को सोल्जर बनाना ही दुख का कारण है।

जैन का लेबल है, जैन का लेवल नही है।

पाप और पापा मे अंतर है पापा माफ कर सकते है पाप नही

गलतफहमी नाव के अंदर बूंद बूंद रिसता पानी है जो आखिरकार नाव को ले डूबता है।

* सच बोलने का फायदा है कि आपने जो कुछ कहा उसे याद रखने की जरूरत नही पड़ती।

* जो सबसे पहले क्षमा माँगता है, वो सबसे ज्यादा बहादुर है।
" " " क्षमा करता है वो शक्तिशाली है।
" " " दूसरों की गल्तियाँ भूल जाता है वह सबसे ज्यादा सुखी है।

* एक बात हमेशा याद रखना आपका खुश रहना आपसे जलने वालों के लिए सबसे बड़ी सजा है।

दर्पण देखते समय भाव -
1. विरोध - आपके दोष बताता है।
2. उपेक्षा - दाग देखने में रुचि नही।
3. पूजा - पहली बार दर्पण ने दोष बताये
4. परिवर्तन - दाग दूर करने का प्रयास

संध्या समय चार का त्याग न करे
1. निद्रा त्याग न करे - लक्ष्मी नाश
2. मैथुन ,, ,, - दुष्ट जीव गर्भ में आता है
3. स्वाध्याय का ,, ,, - ज्ञान का नाश
4. भोजन का ,, ,, - रोग की प्राप्ति

हर कोई सब कुछ नही जानता लेकिन हरेक कुछ न कुछ जरूर जानता है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सुनो और सीखो। माँ के बिना जीव संसार मे आ नहीं सकता। गुरु के बिना जीव संसार से पार नहीं हो सकता। जीव को पतंग उड़ाने मे मजा आता है, उससे ज्यादा मजा काटने मे, उससे ज्यादा मजा लूटने में आता है।

इसी प्रकार आपको किसी की बात उड़ाने मे ज्यादा मजा आता है उससे ज्यादा मजा बात काटने मे आता है उससे ज्यादा मजा झूठी प्रसंशा लूटने मे आता है।

* बीमारीया अनेक है औषधी का नही पार
सबकी दवा एक है प्रसन्न रहो हर बार
* जीवन को व्यर्थ नही तीर्थ बनाओ
* आपको एक आइडिया देते है मत रखो मोबाइल स्माइल
* पुरुषार्थ जिसके पास खड़ा वहाँ परमेश्वर
पुरुषार्थी का धरती बिछोना, ओढनी अंबर
* तीनो स्वस्थ चाहिये - देह, दिमाग, दिल
* तप से तन शुद्धि, कीर्तन से वचन
ध्यान से मन शुद्धि, दान से धन
* लालबत्ती से सब डरते है, क्रोधी से भी।
* दूध मे उफान आने पर अग्नि को बुझाता है
खुद भी नष्ट हो जाता है।
* टाफी अंगूठी - बच्चा टाफी लेगा
पिता अंगूठी लेगा
भिखारी दोनो लेगा
संत दोनो नही लेंगे
* गल्तिया करो, एक बार नही बार बार करो
पर, एक गल्ती को दुबारा मत करो
* साधुजी को हाथ मत दिखाओ, उनके हाथ अपने मस्तक पर लगाओ

* आजकल के बच्चों को समझाईये मत
क्योंकि बेवकूफ बच्चे पैदा होना बंद हो गये
उन्हें दिखाइये वे जल्दी समझ जाते हैं।
जैसे आप चाहते है बच्चा आपके चरण छुए
तो आप स्वयं अपने पिता के चरण छूकर दिखाओं
बेटा अपने आप आपके चरण छूने लग जायेगा

* कही लिखा मातृछाया, कही पितृछाया
पर वास्तव मे सत है, पत्नि छाया

* आज का मानव

आश्रय देने पर सिर पर चढ़ जाता है
उपदेश " " मुडकर बैठता है
आदर करने पर खुशामद समझता है
उपकार करने पर अस्वीकार करता है
विश्वास करने पर हानि पहुंचाता है
क्षमा करने पर दुर्बल समझता है
प्यार " " आघात करता है
दुःख के समय
सुख के समय ईर्ष्या करता है।

* जो जितना जानता है उससे ज्यादा जानने की जिज्ञासा होती है
* आपके कार्य से आपके बारे में पता चल जाता है।
* आप कुछ करना चाहते है, ये सोचकर की सारी दुनिया आपको देख रही है।
* बहादूर की अपेक्षा डरपोक ज्यादा झगडे करते हैं
* जिस कार्य मे मर्जी शामिल वह कार्य करने में परेशानी नही होती।
* अकेले सफर करने वाले को ज्यादा जगह देखने को मिलती है।

* मुझे गर्व है उन लोगो पर जो बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़कर चले गये क्योंकि उन्हें विश्वास था कि मै अकेला ही उससे जूझ सकता हूँ।
* एक अच्छा इंसान अपनी जुबान से पहचाना जाता है वरना अच्छी बाते तो दीवारों पर भी लिखी होती है।
* इंसान चेहरा सजाता है जिस पर दुनिया की नजर रहती है आत्मा को सजाना भूल जाता है जिसपर परमात्मा की नजर रहती है।
* चाहे कितना अकाल क्यों न पडे नीम का वृक्ष सदा हरा भरा ही रहता है।
* पहले सहारे, फिर उम्मीदे, फिर अरमां भी छूट गये
उपर से तो जख्मी हुए, अंदर से भी टूट गये
* गाँधी जी ने अपने कपडो में कोई जेब नही रखी किंतु अपने कार्यो से सबकी जेब में पहुँच गये।
* मै और मेरा भगवान रोज भूल जाते है
(1) वो मेरे गुनाहों को (2) मै उसकी मेहरबानी को
* सफलता तुम्हारा परिचय दुनिया से करवाती है
असफलता तुम्हें दुनिया का परिचय करवाती है।
* जब हसने के दिन हो तो समझना अच्छे कर्मो का फल मिल रहा है
जब रोने के दिन आये तो समझना अच्छे कर्म करने का समय आ गया है।
* समाज प्रेम के लिए भजन आवश्यक है
घर प्रेम के लिए सामूहिक भोजन आवश्यक है।
* कभी उसको नजर अंदाज ना करो जो तुमको बहुत चाहता है वरना बादमे तुम्हे एहसास होगा कि पत्थर जमा करते2 हीरा गँवा दिया।

पूनम विहार कॉलोनी, जावरा की झलकियाँ

पूनम विहार जावरा शहर की एक कॉलोनी है । इसमें एक माह रूके दोनों संत प.पू. अभिगृहधारी, उग्रविहारी, तपकेसरी श्री राजेशमुनिजी म.सा., श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. की अट्ठाई हुई । दोनों समय प्रवचन एवं दोनो समय प्रभावना वितरित की गई।

अट्ठाई की चौवसी के लाभार्थी

१. ममता चौपड़ा	२. टीना नवलखा
३. हर्षा राव	४. साणीबांई पगारिया
५. शांता माण्डोत	६. इन्दुबेन मेहता
७. शीतल माण्डोत	

रंग-बिरंगे एकासने के लाभार्थी

राजकुमारजी सुराणा रतलाम वाले (सौ. शांताबाई के वर्षीतप निमित्ते)

गुप्त	निर्मला पारस सकलेचा
राकेश चौपड़ा	नवीन नवलक्खा
शांतिलालजी पाटीदार	सुरेश पटेल
सुभद्रा विजय भंडारी	ज्ञानचंद धारीवाल
उर्मिला आजाद खेमसरा	दिनेश पोरवाल
गुप्त – हस्ते शुभम गोखरू	लता अनिल सोनी
धर्मचन्द्र मांडोत हस्ते अनिल मांडोत	चेतना सचिन कोठारी
राहुल छाजेड़	अजय भंडारी, आलोट
कमल पारख	सपना विजय राठौड़
बद्रीलाल त्रिवेदी	माणकलाल भंडारी
मंजू पिरोदिया, रतलाम	

प्रभावना के लाभार्थी

श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता	श्री सुरेशजी पटेल
ममता राकेश चौपड़ा	टीना नवीन नवलखा
हर्षा संतोष राव	शीतल अनिल मांडोत
लता अनिलजी सोनी	सचिन कोठारी
सपना विजय राठौड़	आजादकुमारजी खेमसरा

विजयकुमारजी भंडारी	कमलकुमारजी नवलखा
सतीशजी त्रिवेदी	ज्ञानचन्दजी धारीवाल
श्रेणिककुमारजी माण्डोत	ज्योति राहुल छाजेड़
चन्द्रशेखरजी पंडित	आयुष सुभाषजी चौरड़िया
कमलकुमारजी पारख	वीरेन्द्रकुमारजी संचेती
चंदा रमेशजी पोखरना	बाबूलालजी भामर, जावरा
लालसिंहजी संग्रामसिंहजी, जावरा	सांवरियाजी मेहता, जावरा

तपस्वी

सौ. टीना नवीन नवलखा – ११ उपवास	चिन्मय त्रिवेदी – ३ उपवास
सौ. ममता राकेश चौपड़ा – २ उपवास	कु. परी पटेल
कु. इशिका चौपड़ा	कु. प्राची पटेल
मा. विवेक पटेल	मा. पवन खारोल
कु. नैय्या पटेल	सौ. सपना राठौड़
सौ. मीना भंडारी	सौ. लता सोनी
कु. शिवानी सोनी	कु. शालू राठौड़
श्री चन्द्रशेखर पंडित	सौ. हर्षा राव
श्रीमति शाणीबाई पगारिया	सौ. इन्दुबाला चन्द्रप्रकाशजी मेहता
सौरभ मेहता	पीयूष मेहता
हेमा दरबार	कृतिक परिहार
मेघा त्रिवेदी	रानू अग्रवाल
ललिता परिहार	सनी शर्मा
सुरेन्द्र धाकड़	मिताली त्रिवेदी

उपवास पारणे का लाभ - सौ. इंदुबेन चन्द्रप्रकाशजी मेहता परिवार

दोनों संत श्री राजेशमुनिजी म.सा. एवं श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. के अट्ठाई तप एवं १५वाँ दीक्षा दिवस निमित्त प्रभावना के लाभार्थी

श्री सागरमलजी शांतिलालजी, विजयकुमारजी, सौरभजी, पीयूषजी एवं मेहता परिवार, जावरा (म.प्र.) हस्ते इंदुबेन चन्द्रप्रकाशजी मेहता

42वाँ जन्म दिवस जावरा संघ ने मनाया

उसमें

श्रीमती सूरजबाई टुकड़िया

शांतिलालजी डांगी

चंदनजी खारीवाल

मिठ्ठूलालजी ओस्तवाल

समाजरत्न बसंतीलालजी चौरड़िया

जयंतिलालजी मेहता, रतलाम

सचिन मांडोत, रतलाम

सुमन अमृतलाल राठौर, रतलाम

सुशील शैतानमलजी चपड़ौद, जावरा

ने लाभ लिया ।

27 दिसम्बर को अन्न क्षेत्र में आजीवन तिथि लिखवायी

इस अवसर पर प्रकाशजी मूणत, रतलाम, विनोदजी बाफना, मेघनगर सुभाष विनायक्या, इन्दौर, ललितजी खींवसरा, खरगोन अतिथि थे ।

स्थानकवासी संघ, जावरा के पदाधिकारीगण

संरक्षक	अध्यक्ष	महामंत्री
समाजरत्न बसंतीलाल चौरड़िया	सुशील चपड़ौद	कनकमल चौरड़िया

उपाध्यक्ष	परामर्शदाता	कोषाध्यक्ष
ओमप्रकाश श्रीमाल	इंदरमल टुकड़िया	पारस गादिया
शांतिलाल रांका		
अशोक झामर		

सह कोषाध्यक्ष	प्रचार मंत्री	सह मंत्री
जवाहरलाल श्रीश्रीमाल	भूपेन्द्र डांगी	राजेश सियार

समाज रत्न

श्री रमेशचन्द्रजी खटोड़, मनावर

Ph. : 07294-233233, Mob. : 99819 25699

श्री हंसमुखजी गोलच्छा

सौ. इन्द्राजी गोलच्छा

श्री राजेन्द्रजी गोलच्छा

सौ. मधुजी गोलच्छा

लीमड़ी (गुजरात)

प्राप्ति स्थल

जयंतीलाल मेहता, चाँदनी चौक, रतलाम (म.प्र.)
मो. 098277 36335, 089896 69916

राकेश गांधी	वर्षा विनोद पितलिया	लोकेश मेहता	सचिन मांडोत
94245 29195	94245 00616	98272 60057	90098 11444
सुमन अमृत राठौड़	सुभाष टुकड़िया	राहुल चौपड़ा	गौतम खाबिया
99266 49869	94259 26026	094133 06134	94136 25335
पंकज बागरेचा	विकास पितलिया	पवन डांगी	
94245 86548	94245 27254	93004 80212	

श्री गणेश, जावरा 220714